फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 337 प्रभात जयपुर, बुधवार 9 जुलाई, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत
Metro
Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBIT

Warming Your Cockles' The Army Way

Despite the cold winds and the terrain, the café offers a cozy setting, serves hot beverages, tea, coffee, and traditional Sulaimani chai, along with snacks and local delicacies

Models and Mimics are marvels

When Greeks Minted Krishna and Balarama!

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के पिता का निधन

मुख्यमंत्री व भाजपा के अनेक नेता अंतिम यात्रा में शरीक हुए

जोधपुर, 8 जुलाई (कासं)। केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के पिता दाऊलाल वैष्णव का मंगलवार सुबह जोधपुर में निधन हो गया। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। हाल ही में उनकी तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें जोधपुर एम्स अस्पताल में भर्ती कराया गया था। एम्स के मुताबिक, मंगलवार सुबह 11 बजकर 52 मिनट पर उन्होंने अंतिम सांस ली। जोधपुर में मंगलवार शाम उनका अंतिम संस्कार किया गया।

- **मूलतः पाली जिले के जीवंद कला के निवासी दाऊलाल वैष्णव बाद में जोधपुर आकर बस गये थे। वे अपने गाँव में सरपंच रहे थे तथा सामाजिक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते थे।**

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा मंगलवार को जोधपुर में केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के पिता स्व. दाऊलाल वैष्णव की अंत्येष्टि में शामिल हुए।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा मंगलवार को जोधपुर में केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के पिता स्व. दाऊलाल वैष्णव की अंत्येष्टि में शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने जोधपुर मोक्षधाम में स्व. दाऊलाल वैष्णव की पार्थिव देह के अंतिम दर्शन किए और पुष्प चक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने शोक संतप्त परिजनों को संबल प्रदान करने और इस अपार दुख को सहन करने की शक्ति देने की ईश्वर से प्रार्थना की।

दाऊलाल वैष्णव मूलतः पाली जिले के जीवंद कला- निवासी थे। बाद में परिवार के साथ जोधपुर में आकर बस गए थे। रातानाड़ा भास्कर चौराहा के पास महावीर कॉलोनी में उनका घर है। वे अपने गांव में सरपंच भी रह चुके थे और सामाजिक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे। दाऊलाल वैष्णव ने जोधपुर में एक वकील और कर सलाहकार के रूप में लंबे समय तक कार्य किया।

उनके परिवार में पत्नी सरस्वती वैष्णव, बड़े बेटे अश्विनी वैष्णव और छोटे बेटे आनंद वैष्णव हैं।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के पिता दाऊलाल वैष्णव की उनके घर से बैकुंठी निकाली गई।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अश्वनी पंजाब भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष बने

चंडीगढ़ , 8 जुलाई। पंजाब में भाजपा ने बड़ा बदलाव करते हुए पठानकोट से विधायक अश्वनी कुमार शर्मा को पंजाब भाजपा का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया है तथा सोमवार को इस संबंध में आदेश जारी कर दिया है। इससे पहले अश्वनी कुमार शर्मा प्रदेश अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

अश्वनी कुमार शर्मा कॉलेज के दिनों से ही आरएसएस और भाजपा की छात्र शाखा एबीवीपी से जुड़े हुए थे। वह 2007 से 2010 तक पंजाब भाजपा के महासचिव तथा गुरदासपुर जिला योजना बोर्ड के चेयरमैन भी रहे। सन् 2004 में वे पार्टी की युवा शाखा के प्रधान भी रहे।

- **पंजाब, भाजपा के अध्यक्ष सुनील जाखड़ इस्तीफा दे चुके हैं, हालांकि, उनका इस्तीफा स्वीकार नहीं हुआ है, पर, वे पार्टी में सक्रिय नहीं हैं।**

गौरतलब है कि पंजाब भाजपा अध्यक्ष सुनील जाखड़ ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। हालांकि पार्टी हाईकमान ने उनका इस्तीफा स्वीकार नहीं किया है। इससे पहले पंजाब में चार विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव के दौरान भी सुनील जाखड़ सक्रिय नहीं दिखे थे। उन्होंने खुद स्वीकार किया था कि उन्होंने पार्टी नेतृत्व से पद की जिम्मेदारियों से मुक्त करने का अनुरोध किया था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चिराग पासवान क्या वाकई में बिहार की सभी सीटों पर चुनाव लड़ेंगे?

क्या उनकी यह घोषणा केवल एनडीए गठबंधन में ज्यादा सीटें लेने के लिए सिर्फ एक सुनियोजित तरीका है?

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 जुलाई। आगामी विधानसभा चुनावों से पहले सीट बंटवारे को लेकर अपनी सौदेबाज़ी की स्थिति को मजबूत करते हुए, एलजेपी (रामविलास) प्रमुख चिराग पासवान ने ऐलान किया है कि वे खुद राज्य विधानसभा चुनाव लड़ेंगे, साथ ही उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से बिहार विधानसभा की सभी 243 सीटों पर मेहनत करने का आग्रह किया है।

- **अधिकतर यह ही माना जा रहा है कि अपनी सीटों का कोटा बढ़वा कर चिराग फिर चुपचाप बैठ जायेंगे।**
- **पर, जिस तीव्रता से वे मु.मंत्री नीतीश कुमार पर आक्रमण कर रहे हैं, यह भी हो सकता है कि पिछली बार की भांति वे एक बार फिर नीतीश कुमार को कमज़ोर करने के लिए उनकी पार्टी के सभी उम्मीदवारों के खिलाफ अपना उम्मीदवार खड़ा करेंगे।**
- **पिछली बार उनकी इस नीति के कारण, नीतीश कुमार को काफी नुकसान हुआ था और नीतीश की पार्टी तीसरे नम्बर पर आई थी, भाजपा व आरजेडी के बाद।**

जहाँ चिराग के पिता और एलजेपी के संस्थापक रामविलास पासवान मुख्य रूप से केन्द्रीय राजनीति में सक्रिय रहे, वहीं हाल के महीनों में चिराग के संदेशों से यह संकेत मिल रहा है कि वे बिहार की राजनीति में बड़ी भूमिका निभाने की महत्वाकांक्षा रखते हैं। यह संकेत देकर कि उनकी पार्टी सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ सकती है, चिराग जाहिर तौर पर एनडीए के सीट बंटवारे में बड़ा हिस्सा लेने की कोशिश कर रहे हैं।

2020 के चुनावों में चिराग ने 137 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे, जिनमें से कई जेडीयू के उम्मीदवारों के खिलाफ थे। हालाँकि चिराग की पार्टी केवल मटिहानी सीट जीत ही सकी थी, लेकिन उसकी मौजूदगी का जेडीयू पर नुकसानदायक प्रभाव पड़ा तथा भाजपा और आरजेडी के बाद तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन पाई।

उस समय भाजपा पर यह आरोप लगा था कि उसने नीतीश कुमार की जेडीयू के खिलाफ चिराग का उपयोग किया था, और इस बार भी वैसी ही रणनीति सामने आती दिख रही है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि चिराग ने रविवार को सारण में एक सभा को संबोधित करते हुए राज्य सरकार पर हमला बोला और गिरती कानून व्यवस्था के हालात को उजागर किया, जिसका उदाहरण हाल ही में पटना के व्यवसायी गोपाल ख़ेमका की दिनदहाड़े हत्या है। उन्होंने कहा, कानून व्यवस्था की स्थिति चरमराई हुई है। राज्य में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

इज़रायल के प्र.मंत्री नेतन्याहू ने भी ट्रंप को नोबल पुरुस्कार के लिए मनोनीत किया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 जुलाई। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप को सोमवार को नोबैल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया है। यह नामांकन इज़राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने किया है। नेतन्याहू ने कहा कि ट्रंप ने "एक के बाद एक क्षेत्र में शांति स्थापित करने की कोशिश की है।"

वाइट हाउस में आयोजित एक रात्रिभोज के दौरान नेतन्याहू ने ट्रंप को वह पत्र सौंपा, जो उन्होंने नोबैल शांति पुरस्कार समिति को भेजा था। हालांकि, ट्रंप को नामांकित करने वाले नेतन्याहू पहले व्यक्ति नहीं हैं। उनसे पहले पाकिस्तान के फील्ड मार्शल सैयद आसिम मुनीर अहमद शाह, जो पाकिस्तान के 11वें सेनाध्यक्ष हैं, ने उन्हें इस पुरस्कार के लिए नामित किया था।

- **पाकिस्तान के फील्ड मार्शल असीम मुनीर तो पहले ही ट्रंप का नाम चला चुके हैं, नोबल शांति पुरुस्कार के लिये।**
- **इज़रायल के प्र.मंत्री ने वाइट हाउस में भोज के दौरान ही राष्ट्रपति ट्रंप को उस खत की प्रतिलिपि भी दी जो उन्होंने नोबल शांति पुरुस्कार कमेटी को लिखा है।**
- **ट्रंप को नोबल शांति पुरुस्कार कमेटी से शिकायत है, कमेटी ने उनके साथ अभी तक न्याय नहीं किया है। क्योंकि, उन्होंने विश्व में शांति स्थापित करने के लिए भारत-पाकिस्तान में युद्ध विराम करवाया, मिस्र व इथियोपिया में समझौता करवाया तथा इज़रायल व अरब देशों के बीच संबंध सामान्य करवाये, और अब शीघ्र ही यूक्रेन व गाज़ा में भी शांति स्थापित करा देंगे।**

डॉनल्ड ट्रंप को पहले भी कई बार उनके समर्थकों और कुछ सांसदों द्वारा नोबैल शांति पुरस्कार के लिए नामांकित किया जा चुका है। ट्रंप ने नॉर्वे की नोबैल कमेटी की यह कहकर आलोचना की है कि उसने भारत और पाकिस्तान के बीच

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एसआई भर्ती पेपर लीक में सुनवाई बुधवार को जारी रहेगी

जयपुर, 8 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में सोमवार को दिए आदेश में, महाधिवक्ता की आपत्ति के बाद, संशोधन किया है। इसके साथ ही, अदालत ने मामले में राज्य सरकार को संबंधित रिकॉर्ड साथ लाने के निर्देश देते हुए प्रकरण की सुनवाई बुधवार को तय की है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने ये आदेश कैलाश चन्द्र शर्मा व अन्य की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

- **महाधिवक्ता की प्रार्थना पर हाई कोर्ट ने सोमवार के आदेश को संशोधित किया।**

आज महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने एक प्रार्थना पत्र पेश किया कि अदालत ने सोमवार के आदेश में यह कहा है कि महाधिवक्ता ने याचिकाकर्ता के वकीलों की इस दलील का खंडन नहीं किया कि पेपरलीक में कई कोचिंग सेंटर, अधिकारी व आरसीएससी के सदस्य

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या 160 वर्षों से चला आ रहा दो पार्टी सिस्टम अब टूटेगा अमेरिका में?

63 प्रतिशत अमेरिकावासियों की सोच है कि अब अमेरिका को एक और राजनीतिक पार्टी की ज़रूरत है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 जुलाई। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के समाप्त होने और डॉनल्ड ट्रंप के सत्ता में मज़बूती से आने के बाद, अमेरिका की जनता के सामने एक गहरा सवाल खड़ा है-जो यह तय करने से भी अधिक गंभीर है कि व्हाइट हाउस में कौन है, क्या अमेरिकी राजनीतिक व्यवस्था स्वयं ही टूट रही है? अभूतपूर्व ध्रुवीकरण से लेकर बाहरी राजनीतिक आंदोलनों के उभार तक, अमेरिकी लोकतंत्र की नींव पहले कभी इतनी गहराई से सवालों के घेरे में नहीं आई।

- **अब अमेरिका में जनता का इस बात से विश्वास उठ रहा है कि कांग्रेस, सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रपति सही निर्णय देंगे, चाहे चुनाव हो या कोर्ट की न्यायिक प्रक्रिया।**
- **यह धारणा घर कर गई है कि सिस्टम अब साधारण आदमी के लिए काम नहीं करता।**
- **तो क्या अब अमेरिका धीरे-धीरे "सॉफ्ट तानाशाही" की ओर अग्रसर हो रहा है?**

दशकों तक अमेरिका ने खुद को संवैधानिक लोकतंत्र का वैश्विक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया, जिसकी जड़ें "चैक एंड बैलेंस" प्रणाली, संस्थागत अखंडता और शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण में थीं। लेकिन आज, यही स्तंभ दरकते नज़र आ रहे हैं। एक के बाद एक सर्वे यह दिखा रहे हैं कि संसद (कांग्रेस), सुप्रीम कोर्ट और यहां तक कि राष्ट्रपति पद में भी जनता का भरोसा तेज़ी से गिर रहा है। चुनावों और न्याय की निष्पक्षता को लेकर शासन तंत्र की सक्षमता पर भरोसा ऐतिहासिक रूप से निचले स्तर पर पहुँच चुका है।

इस वर्तमान संकट की जड़ में यह बढ़ती धारणा ही है कि यह व्यवस्था अब आम अमेरिकियों के लिए काम नहीं कर रही। दो प्रमुख पार्टियों के वर्चस्व ने शासन से ज़्यादा गतिरोध पैदा किया है। कभी अमेरिकी लोकतंत्र की पहचान रही "विधाई समझौता व्यवस्था" अब लगभग समाप्त हो चुकी है। इसके बजाय, कार्यपालिका के आदेशों और न्यायिक फैसलों के ज़रिए पक्षपातपूर्ण एजेंडे को आगे बढ़ाया जा रहा है। यह सिर्फ एक "अकार्यशीलता" नहीं, बल्कि संस्थापक सिद्धांतों के खिलाफ एक विकृति है।

इसी बीच, सार्वजनिक संवाद में "सच्चाई" की अवधारणा भी संकट में है। गलत जानकारी (डिसइन्फॉर्मेशन) बिना रोकटोक फैल रही है। राजनेता चुनाव नतीजों की वैधता को खुलकर चुनौती दे रहे हैं। 2020 में, अमेरिकी इतिहास में पहली बार, एक सत्तासीन राष्ट्रपति ने अपनी हार स्वीकार करने से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

अपनी नम्रता का गर्व करने से अधिक निंदनीय और कुछ नहीं है। –मारकस

गरीबी पर चिंता बहुत, मगर बढ़ रही अमीरों की अमीरी

आजादी के बाद से ही हमारे नेता गरीबों की हमेशा चिंता की बातें ही नहीं करते रहे हैं, बल्कि गरीब और अमीर के बीच की खाई को पाटने के दावे लेकर भी सामने आते रहे हैं। एक समय गरीबी हटाओ बड़ा नारा हुआ करता था जिस पर भरोसा करके अवाम नेताओं को सत्ता में बिठाया करती थी। कभी समाजवाद के जरिए गरीब की हालत सुधार कर उसके और अमीर के बीच की सीमा रेखा मिटाने के जतन किये गये, तो कभी खुली आर्थिक नीतियों से सबकी झोलियां भरने के उद्यम किए गये। लेकिन हर बार घूम-फिर कर यही बात सामने आई कि अमीरों की अमीरी और गरीबों की संख्या बढ़ रही है। अब तो केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने भी सार्वजनिक रूप से गरीबों की 'बढ़ती' संख्या पर चिंता व्यक्त की है और कहा है कि "धीरे-धीरे गरीबों की संख्या बढ़ रही है और धन कुछ अमीर लोगों के हाथों में केंद्रित हो रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए।" उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था को इस तरह से बढ़ना चाहिए कि रोजगार पैदा हो और ग्रामीण क्षेत्रों का उत्थान हो। उन्होंने भरोसा दिलाया कि "हम एक ऐसे आर्थिक विकल्प पर विचार कर रहे हैं जो रोजगार पैदा करेगा और अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा देगा।"

जब कोई केन्द्रीय मंत्री ऐसे आर्थिक विकल्प की बात करता है जिसमें वैसी अर्थव्यवस्था बनाना हो जो रोजगार पैदा करे तब सवाल उठता है कि ऐसी अर्थव्यवस्था कैसी होगी और वे क्या बाधाएं हैं जो ऐसा नहीं होने देती? हर बार हम इसी पेच में फंस जाते हैं कि अर्थव्यवस्था ठीक होगी तो रोजगार बढ़ेंगे। हमारी अर्थव्यवस्था छलांग लगा कर दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुकी है फिर भी प्रधान मंत्री को अपने भाषणों में देश की 80 प्रतिशत आबादी को गरीब बताना पड़ता है। इससे यह समझ में आ जाना चाहिए कि अर्थव्यवस्था बढ़ने से गरीबी नहीं मिटती बल्कि अमीरों की अमीरी बढ़ती है। अब समय आ गया है कि इससे उलटा सोचा जाए। रोजगार बढ़ेंगे तब ही देश की अर्थव्यवस्था के साथ प्रति व्यक्ति आय भी बढ़ेगी। इसके लिये जरूरी है कि देश के गरीब लोगों के हाथों में रोजगार पाने का हुनर दिया जाय ताकि वे देश की अर्थ व्यवस्था में उत्पादक रूप से शामिल हो सकें। यह इसलिए जरूरी है क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की हिस्सेदारी घट कर 14 प्रतिशत रह गई है, मगर उस पर अब भी 48 प्रतिशत आबादी निर्भर करती है। यह अवहनीय स्थिति है। इस ग्रामीण आबादी को अन्य उत्पादक क्षेत्रों में शिफ्ट करना ही एक रास्ता है। यह तभी हो सकता है जब उनको गुणवत्ता वाली प्राथमिक शिक्षा तथा काम-काज के हुनर की दक्षता का प्रशिक्षण मिले। अभी हमारी शिक्षा व्यवस्था भेद करती है। अमीर अपने बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा की व्यवस्था कर लेता है, मगर गरीब ऐसा नहीं कर पाता है और उसके बच्चे फिसड्डी रह जाते हैं। ऐसे में क्या किया जाय? इसके लिए जाने-माने जनसंख्याविद् डॉ. देवेन्द्र कोठारी, जिनका हाल ही में निधन हो गया, मानव संसाधन विकास का एक उत्तम मॉडल बना कर दे चुके हैं। यह मॉडल, जो अपने लिए बजट में किसी अलग प्रावधान की मांग नहीं करता, को देश-दुनिया के अकादमिक क्षेत्रों में तो खूब सराहना मिली किन्तु हमारे निर्वाचित प्रतिनिधियों को उसे देखने समझने की फुरसत नहीं मिली।

वैश्विक अनुभव से भी पता चलता है कि सामाजिक कल्याण के पहलुओं पर अधिक ध्यान देने वाले देश मानव संसाधनों की गुणवत्ता को बढ़ा कर सफलतापूर्वक अपनी आय या विकास के स्तर को अपेक्षा से कहीं अधिक बढ़ा सकते हैं। यह भारत जैसे देश के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक है। भले ही विकास को बढ़ावा देने के लिए हमारे नेताओं द्वारा ज्ञान-अर्थव्यवस्था (नॉलेज इकॉनोमी) के निर्माण की बातें बढ़-चढ़ कर की जाती रही हैं, किन्तु मानव संसाधनों की गुणवत्ता में सुधार करने में देश पीछे रह गया है। निश्चित रूप से यह स्पष्ट है कि मानव विकास को बेहतर बनाने के लिए अधिक संसाधनों के आवंटन के साथ काम-काज में तत्काल सुधार की आवश्यकता है। ऐसा विशेष रूप से इसलिए है क्योंकि भारत के मानव विकास के प्रयास पिछले दशकों में किए गए शुरुआती लाभ के बाद लड़खड़ा गए हैं। हालांकि समग्र रुझान अब भी दिखाते हैं कि 1990-2022 में भारत के मानव संसाधन सूचकांक (एचडीआई) में 1.24 प्रतिशत वार्षिक औसत सुधार हुआ जो वैश्विक सुधार की गति से दोगुना अधिक होने के करीब रहा है, किन्तु बाद में यह अंतर कम हो गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि भारत की एचडीआई वृद्धि दर, जो पहले 1990-2000 में 1.22 प्रतिशत से बढ़कर 2000 और 2010 के बीच 1.56 प्रतिशत हो गई थी, अब 2010-22 की अवधि में लगभग एक तिहाई घटकर केवल 0.99 प्रतिशत रह गई। वैश्विक मानव विकास सूचकांक (एचडीआई) रैंकिंग में भारत का स्थान 2022 में एक पायदान बढ़कर 134वें स्थान पर पहुंच गया, जो उसके पिछले वर्ष से एक पायदान ऊपर था। भारत मानव विकास की मध्यम श्रेणी में है और हाल के वर्षों में दिखाने के लिए हमारे पास बहुत कुछ नहीं है। वर्ष 2015 और 2022 के बीच भारत की रैंक केवल चार पायदान ऊपर बढ़ी है। अन्य देशों को देखते हुए यह एक बड़ी गिरावट है इस अवधि के दौरान अन्य देशों ने अधिक प्रभावशाली लाभ दर्ज किए है। परेशान करने वाली बात यह है कि भारत की एचडीआई रैंकिंग इसकी वैश्विक प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) रैंकिंग से छह पायदान नीचे है, जो इसके विकास के अनुमानित स्तर को दर्शाती है। यह उन देशों की बढ़ती संख्या के बिल्कुल विपरीत है, जिन्होंने सामाजिक कल्याण के लाभों को बढ़ावा देकर अपनी आय या विकास रैंकिंग की तुलना में उच्चतर मानव विकास रैंकिंग में बढ़ोतरी सुनिश्चित की है।

जाने-माने जनसंख्याविद् डॉ. देवेन्द्र कोठारी, जिनका हाल ही में निधन हो गया, मानव संसाधन विकास का एक उत्तम मॉडल बना कर दे चुके हैं। यह मॉडल, जो अपने लिए बजट में किसी अलग प्रावधान की मांग नहीं करता, को देश-दुनिया के अकादमिक क्षेत्रों में तो खूब सराहना मिली किन्तु हमारे निर्वाचित प्रतिनिधियों को उसे देखने-समझने की फुरसत नहीं मिली।

मानव संसाधन विकास के लिए भारत की कमजोर तैयारी और प्रदर्शन स्कूली शिक्षा में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। प्रति वर्ष जारी होने वाली 'असर' की रिपोर्टें बार-बार बताती आई हैं कि सरकारी प्राथमिक स्कूलों में पढ़ाई की हालत सोचनीय है। यह भी किसी से छुपा नहीं है कि सरकारी स्कूलों में केवल अत्यंत गरीब परिवारों के बच्चे ही पढ़ने आते हैं। हमें नहीं मालूम गडकरी साहब जिस वैकल्पित अर्थव्यवस्था की बात करते हैं वह क्या है लेकिन डॉ. कोठारी कहा करते थे कि सरकार को अमीरों की पढ़ाई का काम उनकी निजी व्यवस्था पर छोड़ कर अपना पूरा ध्यान केवल गरीब की शिक्षा पर लगाना चाहिए। अमीर अपना हाल संभाल लेंगे और सरकार को अपने संसाधन व ऊर्जा गरीबों के बच्चों की शिक्षा पर लगानी चाहिए। इन प्रयासों में स्कूली शिक्षा का ढांचा सुधारने तथा वहां गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना तो है ही, किन्तु साथ ही गरीब बच्चों के स्वास्थ्य की भी जिम्मेवारी लेनी होगी। बच्चा बार बार बीमार पड़ेगा तो स्कूल नियमित किस प्रकार आएगा और अपनी पढ़ाई पूरी करेगा। यह केवल सरकारी स्कूलों में पढ़ने आने वाले बच्चों की स्वास्थ्य देखभाल कर देने भर से नहीं होगा। उनके परिवारों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य के उपाय करने होंगे। उसके लिए उनके परिवारों की स्वच्छता का भी ध्यान रखना होगा। तभी गरीब बच्चे स्वस्थ रह कर स्कूलों में रुचिकर माहौल में अपनी पढ़ाई बरकरार रख सकेंगे। ऐसे गरीब परिवारों का नया डाटा बनाने की जरूरत भी नहीं है। आप सिर्फ सरकारी स्कूलों को ले लीजिए। उनमें नामांकित बच्चों का डाटा तैयार पड़ा है। बस उनके परिवारों तक पहुंचना है। उन परिवारों को जो मदद करनी है उसकी योजनाएं पहले से ही चल रही है। उन योजनाओं को सिर्फ सरकारी स्कूलों के बच्चों के परिवारों पर केंद्रित करनी है। किसी भी अतिरिक्त बजट की आवश्यकता नहीं है। बच्चों की प्राथमिक शिक्षा की नींव मजबूत होगी तो वे उच्च शिक्षा में भी बेहतर कर पाएंगे और अमीर बच्चों की प्रतिस्पर्धा में आ सकेंगे। वे उच्च शिक्षा में न जाकर भी हुनर के प्रशिक्षण लेकर उत्पादक कामों में लग कर देश की अर्थ व्यवस्था में खुद को शामिल कर पाएंगे। इससे देश की अर्थव्यवस्था उत्पादकता उन्मुख होगी जिसमें सबकी समान भागीदारी होगी। इससे वैसा समता वाला समाज बन सकेगा जिसकी भारतीय संविधान में व्यवस्था दी गई है। भारत के सबसे गरीब 40 प्रतिशत के पास जहां कुल आय का केवल 20 प्रतिशत है, वहीं सबसे अमीर एक प्रतिशत के पास 21.7 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। यह विकास के लिए एक बड़ी बाधा है क्योंकि अध्ययनों से पता चलता है कि आय के अत्यधिक केन्द्रीकरण से गरीब सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। डॉ. कोठारी का एचडी प्लस मॉडल हो या कोई और हो, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति संविधान निर्देशित राज्य की जिम्मेवारी निभे बिना कुछ नहीं हो सकता। खुली अर्थ व्यवस्था में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का जबरदस्त निजीकरण हुआ है। दोनों क्षेत्रों में निजी सेवाएं मुनाफा कमाने के लिए सुरसा की तरह मुंह फाड़ती सबको दिख रही है। यह निजीकरण सार्वजनिक सेवाओं की कीमत पर हो रहा है। अमीर को कोई फर्क नहीं पड़ता, मगर गरीब तो सार्वजनिक सेवाओं पर ही निर्भर है और वह वहां अपने को पिटा हुआ, ठगा हुआ महसूस करता है। अर्थव्यवस्था में सबकी भागीदारी के लिए यदि राज्य आज काम शुरू करता है तो उसके परिणाम आने में कम से कम दस वर्ष लगेंगे जब गरीब बच्चे गुणवत्ता वाली प्राथमिक शिक्षा पूरी कर हुनर के प्रशिक्षण के लिए तैयार होंगे। गडकरी साहब ने जिस वैकल्पिक मॉडल की बात की है उसमें इन चुनौतियों का सामना करने की व्यवस्था है, हमें नहीं मालूम।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

सफलता की कहानी-चित्तौड़गढ़ की भगवानी बाई को सामाजिक सुरक्षा का संबल मिला

पं.दीनदयाल उपाध्याय संबल पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित शिविरों का उद्देश्य यही है – अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक संवेदनशीलता के साथ सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाना। इसी कड़ी में चित्तौड़गढ़ जिले की डूंगला पंचायत समिति की ग्राम पंचायत नाडाखेड़ा निवासी 63 वर्षीय भगवानी बाई की कहानी एक मिसाल बन गई है। भगवानी बाई के परिवार में कोई नहीं है, आय का कोई स्थाई स्त्रोत नहीं, पात्रता होते हुए भी जागरूकता की कमी और प्रशासनिक प्रक्रियाओं की जानकारी के अभाव में वर्षों से वृद्धावस्था पेंशन से वंचित थी। उसे छोटे-छोटे और जरूरी खर्च के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था। इसलिए आत्मसम्मान को खटकता भी था। नाडाखेड़ा ग्राम पंचायत में आयोजित शिविर में भगवानी बाई ने अपनी व्यथा उपखंड अधिकारी को बताई। उपखण्ड अधिकारी के निर्देश पर मौके पर ही दस्तावेजों का सत्यापन कर भगवानी बाई की वृद्धावस्था पेंशन स्वीकृत की गई। अब भगवानी बाई को हर माह पेंशन की राशि नियमित रूप से प्राप्त होगी जिससे वे आत्मनिर्भरता की ओर एक नई शुरुआत कर सकेंगी। उनके चेहरे पर संतोष और आंखों में उम्मीद

की चमक यह सिद्ध करती है कि यह योजना कितनी प्रभावशाली है। उन्होंने कहा कि भजनलाल शर्मा जी को मेरी ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद, जिन्होंने इस कैम्प में आधे घंटे में मेरा काम करवा दिया। वे इसी तरह जनता की सेवा करते रहें, हम सब का आशीर्वाद और स्नेह उनकी ताकत बने।

- **उपखण्ड अधिकारी के निर्देश पर मौके पर ही दस्तावेजों का सत्यापन कर भगवानी बाई की वृद्धावस्था पेंशन स्वीकृत की गई**

आर्टिकल के संकलन, लेखन और सम्पादनकर्ता चित्तौड़गढ़ सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय में कार्यरत तुलसीराम कंडारा, सुनील पाराशर और आरिफ।

सार्वजनिक क्षेत्र के मुद्दों पर राजनीतिकरण

अशोक कुमार

सार्वजनिक क्षेत्र में, बिना राजनीतिकरण के विभिन्न मुद्दों पर विचार ही नहीं किया जाता या हो पाता है। यह एक गहरी जड़ें जमा चुकी प्रवृत्ति है जिसके कई कारण और परिणाम हैं।

सत्ता और प्रभाव की होड़: राजनीति का मूल ही सत्ता प्राप्त करना और उसे बनाए रखना है। किसी भी मुद्दे पर चर्चा या निर्णय का इस्तेमाल अक्सर राजनीतिक दल अपने पक्ष में जन समर्थन जुटाने, विरोधियों को कमजोर करने या अपनी विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए करते हैं।

वोट बैंक की राजनीति: विभिन्न समुदायों, जातियों या वर्गों को लक्षित करने के लिए मुद्दे अक्सर राजनीतिक रंग ले लेते हैं। दल विशेष मुद्दों को इस तरह से उठाते हैं जिससे उन्हें किसी विशिष्ट वोट बैंक का समर्थन मिल सके, भले ही समस्या का वास्तविक समाधान कुछ और हो।

मीडिया का प्रभाव: आज के दौर में मीडिया (खासकर न्यूज़ चैनल) भी अक्सर मुद्दों को सनसनीखेज बनाने और राजनीतिक बहस में बदलने में भूमिका निभाता है। टीआरपी (TRP) और व्यूअरशिप के लिए मुद्दों को राजनीतिक चश्मे से दिखाना आम बात हो गई है।

विचारधारात्मक ध्रुवीकरण: विभिन्न राजनीतिक दलों की अपनी-अपनी विचारधाराएं होती हैं। जब कोई मुद्दा सामने आता है, तो उसे अक्सर इन विचारधाराओं के अनुरूप ढाला जाता है, जिससे समस्या के मूल समाधान से हटकर वैचारिक टकराव शुरू हो जाता है।

जवाबदेही से बचना: कई बार राजनीतिकरण का इस्तेमाल किसी समस्या के लिए जवाबदेही से बचने के लिए भी किया जाता है। जब कोई मुद्दा राजनीतिक बहस का विषय बन जाता है, तो असली समाधान पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय आरोप-प्रत्यारोप का खेल शुरू हो जाता है।

प्रचार और दुष्प्रचार: सोशल मीडिया के दौर में, किसी भी मुद्दे को आसानी से राजनीतिक रंग दिया जा सकता है, फिर चाहे वह सही जानकारी के साथ हो या गलत। दुष्प्रचार (misinformation) और फेक न्यूज़ (fake news) का इस्तेमाल भी राजनीतिकरण को बढ़ावा देता है।

इसके परिणाम

समाधान में देरी: जब मुद्दों पर राजनीतिक बहस हावी हो जाती है, तो उनके वास्तविक समाधान पर ध्यान कम हो जाता है या उसमें अनावश्यक देरी होती है।

गंभीरता का अभाव: गंभीर और जटिल मुद्दे अक्सर सतही राजनीतिक बयानबाजी में सिमट कर रह जाते हैं, जिससे उनकी गहराई और गंभीरता कम हो जाती है।

जनता में भ्रम: लगातार राजनीतिकरण से जनता में भ्रम पैदा होता है कि असली समस्या क्या है और उसका समाधान कैसे होगा। वे अक्सर राजनीतिक दलों के दावों और प्रतिदावों के बीच फंस जाते हैं।

राष्ट्रहित की उपेक्षा: कई बार राजनीतिक लाभ के लिए राष्ट्रीय हित से जुड़े मुद्दों पर भी समझौता कर लिया जाता है।

संस्थाओं पर दबाव: राजनीतिक दबाव के कारण कई स्वतंत्र संस्थाएं भी निष्पक्ष होकर काम नहीं कर पातीं, क्योंकि उनके निर्णयों को भी राजनीतिक चश्मे से देखा जाता है।

क्या बिना राजनीतिकरण संभव है? पूर्ण रूप से बिना राजनीतिकरण के मुद्दों पर विचार करना एक आदर्श स्थिति हो सकती है, लेकिन व्यवहार में यह काफी मुश्किल है। राजनीति लोगों की आकांक्षाओं और जरूरतों का प्रतिनिधित्व करने का माध्यम है, और स्वाभाविक रूप से कोई भी मुद्दा जो समाज को प्रभावित करता है, वह राजनीतिक दलों के लिए प्रासंगिक हो जाता है।

हालांकि, महत्वपूर्ण यह है कि राजनीतिकरण इस हद तक न बढ़ जाए कि वह समाधान और विकास के रास्ते में बाधा बने। एक स्वस्थ लोकतंत्र में, राजनीतिक बहस होनी चाहिए, लेकिन यह बहस तथ्यों और समाधान पर आधारित होनी चाहिए, न कि केवल आरोप-प्रत्यारोप या वोट बैंक की राजनीति पर। सार्वजनिक विचार-विमर्श में अधिक परिपक्वता, मीडिया की अधिक जिम्मेदारी और राजनीतिक दलों में राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने की भावना ही इस प्रवृत्ति को कम करने में मदद कर सकती है।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

चातुर्मास आत्मशुद्धि, संयम और सामाजिक सद्भाव का विशेष काल है : राज्यपाल बागड़े

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने भीलवाड़ा में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शिरकत की

कभीलवाड़ा, (निसं)। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े एक दिवसीय दौरे पर भीलवाड़ा पहुंचे। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि चातुर्मास आत्मशुद्धि, संयम और सामाजिक सद्भाव का विशेष काल है, जिसमें साधु-संत एक स्थान पर ठहरकर साधना, ध्यान और तपस्या करते हैं तथा समाज को नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने मंगलवार को आध्यात्मिक चातुर्मास महोत्सव समिति भीलवाड़ा के तत्वावधान में सुभाष नगर स्थित जैन स्थानक में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम संबोधित किया।

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने भीलवाड़ा में सुभाष नगर स्थित जैन स्थानक में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित किया।

राज्यपाल ने कहा कि जैन धर्म जीवदया, अहिंसा और आत्मशुद्धि का प्रतीक है तथा चातुर्मास के माध्यम से इन मूल्यों को जनमानस तक पहुँचाया जाता है। उन्होंने कहा कि सच्चा साधु वही है जो समाज के कल्याण के लिए कार्य करता है और दूसरों के हित में किया गया कार्य ही सच्ची सिद्धि है। यह परंपरा भगवान महावीर के काल से चली आ रही है, जिसका उद्देश्य समाज में नैतिक जागरूकता और आध्यात्मिक चेतना जागृत करना है। राज्यपाल बागड़े ने कहा कि चातुर्मास के दौरान दिए जाने वाले प्रवचन व्यक्ति के अंतर्मन को जागृत करते हैं और समाज में सकारात्मक सोच का संचार करते हैं।

उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति को मिटाने के अनेक प्रयास इतिहास में हुए, लेकिन इसकी गहराई और मूल्यों के कारण यह संस्कृति आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है। अपने संबोधन में राज्यपाल ने नवीन शिक्षा नीति का उल्लेख करते हुए कहा कि यह नीति बच्चों के बौद्धिक और शारीरिक विकास के साथ-साथ उनके नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन पर बल देती है। उन्होंने कहा कि नवीन शिक्षा नीति के माध्यम से ऐसे शिक्षाविद् तैयार होंगे, जो आधुनिक ज्ञान के साथ भारतीय सांस्कृतिक विरासत को भी आत्मसात करेंगे। राज्यपाल बागड़े ने मंच पर विराजित जैन साध्वियों से आशीर्वाद प्राप्त किया और उनके द्वारा समाज को दिए जा रहे आध्यात्मिक मार्गदर्शन की सराहना की। राज्यपाल के दौरे के दौरान कार्यक्रम स्थल एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं के लिए जिला प्रशासन द्वारा समुचित तैयारियां की गई थी। जिला कलेक्टर जसमीत सिंह संधू के निर्देशानुसार सुरक्षा, यातायात, भीड़ प्रबंधन एवं अन्य सभी व्यवस्थाओं के लिए पर्याप्त प्रबंध सुनिश्चित किए गए थे, जिससे कार्यक्रम सुव्यवस्थित रूप से संपन्न हुआ। इस अवसर पर मध्यप्रदेश सरकार के नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, सांसद दामोदर अग्रवाल, भीलवाड़ा विधायक अशोक कोठारी, मांडलगढ़ विधायक गोपाल खंडेलवाल, आसींद विधायक जब्बर सिंह सांखला, चित्तौड़गढ़ विधायक चंद्रभान सिंह आक्या , महापौर राकेश पाठक, जनप्रतिनिधि प्रशांत मेवाड़ा, पूर्व विधायक विट्ठल शंकर अवस्थी सहित अनेक जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

- **राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने मंच पर विराजित जैन साध्वियों से आशीर्वाद प्राप्त किया**

आजादी के बाद देवपुरा मार्ग को कानूनी मान्यता मिली

अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविर ने ग्राम देवपुरा के लोगों को राहत दी

नसीराबाद, (निसं)। नसीराबाद उपखंड की ग्राम पंचायत राजगढ़ में आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविर ने ग्राम देवपुरा के लोगों के लिए ऐतिहासिक राहत का काम किया। शिविर में वर्षों से लंबित मांग को पूरा करते हुए गांव को मुख्य सड़क से जोड़ने वाला रास्ता पहली बार राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज किया गया।

जानकारी के अनुसार देवपुरा, जो गुर्जर बाहुल्य इलाका है, में आज़ादी के बाद से आबादी तक जाने वाला मुख्य मार्ग राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज नहीं था। इससे किसानों को कृषि भूमि के उपयोग और तकनीकी कार्यों में लगातार दिक्कत आ रही थी। शिविर में ग्रामीणों ने इस गंभीर समस्या को उपखंड अधिकारी देवीलाल यादव और तहसीलदार ममता यादव के सामने रखा।

शिविर के दौरान अधिकारियों ने मौके पर राजस्व टीम के साथ स्थिति का जायजा लिया और तुरंत ही रास्ते को राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज करने के आदेश जारी कर दिए। इस आदेश के साथ ही ग्रामीणों की वर्षों पुरानी समस्या का समाधान हो गया और उन्हें बड़ी राहत मिली। ग्रामीणों और ग्राम पंचायत राजगढ़ ने उपखंड प्रशासन और राजस्व विभाग की टीम का आभार जताया। उनका कहना है कि इस फैसले से भविष्य में विकास कार्यों और सुविधाओं के विस्तार में भी मदद मिलेगी।

राशिफल

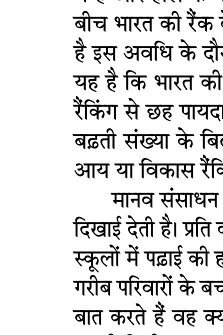

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 9 जुलाई, 2025

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, मूल नक्षत्र रात्रि 4:50 तक, ब्रह्म योग रात्रि 10:9 तक, गर करण दिन 1:08 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से रात्रि 4:50 तक है। रवियोग रात्रि 4:50 तक रहेगा। राजयोग रात्रि 4:50 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा रात्रि 1:37 से आरम्भ होगा। आज चौमासी चौदस (जैन), शिवशयन चतुरदशी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:08 तक, शुभ 10:50 से 12:32 तक, चर 3:56 से 5:38 तक, लाभ 5:38 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:43, सूर्यास्त 7:20

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिल सकती है। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

प्रतिबंधित दिन मंगलवार को खुली मीट की दुकानें, निगम ने की सीज

300 किलो मछलियां की जब्त

- हेरिटेज निगम आयुक्त के निर्देश पर सिविल लाइन जोन की कार्रवाई

नगर निगम की सिविल लाइंस जोन टीम और पशु प्रबंधन शाखा ने संयुक्त अभियान चलाकर प्रतिबंधित दिवस पर खुले मीट की दुकानों को बंद करवाया ।

जयपुर। हेरिटेज नगर निगम की सिविल लाइंस जोन टीम और पशु प्रबंधन शाखा द्वारा संयुक्त अभियान चलाकर प्रतिबंधित दिवस पर खुले मीट की दुकानों को बंद करवाया गया। वहीं, 22 गोदाम क्षेत्र में एक ट्रक में लाई गई 300 किलो अवैध मछली नष्ट की गई है।

यह पूरा अभियान हेरिटेज नगर निगम आयुक्त डॉ. निधि पटेल के निर्देश पर चलाया गया, जिसकी अगुवाई सिविल लाइंस जोन के उपायुक्त सुनील कुमार बैरवा ने की। हेरिटेज निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल के निर्देश पर मंगलवार सुबह सफाई व्यवस्था का निरीक्षण करते हुए उपायुक्त जब रेलवे स्टेशन हसनपुरा क्षेत्र पहुंचे तो उन्होंने पाया कि प्रतिबंध के बावजूद मीट की दुकानें संचालित हो रही थीं, जो निगम के नियमों का खुला उल्लंघन था। ऐसे में स्थिति की गंभीरता को देखते हुए उपायुक्त सुनील कुमार बैरवा ने तुरंत पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. योगेश शर्मा को मौके पर बुलाया और कार्रवाई के निर्देश दिए। पशु चिकित्सा विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर बिना लाइसेंस संचालित दो दुकानों को तुरंत प्रभाव से सील कर दिया। यह दुकानें पूर्व में भी नियम उल्लंघन के चलते चिन्हित की जा चुकी थीं।

इसके बाद उपायुक्त सुनील बैरवा ने डीएलबी कार्यालय के समीप 22 गोदाम पुलिया के नीचे स्थित अनियंत्रित मछली मार्केट का भी औचक निरीक्षण किया, जहां अवैध रूप से बड़ी मात्रा में मछली लाई जा रही थी। इस दौरान लगभग 300 किलो मछली जब्त की गई, जो बिना किसी स्वास्थ्य परीक्षण और स्वीकृति के बाजार में लाई गई थी। हेरिटेज नगर निगम आयुक्त डॉ. निधि पटेल ने बताया कि अवैध मांस और मछली विक्रय शहर की स्वच्छता व्यवस्था और नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनते जा रहे हैं। मंगलवार को सरकार द्वारा मीट मछली की दुकानों पर पाबंदी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि निगम भविष्य में भी इस प्रकार के औचक निरीक्षण और सख्त कार्रवाइयों को जारी रखेगा। इस दौरान निगम आयुक्त ने आमजन से अपील की कि वे ऐसे अवैध व्यापार की सूचना तुरंत निगम प्रशासन को दें, ताकि त्वरित और प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जा सकें। वहीं, आमजन ने निगम की इस तत्परता और सख्ती की सराहना की है। लोगों का मानना है कि इस प्रकार की कठोर कार्रवाई से शहर में अव्यवस्था पर लगाम लगेगी और स्वच्छ, सुरक्षित वातावरण की दिशा में ठोस कदम बढ़ेगा।

ब्लूटूथ डिवाइस के माध्यम से नकल कर चयनित कनिष्ठ लिपिक संगीता गिरफ्तार

- पौरव कालेर निवासी छापर जिला चूरू ने सालासर से मोबाइल फोन के माध्यम से आरोपित संगीता बिश्नोई को परीक्षा केन्द्र में ब्ल्यूटूथ डिवाइस से प्रश्न पत्र के उत्तरों की नकल करवाई थी

जयपुर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) की टीम ने कार्रवाई करते हुए ब्लूटूथ डिवाइस के माध्यम से नकल कर चयनित कनिष्ठ लिपिक संगीता बिश्नोई को गिरफ्तार किया है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एटीएस और एसओजी राजस्थान जयपुर वीके सिंह ने बताया कि राजस्थान उच्च न्यायालय जोधपुर की ओर से कनिष्ठ न्यायिक,सहायक लिपिक ग्रेड-द्वितीय एवं लिपिक ग्रेड-द्वितीय के पदों पर सीधी भर्ती के लिए संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा (2022) 12 मार्च 2023 एवं 19 मार्च 2023 को दिन में समय 12 बजे से 2 बजे तक आयोजित की गई थी। आरोपित संगीता बिश्नोई का परीक्षा 19 मार्च 2023 को परीक्षा केन्द्र आरएनबी यूनिवर्सिटी बीकानेर (राजस्थान) था । संगठित नकल गिरोह के मुख्य आरोपित पौरव कालेर निवासी छापर जिला चूरू ने सालासर से मोबाइल फोन के माध्यम से आरोपित संगीता बिश्नोई को परीक्षा केन्द्र में ब्ल्यूटूथ डिवाइस से प्रश्न पत्र के उत्तरों की नकल करवाई थी ।संगीता बिश्नोई उक्त सार्वजनिक प्रतियोगी परीक्षा में नकल कर उर्तीण हो गई थी एवं धोखाधडी पूर्वक कनिष्ठ श्रेणी लिपिक (ग्रेड-द्वितीय) के पद पर चयनित हो गई थी । आरोपित संगीता बिश्नोई वर्तमान में न्यायालय- सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट, देसूरी जिला पाली में पदस्थापित है। कनिष्ठ श्रेणी लिपिक (ग्रेड-द्वितीय) के पद पर धोखाधड़ी पूर्वक चयनित होने पर आरोपित संगीता बिश्नोई को गिरफ्तार किया गया है।

बीस ग्राम स्मैक सहित एक आरोपित गिरफ्तार

- मोहम्मद इरफान को गिरफ्तार किया

जयपुर। शास्त्रीनगर थाना पुलिस ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए बीस ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक सहित एक बदमाश को गिरफ्तार किया है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर उत्तर राशि डोगरा डूडी ने बताया कि पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत शास्त्री नगर थाना पुलिस ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए बीस ग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक सहित मोहम्मद इरफान निवासी संजय नगर भट्टा बस्ती जयपुर को गिरफ्तार किया है। पुलिस आरोपित से अवैध मादक पदार्थ की खरीद-फरोख्त के बारे में जानकारी कर रही है।

ताल कटोरा की पाल पर खिलाए जाएंगे पारंपरिक खेल

जयपुर। हेरिटेज निगम की ओर से तीज महोत्सव आयोजन के तहत इस बार शहरवासियों को पारंपरिक खेल भी खिलाए जाएंगे। जिसके लिए हेरिटेज निगम प्रशासन ने तैयारी शुरू कर दी है। इस संबंध में हेरिटेज निगम की सांस्कृतिक समिति चेयरमैन ज्योति चौहान ने बताया कि हेरिटेज निगम महापौर कुसुम यादव के नेतृत्व में पारंपरिक तीज त्यौहार पर इस बार नगर निगम हेरिटेज की ओर भव्य आयोजन किए जाएंगे। जिससे शहरवासियों को हमारी संस्कृति और सभ्यता के बारे में जानकारी भी मिलें। इसी के तहत तीन दिवसीय तीज महोत्सव आयोजन में कई विभिन्न गतिविधियां कराई जाएंगी। 27 जुलाई को शहरवासियों को रुमाल झपट्टा, म्यूजिकल चेयर, खो खो, सितोलिया जैसे पारंपरिक खेल खिलाए जाएंगे। वहीं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कच्ची घोड़ी, केमल कार्ट, राजस्थानी फॉक डांस और सावन के गीतों की परफॉर्मेंस दी जाएगी। इससे पहले तीज माता की सवारी का पूजन भी किया जाएगा।

'मुठ्ठी भर उम्मीदवारों के लिए 22 लाख के हितों की नहीं ली जा सकती बलि'

- हाईकोर्ट ने नीट यूजी-2025 परीक्षा को पुनः आयोजित कराने के संबंध में दायर याचिकाओं को खारिज कर दिया

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने नीट यूजी-2025 परीक्षा को पुनः आयोजित कराने के संबंध में दायर याचिकाओं को खारिज कर दिया है। अदालत ने कहा कि मुठ्ठी भर उम्मीदवारों के शिकायत के निवारण के लिए देशभर में आयोजित की गई परीक्षा में शामिल 22 लाख अभ्यर्थियों के हितों की बलि नहीं ली जा सकती। इसके साथ ही अदालत ने परीक्षा को पुनः आयोजित कराने और बोनस अंक देने से इनकार कर दिया है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश रोशन यादव व अन्य की ओर से दायर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिकाओं में कहा गया कि देशभर के 552 शहरों और 14 इंटरनेशनल केन्द्रों में नीट यूजी-2025 परीक्षा आयोजित की गई थी। जिसमें सीकर जिले में 98 परीक्षा केन्द्र बनाए गए और 31,787 अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी। इस दौरान बिजली गुल होने सहित अन्य समस्याओं को लेकर 15 केन्द्रों की परीक्षा प्रभावित हुई और इसमें शामिल 5,390 अभ्यर्थी परीक्षा के दौरान प्रतिकूल प्रभावित हुए। याचिका में कहा गया कि जिले के कई परीक्षा केंद्रों में पांच मिनट से लेकर 28 मिनट तक बिजली गुल रही। इस विफलता के कारण याचिकाकर्ताओं का प्रदर्शन प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ और उन्हें अनावश्यक तनाव झेलना पडा। याचिका में यह भी कहा गया कि अंतिम उत्तर कुंजी के अनुसार याचिकाकर्ताओं के अंक 400 से 600 के बीच आए हैं और अधिकांश याचिकाकर्ता कट ऑफ के करीब थे। यदि परीक्षा में व्यवधान नहीं होता तो वे उच्च अंक प्राप्त कर चयनित होते। इसका विरोध करते हुए राज्य सरकार की ओर से अधिवक्ता एमएस राघव ने बताया कि कुल अभ्यर्थियों में से सिर्फ आधा फीसदी अभ्यर्थियों ने ही शिकायत दर्ज कराई है। इसके अलावा केवल मुठ्ठी भर उम्मीदवार हाईकोर्ट पहुंचे हैं और 99.5 फीसदी अभ्यर्थी परीक्षा संचालन से संतुष्ठ नजर आए हैं।

इसके अलावा तूफान और खराब मौसम के कारण बिजली गुल होना नियंत्रण से परे था। वहीं मामले में एक कमेटी भी गठित की गई थी। जिसने पाया कि प्रभावित परीक्षा केन्द्रों और सामान्य केंद्रों में परीक्षा के लिए आवंटित अवधि में कोई अंतर नहीं था और ना ही याचिकाकर्ताओं को कोई नुकसान हुआ। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने याचिकाओं को खारिज कर दिया है।

हेरिटेज निगम ने हटाए अतिक्रमण

जयपुर। सड़क और बरामदे पर अस्थाई अतिक्रमण के खिलाफ हेरिटेज निगम लगातार सख्त कार्रवाई कर रहा है। मंगलवार को हेरिटेज निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल के निर्देश पर उपायुक्त सतर्कता पुष्पेंद्र सिंह राठौड़ ने अभियान चलाया। इस दौरान निगम दस्ते ने छोटी चौपड़, चांदपोल, वनस्थली मार्ग, रेलवे स्टेशन, सिंधी कैंप, 22 गोदाम पुलिया, घाटगेट, ट्रांसपोर्ट नगर, ब्रह्मपुरी इलाके में अस्थाई अतिक्रमण को हटा दिया।

मानसागर में मछलियों को दाना डालने पर लगेगी पाबंदी

- 'जल महल की पाल पर अतिक्रमण होने पर की जाएं सख्त कार्रवाई'

जयपुर। जल महल पर सफाई सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए हेरिटेज निगम सख्त कदम उठाने जा रहा है। इस संबंध में हेरिटेज निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल ने मानसागर मछलियों को दाना डालने पर पाबंदी लगाने के निर्देश दिए हैं।

इसके अलावा आयुक्त निगम ने कहा कि जल महल की पाल पर अतिक्रमण करने पर सख्त कार्रवाई की जाएं और सफाई व्यवस्था बनाए रखने के लिए गंदगी फैलाने पर भारी जुर्माना राशि वसूल की जाएं। अस्थाई अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ कार्रवाई कर सामान जब्त किया जाएं और उसे छोड़ा नहीं जाएं। नहीं मानने पर संबंधित के खिलाफ मुकदमा भी दर्ज कराया जाएं। निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल ने निर्देश दिए कि सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की पालना करते हुए जल महल पर सफाई व्यवस्था की निगरानी के लिए गार्डों की संख्या बढ़ाई जाएं और कैमरे से निगरानी भी रखी जाएं। पाल पर बोर्ड लगाकर आमजन को चेतावनी दी जाएं कि जल महल के आस पास किसी भी तरह की गंदगी करने पर भारी जुर्माना वहन करना पड़ेगा।

स्कूल फीस रिवीजन कमेटी को लेकर याचिका निस्तारित

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने स्कूल फीस से जुडे विवादों की सुनवाई को लेकर रिवीजन कमेटी का गठन नहीं करने के खिलाफ दायर याचिका को निस्तारित कर दिया है। अदालत ने कहा कि रिवीजन कमेटी का गठन हो चुका है और कमेटी ने याचिकाकर्ता के संबंध में डिवीजनल कमेटी के आदेश को गलत मानते हुए उसे दो माह में नए सिरे से आदेश पारित करने को कहा है। जस्टिस अनूप ढंड की एकलपीठ ने यह आदेश भारतीय विद्या भवन विद्याश्रम की ओर से दायर याचिका का निस्तारण करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता बीएस छाबा ने कहा कि रिवीजन कमेटी का गठन किया जा चुका है और इसका गजट नोटिफिकेशन भी हो चुका है। वहीं कमेटी ने याचिकाकर्ता के संबंध में डिवीजनल कमेटी के आदेश को गलत मानते हुए उसे दो माह में नए सिरे से आदेश पारित करने को कहा है। ऐसे में याचिका को निस्तारित किया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने याचिका को निस्तारित कर दिया है।

याचिका में अधिवक्ता प्रतीक कासलीवाल ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता स्कूल की फीस निर्धारण को लेकर स्कूल फीस कमेटी ने निर्णय लिया था। इस कमेटी के आदेश को कुछ अभिभावकों ने डिवीजनल कमेटी के समक्ष चुनौती दी। वहीं डिवीजनल कमेटी ने स्कूल फीस कमेटी के आदेश को गलत माना। याचिका में कहा गया कि फीस नियंत्रण अधिनियम की धारा दस में डिवीजन कमेटी के आदेश को चुनौती देने के लिए रिवीजन कमेटी के गठन का प्रावधान है, लेकिन राज्य सरकार ने बीते नौ साल से इस रिवीजन कमेटी का गठन ही नहीं किया है। जबकि मई, 2024 में सुनवाई के दौरान राज्य सरकार ने अदालत में अंडरटेकिंग दी थी कि तीन सप्ताह में रिवीजन कमेटी का गठन कर लिया जाएगा।

11 छायादार पेड लगाने पर साक्ष्य पेश करने की अनुमति

- अदालत ने सोसायटी पर दस हजार रुपए का हर्जाना लगाया

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने मकान मालिक और किराएदार से जुडे मामले में किराएदार सोसायटी को कहा है कि यदि वह आगामी सुनवाई से पूर्व सार्वजनिक जगह पर 11 छायादार पेड लगाकर उसकी देखभाल करती है तो उसे किराया अधिकरण में साक्ष्य पेश करने की अनुमति दी जाती है। इसके साथ ही अदालत ने सोसायटी पर दस हजार रुपए का हर्जाना भी लगाया है। जस्टिस अनूप कुमार ढंड की एकलपीठ ने यह आदेश सेंट्रल एकेडमी एजुकेशन ट्रस्ट की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा कि किराया अधिकरण में गवाह पेश करने में याचिकाकर्ता की लापरवाही रही है, लेकिन प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत के अनुसार याचिकाकर्ता को इसके लिए अंतिम मौका दिया जा सकता है। यदि याचिकाकर्ता अधिकरण की ओर से तय पेशी पर साक्ष्य पेश करने में असफल रहता है तो उसके बाद याचिकाकर्ता को कोई मौका नहीं दिया जाएगा। अदालत ने कहा कि व्यापक जनहित को देखते हुए याचिकाकर्ता को 11 पेड लगाने का आदेश दिया जा रहा है।

याचिका में अधिवक्ता केएन शर्मा ने कहा कि उसके खिलाफ किराया अधिकरण, ब्यावर में साल 2019 में बेदखली का दावा किया गया था। याचिकाकर्ता मामले में एक गवाह महावीर प्रसाद शर्मा की गवाही कराना चाहता था, लेकिन उसकी कैंसर से गत 28 अप्रैल को मौत हो गई। इस पर उसने हंस नाथ यादव की गवाही कराने के लिए प्रार्थना पत्र पेश किया, लेकिन उसके गोरखपुर में रहने के चलते तय तिथि वह पेश नहीं हो सका।इस पर याचिकाकर्ता ने अधिकरण में प्रार्थना पत्र पेश कर गवाह पेश करने के लिए अंतिम मौका चाहा, लेकिन अधिकरण ने गत 10 जून को वह प्रार्थना पत्र भी खारिज कर दिया। याचिका में कहा गया कि यह मुकदमे का महत्वपूर्ण गवाह है। ऐसे में उसका परीक्षण कराने की अनुमति दी जाए। जिसका विरोध करते हुए मकान मालिक की ओर से अधिवक्ता जयप्रकाश गुप्ता ने कहा कि बेदखली का मामला 6 साल से लंबित है और याचिकाकर्ता कार्रवाई में देरी करना चाहता है। हाईकोर्ट ने पहले भी प्रकरण को एक माह में निपटाने को कहा था, लेकिन याचिकाकर्ता की ढिलाई के चलते ऐसा नहीं हो पाया।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी का जुली ने जताया विरोध

जयपुर। राजस्थान में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी पर नाराजगी जताते हुए कहा है कि भाजपा सरकार में विरोध की आवाज़ को कुचलना अब एक 'नियम' बन चुका है और असंवैधानिक तरीके से कार्रवाई करना भाजपा की आदत। लोकतंत्र में विरोध करना नागरिकों का संवैधानिक अधिकार है, लेकिन भाजपा सरकार इस लोकतांत्रिक परंपरा को भी अपराध मान रही है सरकार द्वारा पुलिस के माध्यम से कांग्रेस कार्यकर्ताओं को बेवजह हिरासत में लेना भाजपा की तानाशाही सोच को उजागर करता है।

धौलपुर में युवा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के विरुद्ध जिस तरह से दमनकारी कार्रवाई की जा रही है, वह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। पहले सीकर, बीकानेर, अनूपगढ़, चूरू और अब धौलपुर में शांतिपूर्ण विरोध करने वाले युवा कांग्रेस एवं कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर कार्रवाई की जा रही है।

आयुक्त सैनी ने हिंगोनिया गौशाला का किया निरीक्षण

- नगर निगम ग्रेटर की पशु प्रबंधन शाखा मिशन मोड पर
- गत 5 माह में 5 हजार 500 निराश्रित गौवंश को पकड़कर हिंगोनिया गौ-पुनर्वास केंद्र पहुँचाया

जयपुर। नगर निगम ग्रेटर की पशु प्रबंधन शाखा मिशन मोड पर कार्य कर रही है। आयुक्त डॉ॰ गौरव सैनी ने मंगलवार को हिंगोनिया गौशाला का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उपायुक्त पशु प्रबंधन, पशु चिकित्सा अधिकारी, पशुधन सहायक एवं कृष्ण बलराम सेवा ट्रस्ट से जुड़े पदाधिकारी उपस्थित रहे।

निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने मानसून के मध्यनजर रखते हुए गौशाला की व्यवस्थाओं को सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित करने के निर्देश दिए। उन्होंने तत्काल प्रभाव से साफ-सफाई, जल निकासी, पशुओं के लिए चारे व चिकित्सा सुविधा की व्यवस्था को सुनिश्चित करने पर जोर दिया।

इसके अतिरिक्त, सैनी ने नंदीशाला एवं बहुउद्देश्यीय पशु चिकित्सालय का भी निरीक्षण किया तथा वहाँ रह रहे देशी गोवंश की स्थिति और उनकी देखरेख से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

नगर निगम ग्रेटर आयुक्त डॉ॰ गौरव सैनी के दिशा निर्देशानुसार पशु प्रबंधन शाखा द्वारा गत 5 माह में नगर निगम ग्रेटर क्षेत्राधिकार से निराश्रित 5 हजार 500 गौवंश को पकड़कर हिंगोनिया गौ-पुनर्वास केंद्र भेजा गया। इसके अतिरिक्त रोगी पशु वाहन (एंबुलेंस) द्वारा लगभग एक हजार गौवंश को उपचार हेतु गौ-पुनर्वास केंद्र हिंगोनिया के पशु चिकित्सालय में उपचार कराया गया।

जेडीए ने दो स्थानों से अतिक्रमणों को हटाए

जयपुर । जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा जोन-2 में विद्याधर नगर अलका सिनेमा के सामने रोड़ न. 1 की फुटपाथ, सडक सीमा को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया।

जोन-7 में टैगोर नगर हनुमान बाटिका अजमेर रोड पर रोड सीमा मे आ रहे अतिक्रमणों को ध्वस्त कर रोड सीमा को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया।

महानिरीक्षक पुलिस कैलाश चन्द्र विश्नोई ने बताया को जोन-02 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित विद्याधर नगर अलका सिनेमा के सामने रोड़ न. 1 की फुटपाथ, सडक सीमा पर करीब 15 स्थानों पर अस्थाई अतिक्रमण कर लगाये गये थडी, ठेले, टेबल, कुर्सियां, बांस, तम्बूं, तिरपाल, पत्थर की पट्टियां इत्यादि लगाकर अतिक्रमण किये जाने की सूचना प्राप्त होने पर आज जोन-02 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से हटवाया जाकर फुटपाथ, रोड सीमा को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया।

टैगोर नगर हनुमान बाटिका अजमेर रोड पर सडक सीमा मे आ रहे अवैध अतिक्रमण 04 टीनशेडनुमा कोठरी, लेट-बॉथ, बाउन्ड्रीवॉल इत्यादि अवैध निर्माण अतिक्रमणों को निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया।

जलभराव निस्तारण के लिए युद्धस्तर पर अभियान जारी

जयपुर। जयपुर विकास प्राधिकरण वर्षा के दौरान उत्पन्न हो रही समस्याओं-विशेषत: सड़कों की क्षित और जलभराव-के निस्तारण के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

आमजन की सुविधा एवं सुरक्षित आवागमन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जेडीए द्वारा शहरभर में पेच रिपेयर कार्य व जलनिकासी की व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है जयपुर विकास आयुक्त आनंदी ने बताया कि हाल की भारी वर्षा के कारण कई प्रमुख सड़कों पर आमजन को आवागमन में हो रही कठिनाइयों को देखते हुए, जेडीए ने तुरंत कार्रवाई करते हुए अभियंताओं को अपने-अपने क्षेत्र में पेच रिपेयर कार्य करने के निर्देश दिए हैं। जेडीए की प्राथमिकता शहरवासियों को बेहतर सड़कें उपलब्ध कराना है।

'गरीब, किसान, युवा एवं महिलाओं के उत्थान के लिये कार्य कर रही है सरकार'

शिविरों के माध्यम से पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सपना हो रहा साकार : मुख्यमंत्री भजनलाल

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने छात्राओं को स्कूटी की चाबी सौंपी।

- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़े के तहत आयोजित समारोह को संबोधित किया

चूरू, (निसं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार जनकल्याण को समर्पित है और इसी भावना के तहत पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है, जिसके माध्यम से जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना सुनिश्चित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार गरीब, किसान, युवा एवं महिला इन चारों जातियों के उत्थान के लिए कार्य कर रही है तथा हम संकल्प पत्र में किए गए प्रत्येक वादे को पूरा करेंगे, जिससे उत्कृष्ट और विकसित राजस्थान की परिकल्पना को गति मिलेगी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा मंगलवार को चूरू में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़े के तहत आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि चूरू अपनी अनूठी स्थापत्य कला और प्राकृतिक सुंदरता के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। साथ ही, तालछापर अभयारण्य के काले हिरण और प्रवासी पक्षियों का कलरव प्रकृति प्रेमियों को एक अद्भुत अनुभव प्रदान करता है। यहां की कलात्मक हवेलियां, भित्ति चित्र और अन्य ऐतिहासिक धरोहर चूरू के समृद्ध सांस्कृतिक इतिहास से रूबरू कराती हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि इन शिविरों में रास्तों से अतिक्रमण हटाने, भूमि के स्वामित्व मिलने जैसे बरसों से लंबित काम पूरे हो रहे हैं।

मुख्यमंत्री कहा कि चूरू जिले के समग्र विकास को प्राथमिकता देते हुए हमारी सरकार ने बजट में 834 करोड़ रुपये का प्रावधान किया तथा चूरू विधानसभा में 300 करोड़ रुपये के काम हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि 200 करोड़ रुपये से रिंग रोड वाया तारानगर वाया भालेरी से सरदारशहर वाया रतनगढ़ वाया देपलसर से एनएच-52 बाइपास सड़क निर्माण करवाया जाएगा। साथ ही, 20 करोड़ रुपये से चूरू-जयपुर रोड़ ओवरब्रिज की मरम्मत की जा रही है। सिरसला रेलवे लाइन पर अंडरब्रिज, रामनगर तिराहा और ओम कॉलोनी में आरयूबी, चूरू शहर में एलीवेटेड रोड बनाने का काम भी किया जा रहा है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने चूरू में 3 करोड़ 62 लाख रुपये से बने मुख्यमंत्री पुनर्वास गृह तथा 11 करोड़ 76 लाख रुपये से निर्मित 200 बेड क्षमता वाले अल्पसंख्यक बालक आवासीय विद्यालय का लोकार्पण किया। साथ ही शर्मा ने 7 करोड़ 50 लाख रुपये से चूरू में कृषि महाविद्यालय खांसोली का शिलान्यास भी किया। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत ने कहा कि मुख्यमंत्री ने यमुना जल समझौते के माध्यम से शेखावाटी क्षेत्र की प्यास बुझाने की दिशा में प्रभावी और ठोस कदम उठाया है। उन्होंने कहा कि अंत्योदय संबल पखवाड़ा सिर्फ एक पखवाउड़ नहीं है बल्कि राजस्थान की जनता की विकास यात्रा का एक नया अध्याय है।

इस दौरान मुख्यमंत्री ने विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत ममता (मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना), गिरधारी सिंह (तारबंदी), कुम्भाराम (प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण), गोमती (प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना), गोपीराम तथा प्रताप सिंह (विभाजन रिकॉर्ड) को प्रमाण-पत्र एवं चौक वितरण तथा भामाशाहों का सम्मान भी किया। इससे पहले मुख्यमंत्री ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़े के अंतर्गत शिविर का अवलोकन किया तथा कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी वितरण योजनांतर्गत छात्राओं को स्कूटी की चाबी सौंपी। साथ ही, मुख्यमंत्री ने समारोह परिसर में पीपल का पौधा लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

पूर्व मंत्री राजेन्द्र राठौड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व की प्रदेश सरकार गरीब, युवा, किसान व महिलाओं की तकलीफों को समझती है। विधायक हरलाल सहारण ने कहा कि प्रदेश सरकार ने चूरू को बड़ी सौगात दी है। इस अवसर पर जिला प्रमुख वंदना आर्य, पैरालिंपिक कमेटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष देवेन्द्र झाझड़िया, उप जिला प्रमुख महेन्द्र न्यौल, पराक्रम सिंह राठौड़, वासुदेव चावला, बसंत शर्मा, पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवां, पूर्व मंत्री खेमाराम मेघवाल, पूर्व विधायक अभिनेष महर्षि, बीदासर प्रधान संतोष मेघवाल, सुमित्रा पूनिया, पंकज गुप्ता, चंद्राराम गुरी, अभिषेक चोटिया, सीताराम लुगरिया आदि ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चोटिया और मुकुल भाटी ने किया।

घूसखोर पटवारी को दो साल की सजा सुनाई

अजमेर, (कासं)। अजमेर एसीबी कोर्ट ने कृषि भूमि के नामांतरण खोलने की एवज 15 हजार की घूस के मामले में गिरफ्तार पटवारी को दो साल की सजा सुनाई है। साथ ही पटवारी को पांच हजार के अर्थदंड से भी दंडित किया है। नवंबर 2013 में पटवारी को जयपुर एसीबी ने टोंक में रिश्वत लेते गिरफ्तार किया था।

एसीबी कोर्ट के सरकारी वकील एसएन चितारा ने बताया कि जयपुर एसीबी द्वारा 26 नवंबर 2013 को टोंक निवासी पटवारी प्रहलाद गुर्जर को रिश्वत लेते गिरफ्तार किया था। मामले की सुनवाई अजमेर एसीबी कोर्ट में चल रही थी। कोर्ट में मंगलवार को सुनवाई हुई। जिसमें अभियोजन पक्ष की ओर से 17 गवाह और 25 दस्तावेज पेश किए गए। न्यायालय ने सुनवाई करते हुए पटवारी को सजा सुनाई।

मंदिर से चोरी करने वाला गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। झाड़ोल कस्बे में स्थित मंदिर से नकदी चोरी करने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

प्रकरण के अनुसार गोपालदास पुत्र केशुलाल वैष्णव निवासी कंथारिया झाड़ोल ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी। उसने बताया कि 26 जून सवेरे मैं लक्ष्मीनारायण मंदिर पूजा करने के बाद चला गया, सांय दुबारा पहुंचा तो मंदिर गर्भगृह का दरवाजा तोड़ कर अंदर घुस अज्ञात चोर सामान बिखेर कर मौके से नकदी चुरा ले गया। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर झाड़ोल थानाधिकारी फैलीराम के नेतृत्व में गठित दल ने मामले में किए गए अनुसंधान में मिले साक्ष्यों के आधार पर आरोपी महेन्द्र पुत्र जमनालाल लकुम्बरा निवासी वडेरा तालाब अदकालिया को गिरफ्तार किया गया।

अजमेर डिस्कॉम को 498 तकनीशियन तृतीय पदों की स्वीकृति मिली

उपभोक्ताओं को निर्बाध विद्युत आपूर्ति हेतु एक बड़ा कदम, जल्द प्रारंभ होगी भर्ती प्रक्रिया

अजमेर, (कासं)। राज्य सरकार ने अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड को 498 तकनीशियन थर्ड ग्रेड पदों की स्वीकृति प्रदान की है। यह निर्णय राज्य सरकार द्वारा उपभोक्ताओं को बेहतर, विश्वसनीय और निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए, सकारात्मक और दूरदर्शी कदमों की श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण पहल है।

अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के प्रबंध निदेशक के पी वर्मा ने बताया कि तकनीकी स्टाफ की उपलब्धता में बढ़ोतरी से विद्युत आपूर्ति व्यवस्था अधिक सुदृढ़ होगी। ट्रांसफॉर्मर, लाइन, फीडर व अन्य तकनीकी कार्यों में तेजी आएगी, जिससे उपभोक्ताओं को निर्बाध सेवा प्राप्त होगी। उन्होंने बताया कि इन स्वीकृत पदों पर भर्ती की प्रक्रिया शीघ्र प्रारंभ की जाएगी, जिससे निगम की फील्ड स्तर पर तकनीकी क्षमताएं मजबूत होंगी और विद्युत आपूर्ति में आने वाली बाधाओं को त्वरित रूप से दूर किया जा सकेगा। विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि यह सभी तकनीशियन पद आईटीआई योग्यताधारी के लिए होंगे, जिससे तकनीकी योग्यता रखने वाले युवा अभ्यर्थियों को रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे। यह निर्णय राज्य सरकार की उस प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जिसमें उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण विद्युत सेवाएं उपलब्ध कराना सर्वोच्च प्राथमिकता है। साथ ही इससे प्रदेश के युवाओं को रोजगार के नए अवसर भी प्राप्त होंगे, जो राज्य के सामाजिक आर्थिक विकास की दिशा में एक सशक्त कदम है।

30 हजार की रिश्वत लेते अधिशाषी अभियंता गिरफ्तार

आरोपी अधिशाषी अभियंता

भरतपुर, (निसं)। प्रदेश में भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो लगातार भ्रष्ट अधिकारियों पर शिकंजा कस रही है। इसके बावजूद भ्रष्ट अधिकारी रिश्वत लेने से बाज नहीं आ रहे हैं। एसीबी को लगातार परिवादियों से शिकायतें मिल रही है, जिसपर त्वरित कार्रवाई भी की जा रही है। ताजा मामला भरतपुर से आया है, जहां एक बिजली विभाग के अधिशाषी अभियंता को 30 हजार की रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया है।

एसीबी के एडिशनल एसपी अमित सिंह ने बताया कि भरतपुर में बिजली विभाग के एग्जीक्यूटिव इंजीनियर (अधिशाषी अभियंता) अविनिश सोनी ने परिवादी से उसकी फर्म के बिल पास करने के एवज में 15 हजार रुपए की मांग की, जिसकी शिकायत परिवादी ने एसीबी मुख्यालय हेल्पलाइन नंबर पर सम्पर्क किया।

उसके बाद शिकायत आई तो भरतपुर एसीबी टीम ने सत्यापन किया। एग्जीक्यूटिव इंजीनियर अविनिश सोनी ने 36 हजार रुपये रिश्वत की मांग की थी। वहीं रिश्वत की डील 30 हजार रुपये में फाइनल हुआ, जिस पर कार्रवाई करते हुए एग्जीक्यूटिव इंजीनियर को एसीबी ने ट्रैप कर रिश्वत के पैसों के साथ रंगेहाथ गिरफ्तार किया है। वहीं अब एग्जीक्यूटिव इंजीनियर अविनाश सोनी के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। इस मामले में एसीबी की टीम अब बड़ा खुलासा भी कर सकती है।

निर्माणाधीन मंदिर में तोड़फोड़ के बाद तनाव

- स्थानीय ग्रामीणों और हिंदू संगठनों के लोगों ने प्रदर्शन किया, पांच घंटे तक हाइवे जाम रहा

उदयपुर, (कासं)। चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित बड़ीसादड़ी उपखंड के डूंगला थाना क्षेत्र में मंगलवार सुबह एक निर्माणाधीन मंदिर में तोड़फोड़ की घटना सामने आने के बाद क्षेत्र में तनाव फैल गया। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय ग्रामीणों और हिंदू संगठनों के लोगों ने विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। प्रदर्शनकारियों ने डूंगला बस स्टेण्ड पर टायर जला उदयपुर हाइवे को करीब पांच घंटे तक जाम कर दिया।

जानकारी के अनुसार डूंगला के बनाखेड़ी मार्ग पर स्थित निर्माणाधीन मंदिर में सोमवार रात अज्ञात व्यक्तियों द्वारा शिवलिंग को खंडित किया गया और मंदिर के पिलर्स को गिरा दिया गया। मंगलवार सुबह जब ग्रामीण मंदिर पहुंचे तो घटना का पता चला। इससे क्षेत्र में आक्रोश फैल गया और बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा होकर प्रदर्शन करने लगे। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए डूंगला उपखंड अधिकारी ईश्वरलाल, भदेसर थाना सहित पांच थानों की पुलिस मौके पर तैनात की गई। जिला कलेक्टर आलोक रंजन और डीएसपी देशराज कुलदीप मौके पर पहुंचे और लोगों को समझाइश कर जाम खुलवाया।

डीएसपी देशराज ने बताया कि घटना की जानकारी सुबह 6:30 बजे मिली थी। पुलिस ने कुछ संदिग्धों को राउंडअप किया है और पूछताछ जारी है। जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार करने की बात कही गई है। घटना की जानकारी मिलने के बाद सहकारिता मंत्री एवं बड़ीसादड़ी विधायक गौतम दक भी मौके पर पहुंचे और अधिकारियों से घटना की जानकारी ली। उन्होंने लोगों को भरोसा दिलाया कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। घटना के बाद डूंगला कस्बे में इन्टरनेट सेवा को अग्रिम आदेश तक बंद कर दिया गया है। प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि अफवाहों पर ध्यान न दें और कानून व्यवस्था बनाए रखें। पुलिस मामले की गहराई से जांच कर रही है और जल्द ही सच्चाई सामने लाने का प्रयास किया जा रहा है।

गुजरात पुलिस के एसआई पर फायर कर तस्कर फरार हुआ

उदयपुर, (निसं)। शहर के सुखेर थाना क्षेत्र में क्लब में आए तस्कर को पकड़ने के लिए आई गुजरात पुलिस के एसआई पर तस्कर फायर कर फरार हो गया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ राजकार्य में बाधा का प्रकरण दर्ज किया है।

शहर के सुखेर थाना क्षेत्र 100 फिट रोड़ जूडियों शोरूम के समीप सोमवार शाम भरतपुर निवासी तस्कर सुरेश पुरोहित के शोभागपुरा स्थित वेगस 69 बार एण्ड क्लब के समीप स्थित कृष्ण होटल में होने की सूचना पर उसे पकड़ने गुजरात पालनपुर थाना पुलिस एसआई जयदीपसिंह मय जाप्ता उदयपुर पहुंचे, जहां मौक पर पहुंचते ही कार में बैठे तस्कर को रोकने का प्रयास किया, लेकिन बदमाश कार लेकर भागा इस पर एसआई जयदीपसिंह ने उसे पकड़ने के लिए बोनट पर चढ़ गया, लेकिन सुरेश कार को गलियों में घुमाता रहा। इस दौरान एसआई ने तस्कर सुरेश पर फायर किया इसके बावजूद आरोपी उसे बोनट पर घुमाते हुए कुछ दूरी बाद अंत में उसे नीचे गिरा कार चढ़ाने का प्रयास कर फरार हो गया। इस दौरान कुछ लोगों ने पुलिस की मदद की लेकिन आरोपी पकड़ में नहीं आया। आरोपी सुरेश पुरोहित के खिलाफ पालनपुर गुजरात पुलिस थाने में तस्करी मामले में वांछित था जिसकी पुलिस तलाश कर रही थी। इसके अलावा गुजरात के अन्य पुलिस थानों में उसके खिलाफ हवाला कारोबार एवं धोखधड़ी के प्रकरण दर्ज है। उक्त मामलों में भी पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। इसकी सूचना मिलने पर पुलिस ने एसआई जयदीपसिंह पुत्र जोरूबा सरवईया निवासी देसाई नगर मेलेकटी माधुपा चौक के पिछे चित्रा थाना बोरतालाब जिला भावनगनर गुजरात हॉल पी एस आई पुलिस थाना पालनपुर एसआईजी ब्रांच जिला बनासकांठा गुजरात की रिपोर्ट पर आरोपी सुरेश राजपुरोहित निवासी झालोर के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया है। जिसकी जांच एएसआई सुनिल विश्नोई कर रहे हैं। पुलिस ने घटना स्थल का निरीक्षण कर मौके से एक कारतूस खोल बरामद किया है।

पीछोला का जलस्तर 10 फीट पहुंचा

- बीते 24 घंटों में झील में दो से तीन इंच पानी की आवक हुई

उदयपुर, (निसं)। झीलों के शहर में दो दिन से बारिश का दौर थम गया है। बुधवार को तापमान में उमस के साथ ही सूरज की रोशनी भी जमीं पर गिरी। इधर, सीसारमा नदी से लगातार हो रही पानी की आवक के चलते पीछोला झील का जलस्तर 10 फीट पहुंच गया है। अब यह केवल एक फीट खाली है। हालांकि सोमवार को सीसारमा नदी जो 6 फीट के ऊपर बह रही थी व बारिश थमने से इसके फ्लो में लगातार कमी के बाद यह मंगलवार को दो फीट बह रही थी। बीते 24 घंटों में झील में दो से तीन इंच पानी की आवक हुई है।

केचमेंट में एक और अच्छी बारिश के साथ ही पीछोला का पानी लिंक नहर के जरिए फतहसागर में छोड़ दिया जाएगा। फतहसागर का जलस्तर 6 फीट 3 इंच है। कुल क्षमता 14 फीट से यह 7 फीट 9 इंच खाली है। मदार नहर से अभी इसमें आवक शुरू नहीं हुई है लेकिन सीसारमा का वेग बढ़ ने के साथ ही पीछोला झील के जल्द भरने पर इसमें भी लिंक नहर से आवक शुरू हो जाएगी। इधर, जिले में गुरूवार को भी सूखा ही बीता। जिले में कहीं भी बारिश के समाचार नहीं मिले। मौसम विभाग डबोक से मिली जानकारी के अनुसार शहर का अधिकतम तापमान 30.8 डिग्री रिकॉर्ड किया गया।

हादसे में एक श्रमिक की मौत, दो घायल

उदयपुर, (निसं)। नाई थाना क्षेत्र में कार ने दो बाइक को चपेट में ले लिया। हादसे में एक श्रमिक की मौत हो गई तथा दो श्रमिक घायल हो गए। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार को नाई थाना क्षेत्र खेरिया घाटे में कार ने दो बाइक को चपेट में ले लिया। हादसे में एक बाइक चालक नारूलाल (25) पुत्र गणेश निवासी छोटी उन्दरी तथा दूसरी बाइक पर सवार झाड़ोल हाल नयाखेड़ा निवासी बंशीलाल पूर्बिया एवं उदयलाल घायल हो गए, जिन्हें उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय में भर्ती करवाया, जहां नारू की मौत हो गई। नाई पुलिस थाने के हेड कांस्टेबल मंगेजाराम ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंपा। पूछताछ में पता चला कि अलसीगढ़ में मजदूरी करने के बाद नारू वापस बाइक पर अपने गांव लौट रहा था। इस दौरान एक बाइक पर बंशीलाल व दयालाल भी मजदूरी कर नयाखेड़ा लौट रहे थे, जहां पीछे से आई कार ने दोनों बाइक को चपेट में ले लिया था। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

कार्यालय नगरपालिका मण्डल नैनवॉं जिला बून्दी (राज0)

क्रमांक न.पा.नै./स्टोर/2025-26/1173 दिनांक :- 01.07.2025

-: अल्पकालीन वार्षिक ई-निविदा-सूचना 15/2025-26 :-

नगरपालिका नैनवॉं द्वारा व्यक्ति/फर्म/मैसर्स से निम्नांकित कार्य की ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा संबंधी समस्त विवरण को वेबसाईट www.sppp.rajasthan.nic.in WWW.EPROC.RAJASTHAN.GOVT.IN पर देखा/डाउनलोड किया जा सकता हैं। उक्त निविदा का NIB Code :- DLB2526A3258 हैं। कार्य का UBN No. निम्न प्रकार है।

1	DLB2526WSRC10183	2	DLB2526WSRC10184

राज.संवाद/सी/25/5733 अध्यक्ष नगर पालिका नैनवॉं अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका नैनवॉं

राजस्थान आवासन मण्डल

क्रमांक :- 241 दिनांक :- 08/07/2025

निविदा सूचना संख्या 02/2025-26

1. दौराई आवासीय योजना अजमेर में सैप्टिक टैंक का निर्माण कार्य 2. किशनगढ़ योजना में नाला सफाई, सडक, गड्ढे खुला क्षेत्र एवं डोर टू डोर कचरा संग्रहण तथा स्ट्रीट लाइट का कार्य (1 वर्ष) के लिए इच्छुक बोलीदाताओं से दिनांक 10.07.2025 से 19.07.2025 सायं 6.00 बजे तक ऑनलाईन/ऑफलाइन निविदा आमंत्रित की जाती है। जिसका विवरण मण्डल की वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in एवं https://rhb.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

यू.बी.एन. नं.:- RHB2526WSOB00097 और RHB2526WSOB00098

राज.संवाद/सी/25/5817 उप आवासन आयुक्त, वृत्त द्वितीय, जयपुर

कार्यालय पंचायत समिति तिजारा (खैरथल तिजारा)

क्रमांक-2447 दिनांक-07.07.2025

निविदा सूचना 06/2025-26

इस कार्यालय द्वारा वीडीएफ (ग्राम विकास सुविधा) योजनान्तर्गत निर्माण कार्य हेतू निविदा आमंत्रित की गई जिसने इच्छुक/विभाग में पंजीकृत फर्म शामिल हो सकती है निविदा प्रपत्र एवं शर्तो से संबंधित विस्तृत सूचना Sppp.rajasthan.gov.in एवं eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

NIB-ZAL2526A0707
UBN-ZAL2526WSOB01324, ZAL2526WSOB01325, ZAL2526WSOB01326, ZAL2526WSOB01327, ZAL2526WSOB01328, ZAL2526WSOB01329, ZAL2526WSOB01330, ZAL2526WSOB01331, ZAL2526WSOB01332

विकास अधिकारी पंचायत समिति तिजारा

कार्यालय नगर परिषद, जालोर (राजस्थान)

क्रमांक : नपजा/विकास/2025-26/8260 दिनांक : 03.07.2025

:: ई-निविदा सूचना 01/2025-26 ::

यत् नगर परिषद जालोर द्वारा निम्नांकित स्थानों पर सिविल निर्माण कार्य हेतु उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदार एवं मान्यता प्राप्त यथा: नगर निगम/परिषद/पालिका एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग में पंजीकृत अनुभवी संवेदकों से निर्धारित प्रपत्रों में E-Procurement प्रकिया द्वारा ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा कार्य एवं ई-निविदाओं के संबंधित विवरण वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in डाउनलोड व अपलोड एवं www.sppp.rajasthan.gov.in से डाउनलोड किये जा सकते है।

S.N.	Work no.	NIB No.
1	12	DLB2526A3186

राज.संवाद/सी/25/5803 प्रशासक नगर परिषद, जालोर आयुक्त नगर परिषद, जालोर

कार्यालय नगर निगम, कोटा दक्षिण, राजस्थान

राजीव गांधी भवन, दशहरा मैदान, सी.ए.डी. सर्किल-कोटा
email :nnksouth@gmail.com, websites : www.urban,rajasthan.gov.in/nnks, Ph.: 0744-2502142

क्रमांक :- ननिको/दक्षिण/निर्माण/2025/403-417 दिनांक :-04.07.2025

ई-निविदा सूचना संख्या :22/2025-26

नगर निगम कोटा (उत्तर/दक्षिण) द्वारा विभिन्न अभियान्त्रिकी विभागों "A" एवं "AA" श्रेणी एवं नगर निगम कोटा (उत्तर/दक्षिण) में उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों सेनिम्नांकित कार्य हेतु कुल राशि 95.00 लाख रूपये की ऑन लाईन निविदायें दिनांक 05.07.2025 से दिनांक 14.07.2025 तक आमन्त्रित की जाती हैं। टेन्डर बेचे जाने, प्राप्त करने की तिथि व निविदा की शर्ते इत्यादि नगर निगम की वेबसाईट www.urban.rajasthan.gov.in/nnks http://sppp.raj.nic.in, http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती हैं।

क्र. सं.	कार्य का नाम	अनु. लागत (लाखों में)
2	नगर निगम कोटा दक्षिण के वार्ड संख्या 71 तलवण्डी सेक्टर 02 व 03 में आर.सी.सी. नाला निर्माण एवं विभिन्न स्थानो पर विभिन्न प्रकृति के सिविल निर्माण/मरम्मत कार्य। (पुनः निविदा)	95.00

NIB Code No.DLB2526A3226 UBN No.DLB2526WSOB10110

राज.संवाद/सी/25/5752 अधिशाषी अभियन्ता

कार्यालय नगरपालिका रामगंजमण्डी जिला-कोटा (राज0)

क्रमांक : न.पा.रा./2025/755 दिनांक 07.07.2025

ई-निविदा सूचना 06/2025-26

नगरपालिका रामगंजमंडी द्वारा कार्यो हेतु पालिका में पंजीकृत एवं विभागों में AA,A,B, Class एवं उपयुक्त श्रेणी संवेदको से लिफाफा पद्धति/ई-निविदा पद्धति से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य की निविदा बेचे जाने की दिनांक 09.07.2025 से 18.07.2025 एवं अपलोड करने की दिनांक 09.07.2025 से 18.07.2025 सांय 6 बजे तक। ई.एम.डी./ निविदा शुल्क/प्रोसेसिंग फीस प्राप्त करने की तिथि : 21.07.2025 समय प्रातः 11.00 बजे तक। तकनीकी बिड खोलने कि दिनांक 21.07.2025 को दोप. 2.00 बजे बाद रहेगी। वित्तीय बिड तकनीकी परीक्षण उपरांत खोली जावेगी। निविदा शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण http//sppp.raj.nic.in, http//eproc.rajasthan.gov.in देखी जा सकती है।

SR.NO	NIB	UBN
1	DLB2526A3298	DLB2526WSOB10302
2		DLB2526WSOB10300
3		DLB2526WSOB10301
4		DLB2526WSOB10299

राज.संवाद/सी/25/5801 अधिशाषी अधिकारी

Office of the Medical Superintendent

RUHS Hospital of Medical Sciences, Jaipur
Sector-11, Kumbha Marg, Pratap Nagar, Tonk Road, Jaipur -302033(Raj.)

No. :- F. ( ) RUHS HMS/Store/2025-26/6055 Date :- 05/07/2025

Notice Inviting e-Bids

Single Stage Two envelope Online bids (e-bids) are invited up to 02.00 pm of 25/07/2025 for Supply and Installation of Following Equipment/Items at Dept. of ENT, RUHS Hospital of Medical Sciences, Jaipur:

Sr. No.	Name of Equipment	Req. Qty.	Total Est. Cost in Rs.
1.	Coblation System	01	25,00,000.00
2.	Harmonic System (Ultrasonic Coagulation and Cutting Device)	01	20,00,000.00
3.	Trans Nasal Debrider	01	40,00,000.00
4.	Various Surgical Instruments Sets	As per List	10,00,000.00

Details may be seen in the Bidding Documents at the Website sppp.raj.nic.in, or eproc.rajasthan.gov.in.

UBN : CMS2526GLOB00053 to 55, CMS2526GSOB00056

Raj.Samwad/C/25/5773 Medical Superintendent, RUHS Hospital of Medical Sciences, Jaipur

कार्यालय नगर निगम जोधपुर उत्तर

Nagar Nigam Bhawan, Inside Poltechnic college campus, Residency Road, Jodhpur-342004

क्रमांक :-2522 दिनांक :- 03.07.2025

-:: वाहन पार्किंग ठेका ::-

-:: ई-नीलामी सूचना ::-

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर निगम जोधपुर, उत्तर द्वारा निम्न विवरण अनुसार ई-निलामी निम्नानुसार रखी गई है :-
UBN-DLB2526SSOB09943

क्र. स.	विवरण	ई-नीलामी धरोहर राशि	न्यूनतम सरकारी बोली	बोली प्रारम्भ करने की तिथि	बोली लगाने की अंतिम तिथि
01	सतारा प्लाजा के बाहर व डम्पिंग स्टेशन वाली रोड जोधपुर	60,500/- (साठ हजार पॉच सौ रूपये)	6,05,000/- (छःलाख पॉच हजार रूपये)	18.07.2025 सुबह 10:00 से	18.07.2025 शाम 6:00 बजे तक

01. नीलामी भागीदारी शुल्क 1000 /- रू प्रति पार्किंग प्रतिभागीदार नॉन रिफण्डेबल।
02. ई-नीलामी अमानत राशि व भागीदारी शुल्क जमा कराने की दिनांक 03.07.2025 प्रातः 10:00 से 18.07.2025 दोपहर 03:00 तक।
03. ई-नीलामी के अंतिम 15 मिनट में बोली आने पर ई-नीलामी समयवधि में प्रत्येक बार स्वत ही 30 मिनट की वृद्वि हो जायेगी।
04. किसी प्रकार की तकनीकी समस्या एंव जानकारी हेतु श्री रफीउदीन प्रोग्रामर मोबाईल नम्बर - 7014268186 एंव श्री अभिषेक गहलोत राजस्व अधिकारी मोबाईल नम्बर - 9251400686 सम्पर्क कर सकते है।

ई-नीलामी की प्रकिया विस्तृत शर्तो एंव पार्किंग कि जानकारी नगर निगम जोधपुर (उत्तर) की वेबसाईट http://www.lsg.rajasthan.gov.in/mcjn एवं lsgeauction.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

राज.संवाद/सी/25/5757 आयुक्त नगर निगम जोधपुर उत्तर

कार्यालय नगर परिषद बून्दी

क्रमांकः- 16357853 दिनांकः- 04.07.2025

-:: निविदा सूचना ::-

नगर परिषद बून्दी द्वारा जारी निविदा सं0: न.प.बू/निर्माण/2025-26/2178 दिनांक 03/07/2025 की निविदा दिनांक 04/07/2025 से दिनांक 18/07/2025 शायः 6.00 बजे तक ऑनलाईन विक्रय की जावेगी। निविदा दिनांक 21/07/2025 को 3.00 बजे तक प्राप्त की जावेगी तथा निविदा दिनांक 21/07/2025 को 04.00 बजे ऑनलाईन खोली जावेगी। विस्तृत शर्ते व विवरण निविदा sppp.rajasthan.gov.in/eproc.rajasthan.gov.in पर DLB2526WSOB09847 तथा कार्यालय समय मे किसी भी कार्यदिवस को नगर परिषद मे देखा जा सकता है।

राज.संवाद/सी/25/5705 आयुक्त नगर परिषद, बून्दी

Bureau of Investment Promotion

Udyog Bhawan, Tilak Marg, Jaipur

BIP/Info/487 Date :- 02/07/2025

Notice Inviting Bid

The Bids for procurement of Communication, Creative Design & Social Media Partner for the year 2025-27 for Bureau of Investment Promotion, Jaipur (a Government of Rajasthan undertaking) has been invited from interested bidders upto 2.00 PM of 29.07.2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement of portals: (http://eproc.rajasthan.gov.in) and (http://supp.raj.nic.in) of the State. UBN No.BIP2526SLOB00006

Raj.Samwad/C/25/5770 Commissioner (Inv. & NRIs)

कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति, सुमेरगंजमंडी

जिला बून्दी - (राजस्थान), E-mail : Kums.sumerga@rajasthan.gov.in

क्रमांक :- कृ.उ.म.स./मण्डी ई-निविदा/2025-26/181-192 दिनांक :- 26/06/2025

निविदा - सूचना

कृषि उपज मण्डी समिति सुमेरगंजमंडी (जिला बूंदी) में सुरक्षा व्यवस्था हेतु अनुभवी, सुस्थापित फर्मो से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्योरमेन्ट के माध्यम से ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	सेवा/कार्य का नाम	अनु. लागत (लाख रूपये)	MD. RISL शुल्क (रूपये) (डी.डी. अथवा बैंकर्स चैक)	निविदा शुल्क (रूपये)	प्रतिभूति राशि (लाख रूपये)	ऑनलाईन निविदा फार्म डाउनलोड करने की तिथि एवं समय (वेबसाईट पर)	ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि एवं समय (वेबसाईट पर)	ऑनलाईन निविदा से संबंधित दस्तावेज भौतिक रूप से कार्यालय में जमा कराने की अंतिम तिथि एवं समय	निविदा खोले जाने की तिथि व समय
1.	सुरक्षा व्यवस्था	15.00	500.00	1000	0.30	दिनांक 04.07.2025 को सायं 05:00 बजे से दिनांक 21.07.2025 को दोपहर 02:00 बजे तक	दिनांक 04.07.2025 को सायं 05:00 बजे से दिनांक 22.07.2025 को सायं 05:00 बजे तक	दिनांक 23.07.2025 को दोपहर 02:00 बजे	दिनांक 24.07.2025 को दोपहर 1:00 बजे

निविदा की विस्तृत सूचना एंव शर्ते कार्यालय के नोटिस बोर्ड, विभागीय वेबसाईट www.mandi.agricuture.rajasthan.gov.in व http://www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है। निविदा प्रपत्रों को वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड़ किया जा सकता है। इन निविदाओं में भाग लेने वाले सवेंदक निविदा को इलेक्ट्रोनिक फोर्मेट में वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in पर जमा करायें।

राज.संवाद/सी/25/5766 प्रशासक सचिव कृषि उपज मण्डी समिति, सु0 मंडी (जिला बूंदी)

डिजिटल अरेस्ट के नाम पर 23.56 लाख की ठगी, आरोपी गिरफ्तार

जयपुर। जयपुर में 75 वर्षीय एक बुजुर्ग को डिजिटल अरेस्ट का डर दिखाकर 23.56 लाख रुपये ठगने वाले अंतर्राज्यीय गिरोह का पर्दाफाश कर जयपुर साइबर क्राइम पुलिस ने इस मामले में मुख्य खाताधारक और तीन अन्य सहयोगियों को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था और अब पुलिस ने इस गैंग के मुख्य सरगना को भी कर्नाटक के बेंगलुरु शहर से दबोच लिया है। इस गिरोह का जाल देश के कई बड़े शहरों तक फैला था।

कैसे दिया डिजिटल अरेस्ट का झांसा:- एसपी साइबर क्राइम शांतनु कुमार ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि यह मामला 23 मई 2025 का है, जयपुर के एक बुजुर्ग को एक अज्ञात मोबाइल नंबर से कॉल आया। फोन करने वाले ने खुद को मुंबई पुलिस का अधिकारी संजय कुमार बताया और कहा कि उनके नाम से खरीदे गए एक मोबाइल का इस्तेमाल मनी लॉन्ड्रिंग और अश्लील मैसेज भेजने में हुआ है। उसने दावा किया कि उनके खाते में 2.80 करोड़ रुपये की मनी लॉन्ड्रिंग हुई है और उनके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी हो चुका है। ठग ने पीड़ित को डराने के लिए उसे कथित सीबीआई अधिकारी रोहित कुमार गुप्ता से बात करवाई और व्हाट्सएप वीडियो कॉल पर एक अदालत का नकली दृश्य भी दिखाया, जिसमें न्यायाधीश गिरफ्तारी के आदेश देते दिख रहे थे। इस जाल में फंसकर पीड़ित ने 26 मई 2025 को अपनी जीवन भर की कमाई में से 23.56 लाख रुपये ठगों द्वारा बताए गए बैंक खाते में ट्रांसफर कर दिए।

पुलिस की शानदार कार्रवाई:- साइबर क्राइम पुलिस थाना पर मामला दर्ज होते ही पुलिस अधीक्षक शांतनु कुमार और उप पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार मेवानी के नेतृत्व में जांच शुरू की गई। पुलिस ने तुरंत उस बैंक खाते का विश्लेषण किया, जिसमें पैसे ट्रांसफर हुए थे। यह जानकर हैरानी हुई कि 26 मई को एक ही दिन में उस खाते में विभिन्न व्यक्तियों से लगभग 3 करोड़ रुपये आए और तुरंत दूसरे खातों में भेज दिए गए।

पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए मुख्य खाताधारक सुरेश कुमार जाट उर्फ सुरेंद्र निवासी झुंझुनूं हाल दिल्ली को 30 मई को दिल्ली से गिरफ्तार कर लिया।

अंतर्राज्यीय नेटवर्क का खुलासा:- सुरेंद्र की गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने जांच आगे बढ़ाई और इस ठगी में शामिल उसके तीन और सहयोगियों को भी ढूंढ आरोपी ओमप्रकाश उर्फ नितेश निवासी श्रीगंगानगर वंशुल उर्फ आर्यन उर्फ प्रवीण निवासी चूरू और भूपेश फगेड़िया निवासी झुंझुनूं को

प्रोडक्शन वारंट पर सोनीपत जेल से गिरफ्तार कर लिया। अनुसन्धान के बाद तीनों को जेल भेज दिया गया।

इन चारों से पूछताछ में सामने आया कि इस गिरोह का सरगना सनी

- देशभर में फैला था ठगों का जाल, मुख्य खाताधारक पहले ही हो चुका है गिरफ्तार

कुमार है। आसूचना एक तकनीकी मदद से पुलिस टीम जिसमें उप निरीक्षक दामोदर, कांस्टेबल मनोज, सुरेश और किशन शामिल थे, ने आगे की जांच के लिए बेंगलुरु का रुख किया। वहां से सनी कुमार शर्मा पुत्र राजकिशोर शर्मा (26) निवासी हवेली खरगपुर मुंगेर बिहार हाल किराएदार बेंगलुरु, कर्नाटक को भी हिरासत में लिया। जिसे गिरफ्तार कर पूछताछ की जा रही है।

प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि इस गिरोह ने हरियाणा के चंडीगढ़, सोनीपत, दिल्ली के रोहिणी, बिहार के पटना और कर्नाटक के बेंगलुरु सहित कई शहरों में इसी तरह की डिजिटल अरेस्ट वारदातों को अंजाम दिया है, जहां इनसे संबंधित अन्य प्रकरण या शिकायतें दर्ज हैं। पुलिस अभिरक्षा में चल रहे अभियुक्त से गहन पूछताछ की जा रही है ताकि इस पूरे नेटवर्क का पर्दाफाश किया जा सके और ऐसे साइबर अपराधों पर लगाम लगाई जा सके।

पूर्व आरपीएससी सदस्य बाबूलाल कटारा का भांजा विजय कुमार डामोर गिरफ्तार

जयपुर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने कार्रवाई करते हुए उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 से सम्बन्धित दर्ज प्रकरण में पूर्व आरपीएससी सदस्य बाबूलाल कटारा का भांजा विजय कुमार डामोर को गिरफ्तार किया है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एटीएस और एसओजी वीके सिंह ने बताया कि एसओजी ने कार्रवाई करते हुए उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 से सम्बन्धित दर्ज प्रकरण में पूर्व आरपीएससी सदस्य बाबूलाल कटारा का भांजा विजय कुमार डामोर निवासी डूंगरपुर जिला डूंगरपुर को गिरफ्तार किया है। जो पूर्व आरपीएससी सदस्य बाबूलाल कटारा के अजमेर स्थित राजकीय निवास पर उनके निवास पर रहता था। आरोपित विजय कुमार डामोर ने उप निरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 में आवेदन किया था। जहां तत्कालीन आरपीएससी सदस्य बाबूलाल कटारा के पास उप निरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 की होने वाली लिखित परीक्षा के प्रश्न पत्रों में उत्तर कुंजी तैयार करवाने की जिम्मेदारी थी। आरोपित बाबूलाल कटारा ने पुलिस उप निरीक्षक भर्ती

- उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा मामला में विजय कुमार डामोर से एक लाईनदार रजिस्टर में तीनो दिवस के प्रश्न उत्तरों की नकल करवाई

परीक्षा 2021 की लिखित परीक्षा से करीब 35 दिन पूर्व तीनों दिवस की लिखित परीक्षा के प्रश्न उत्तर पेपर सेट अपने सरकारी आवास पर लेकर आये एवं आरोपित विजय कुमार डामोर से एक लाईनदार रजिस्टर में तीनो दिवस के प्रश्न उत्तरों की नकल करवाई तथा उक्त रजिस्टर की अन्य प्रतियां तैयार करवाकर अन्य आरोपियों को दी।

वहीं मूल रजिस्टर उप निरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 की लिखित परीक्षा की तैयारी करने के लिये आरोपित विजय कुमार डामोर को दे दिया। जिससे तैयारी कर विजय कुमार डामोर ने पुलिस उप निरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 की लिखित परीक्षा दी। जिसे जांच पड़ताल करते हुए गिरफ्तार किया गया है।

सार-समाचार

डॉक्टर्स म्यूजिक प्रीमियर लीग सीजन 4 के ऑडिशन सम्पन्न

जयपुर। मेडिकोज सोशल एंड वेलफेयर सोसाइटी के द्वारा चिकित्सकों के लिए गायन प्रतियोगिता डॉक्टर्स म्यूजिक प्रीमियर लीग सीजन 4 का आयोजन किया जा रहा है ।प्रतियोगिता के संयोजक डॉ संदीप निझावन ने बताया कि डी. एम.पी.एल. के चौथे संस्करण का ऑडिशन राउंड जेएमए सभागार में सम्पन्न हुआ। डॉक्टर्स ने बरखा के इस मौसम में बूँदों के संगीत पर अपने गीतों से फुलवारी खिलाई। लीग चेयरमैन डॉ संजीव गुप्ता ने बताया कि ऑडिशन के निर्णायक डॉ वंदना खुराना ,डॉ प्रतिष्ठा परीक ,डॉ सत्यवती शर्मा ,डॉ नीलम सैन,पं हेमन्त भट्ट व दीपक माथुर थे । लीग ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेटरी डॉ अनिल यादव ने इस प्रतियोगिता के अगले कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए बताया कि दिनांक 25 से 27 जुलाई को डी.एम. पी.एल. का टीम इवेंट राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर जयपुर में आयोजित किया जाएगा। लीग चीफ कॉर्डिनेटर डॉ रवींद्र सिसोदिया ने बताया कि टीमें बनाने के लिए गायकों का ऑक्शन दिनांक 13 जुलाई को आयोजित किया जाएगा जिसमें आठ फ्रेंचाइज़ी हॉस्पिटल्स, वर्चुअल बोली के माध्यम से अपनी-अपनी टीमों का चुनाव करेंगे। चीफ कोर्डिनेटर डॉ हर्षुल टाक ने जानकारी दी कि प्रतियोगिता के दौरान एकल जुगलबंदी, लाइमलाइट राउंड , दबंग व मलंग परफॉर्मेंस जैसे कई रोचक प्रारूप/फॉर्मेट देखने को मिलेंगे।

अब धान की फसल को मिलेगा डबल सुरक्षा कवच

जयपुर। धान की फसल के सबसे नाज़ुक समय में जब कीट हमला करते हैं, तो किसान की पूरी मेहनत पर पानी फिरने की नौबत आ जाती है। लेकिन, अब इस मुश्किल से निपटने के लिए कोर्टेवा एग्रीसाइंस ने डेलाडैक्सिन नाम की एक दमदार कीटनाशक दवा लॉन्च की है, जो खास तौर पर ब्राउन प्लांटहॉपर (बीपीएच) और स्टेम बोरर जैसे कीटों से निपटने में कारगर है डेलाडैक्सिन फसल के उस चरण पर असर दिखाता है, जब पौधा फूल देने की तैयारी में होता है और कीटों का हमला सबसे ज्यादा होता है। इसका डुअल-एक्शन फॉर्मूला पौधों को मुरझाने से बचाता है, बालियों के सही विकास में मदद करता है और दानों को सुरक्षित रखता है। इस दवा की एक खास बात यह है कि यह लंबे समय तक असर दिखाती है और इंटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट (आईपीएम) के अनुकूल भी है। यानि किसान जरूरत के मुताबिक दवा डाल सकते हैं और ज्यादा केमिकल के इस्तेमाल से बच सकते हैं, जिससे ज़मीन भी स्वस्थ रहती है। कोर्टेवा ने इसके साथ ही हिबीफेन नाम की दूसरी दवा भी लॉन्च की है, जो लीफ फोल्डर और बीपीएच जैसे कीटों को शुरुआती स्टेज पर रोकने में मदद करती है। कंपनी किसानों को फील्ड डेमो और ट्रेनिंग के जरिए इन दवाओं का सही इस्तेमाल भी सिखाएगी, ताकि फसल की रक्षा हो और मुनाफा भी बढ़े।

खरीदारी करने के लिए बाजार जा रहे चाचा-भतीजे को टैंकर ने मारी टक्कर

जयपुर। बगरू इलाके में बाइक से मंगलवार को खरीदारी करने के लिए बाजार जा रहे चाचा-भतीजे को गलत दिशा से आ रहे टैंकर ने टक्कर मार दी। इस हादसे में दोनों की मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया। मामले की जांच पड़ताल सड़क दुर्घटना थाना (पश्चिम)कर रही है। जांच अधिकारी एएसआई छोटे लाल ने बताया कि नागौर जिले के जायल हाल चिराटा गांव बगरू निवासी मुकेश (33) अपने भतीजे दीपेश (18) मंगलवार सुबह खरीदारी करने के लिए घर से बाइक लेकर बगरू बाजार की ओर से जा रहे थे। इसी दौरान बगरू रीको एरिया में सारण धर्मकांटा के पास ट्रक टैंकर ने गलत दिशा में आ रही उनकी बाइक को सामने से टक्कर मार दी। इस हादसे के बाद टैंकर को मौके पर छोड़कर चालक फरार हो गया। सूचना पर पुलिस तुरंत घटनास्थल पर पहुंची। पुलिस ने गंभीर घायल हालत में चाचा-भतीजे को बगरू सीएससी पहुंचाया। जहां चिकित्सकों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने टैंकर को जब्त कर चालक की तलाश शुरू कर दी है।

अधिशाषी अभियंता (सिविल) तीस हजार रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार

जयपुर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की भरतपुर टीम ने कार्रवाई करते हुए कार्यालय राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम जिला भरतपुर के अधिशाषी अभियंता (सिविल) अवनीश सोनी को 30 हजार रुपये (5 हजार रुपये भारतीय चलन मुद्रा एवं 25 हजार डमी रुपये) रिश्वत लेते गिरफ्तार किया गया है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि एसीबी भरतपुर टीम को परिवादी ने शिकायत दी कि संवेदक द्वारा किये गये कार्यों के बिल पास करने की एवज में अधिशाषी अभियंता (सिविल) अवनीश सोनी 15 हजार रुपये रिश्वत की मांग कर रहा है जिसका सत्यापन करवाया गया तो मांग को बढ़ाकर 36 हजार रुपये कर दिया गया है और 30 हजार फिर रुपये लेने पर सहमत हो गया है। जिस पर एसीबी भरतपुर टीम के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अमित सिंह के नेतृत्व में ट्रेप की कार्रवाई करते हुए अधिशाषी अभियंता (सिविल) अवनीश सोनी को 30 हजार रुपये (5 हजार रुपये भारतीय चलन मुद्रा एवं 25 हजार डमी रुपये) की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकडा गया है।

बीएसएनएल के सेंट्रलाइज्ड नेटवर्क ऑपरेशन सेंटर का उद्घाटन

जयपुर। भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) राजस्थान परिमंडल के मुख्य महाप्रबंधक विक्रम मालवीय जी के द्वारा बीएसएनएल राजस्थान सेंट्रलाइज्ड नेटवर्क ऑपरेशन सेंटर का उद्घाटन मिर्जा इस्माइल रोड स्थित बीएसएनएल कार्यालय, जयपुर में किया गया।

मुख्य महाप्रबंधक मालवीय ने अपने संबोधन में कहा कि, "यह केंद्र बीएसएनएल की सेवाओं को अधिक सशक्त, प्रभावशाली एवं उत्तरदायी बनाएगा। इससे तकनीकी समस्याओं का समाधान त्वरित रूप से किया जा सकेगा तथा उपभोक्ताओं को और भी बेहतर सेवा अनुभव प्राप्त होगा।"

इस अवसर पर जयपुर जिले के समस्त वरिष्ठ अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे। यह सेंट्रलाइज्ड नेटवर्क ऑपरेशन सेंटर बीएसएनएल राजस्थान के नेटवर्क इंफ्रास्ट्रक्चर की एकीकृत निगरानी, प्रबंधन एवं नियंत्रण हेतु स्थापित किया गया है। इस केंद्र की स्थापना से पूरे राज्य की प्रमुख दूरसंचार सेवाओं का संचालन अब एक ही स्थान से सुनिश्चित किया जा सकेगा।

सेंट्रलाइज्ड नेटवर्क ऑपरेशन सेंटर के माध्यम से बीएसएनएल न केवल नेटवर्क की रियल-टाइम मॉनिटरिंग कर सकेगा, बल्कि संभावित तकनीकी समस्याओं की पूर्व सूचना प्राप्त कर समय रहते समाधान भी सुनिश्चित कर पाएगा।

कार्यप्रणाली में सुधार के लिए फॉल्ट रेक्टिफिकेशन टीमों की जांच

जयपुर। जयपुर डिस्कॉम में विद्युत उपभोक्ताओं की 'नो करंट' से संबंधित शिकायतों के निवारण के लिए ऊर्जा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हीरालाल नागर के निर्देश पर एफआरटी (फॉल्ट रेक्टिफिकेशन टीम) की कार्यप्रणाली की मंगलवार को आकस्मिक जांच की गई। डिस्कॉम के 18 सर्किलों के 232 सब डिविजनों में कार्यरत 340 एफआरटी वाहनों की जांच के लिए मुख्यालय से अभियंताओं को एकाएक टास्क दे दिए गए। डिस्कॉम चेयरमैन सुआरती डोगरा के दिशा-निर्देशन में संचालित इस कार्यवाही को पूरी तरह गोपनीय रखा गया। वरिष्ठ अधिकारियों के वॉट्सएप ग्रुप पर प्रातः 10 बजकर 36 मिनट पर संदेश के जरिए सभी को आकस्मिक निरीक्षण के निर्देश दिए गए।

अलग सब डिविजन के सहायक अभियंता को दी जिम्मेदारी:- प्रत्येक एफआरटी वाहन की जांच के लिए संबंधित सब डिविजन से अलग सब डिविजन के सहायक अभियंता को निरीक्षण की जिम्मेदारी दी गई। यह साफ हिदायत दी गई कि जांच के लिए

- जांच के लिए अभियंता दो घंटे के भीतर एफआरटी टीम की लोकेशन पर पहुंचें। गूगल शीट में भरकर दोपहर बाद तक जांच रिपोर्ट सौंपने के निर्देश दिए गए
- पहली बार सम्पूर्ण डिस्कॉम स्तर पर निरीक्षण किया गया है। जांच में सभी गाड़ियां संचालित मिली।

अभियंता दो घंटे के भीतर एफआरटी टीम की लोकेशन पर पहुंचें। गूगल शीट में भरकर दोपहर बाद तक जांच रिपोर्ट सौंपने के निर्देश दिए गए।

प्रत्येक एफआरटी वाहन में एक वाहन चालक, एक लाइनमैन तथा दो हैल्पर होते हैं। जयपुर डिस्कॉम ने एफआरटी व्यवस्था को कांट्रेक्ट पर दे रखा है। प्रत्येक टीम के साथ आवश्यक सुरक्षा उपकरण, प्रत्येक सदस्य की यूनिफॉर्म तथा परिचय पत्र के साथ उपस्थिति की जांच की गई।

डिस्कॉम स्तर पर पहली बार इतना व्यापक निरीक्षण:- जयपुर डिस्कॉम में उपभोक्ता की बिजली सप्लाई से संबंधित शिकायतों को दूर करने की यह व्यवस्था 2016 से संचालित है। पहली बार सम्पूर्ण डिस्कॉम स्तर पर निरीक्षण किया गया है। जांच में सभी गाड़ियां संचालित मिली। लेकिन कई वाहनों में जीपीएस, सेफ्टी टूल्स, स्मार्ट फोन नहीं होने के साथ ही कार्मिकों के कम होने, यूनिफॉर्म में नहीं होने की कमियां पाई गई हैं। डिस्कॉम्स चेयरमैन सुआरती डोगरा ने बताया कि उपभोक्ताओं को बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए यह निरीक्षण किया गया है। जो कमियां मिली हैं, उनके लिए संबंधित सेवा प्रदाता कंपनी को नोटिस देकर पेनल्टी लगाई जाएगी।

60 वर्ष पुराना भूमि विवाद हल

जयपुर। राज्य सरकार द्वारा आयोजित पण्डित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा- 2025 के अन्तर्गत ग्राम पंचायत पँवालिया के ग्राम जयसिंहपुरा उर्फ रूपवास में मंगलवार दिनांक 08.07.2025 को आयोजित शिविर में 73 बीघा कृषि भूमि को लेकर ग्रामवासी गोपाल, दयाल व हरजीराम वगैरह में लगभग 55-60 वर्षो से पारिवारिक विवाद चल रहा था, जिसे लेकर उक्त सभी कृषक अभियान में उपखण्ड अधिकारी सांगानेर हिम्मतसिंह के समक्ष प्रस्तुत हुए। मौके पर उपखण्ड अधिकारी तथा सरपंच पँवालिया रामराज चौधरी, भू.अ.निरीक्षक विशाल सिंहल तथा पटवारी हल्का राहुल गंगावत के प्रयास स्वरूप उक्त भूमि के विभाजन के लिए सहमति बनी।

सभी खातेदार सहमत हुए, जिसमे मौके पर ही सहमति विभाजन स्वीकृत कर राजस्व रिवार्ड में अमलदरामद किया गया। इस अवसर पर समस्त खातेदारों द्वारा वर्षों पुराने विवाद के निस्तारण पर प्रशासन व पंचायत को धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का सभी परिवादियों ने हृदय से आभार व्यक्त किया।

विद्यार्थी जागरुकता कार्यक्रम का किया आयोजन

जयपुर। राजस्थान नगरीय आधारभूत विकास परियोजना के अधिशाषी अभियंता पुरषोत्तम के निर्देशानुसार मंगलवार को गायत्री कॉन्वेंट स्कूल में विद्यार्थी जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया । जिसमें सामुदायिक जागरूकता एवं जन सहभागिता इकाई की ए एस डी कृष्णा सैनी ने विद्यार्थियों को बताया कि घरों के सेप्टिक टैंकों से निकलने वाला मल-जल को टैंकों में भरकर शहर से बाहर प्रतापपुरा में बन चुके एफ.एस.टी.पी प्लांट में ले जाया जाएगा। वहां इसको ट्रीट कर खाद बनाया जाएगा तथा खेती में उपयोग लिया जाएगा। सेप्टिक टैंकों में जमा मल-जल से जो गंदगी होती थी उससे निजात मिलेगी। पर्यावरण स्वच्छ रहेगा। साथ ही एफ एस टी पी प्लांट के टोल फ्री नंबर 18001804891 के बारे में जानकारी दी। इसके साथ ही व्यक्तिगत स्वच्छता एवं साफ़ सफ़ाई के बारे में जागरूक किया।

केंद्रीय सहकारी बैंको को बकाया ब्याज के 765.54 करोड़ भुगतान की रखी माँग

जयपुर। ऑल राजस्थान कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज यूनियन व ऑफ़िसर्स एसोसिएशन के प्रांतीय महासचिव सहकार नेता सूरज भान सिंह आमेरा के नेतृत्व में यूनियन के प्रतिनिधिमंडल ने नव नियुक्त प्रमुख शासन सचिव वित्त वैभव गलारिया से मुलाक़ात की , डेलीगेशन में आमेरा के साथ सौरभ प्रजापत विकास जांगड़ा पलाश कोचर मुकेश पीपलीवाल संगठन पदाधिकारी रहे ।

आमेरा ने वित्त सचिव से पिछले 16वे वेतन समझौते के तहत बैंक कार्मिको को देय जेएआईआईबी सीएआईआईबी योग्यता पर वेतन वृद्धि का लंबित लाभ बहाल करने , पिछली दो किसान ऋण माफ़ी योजना के बकाया ब्याज के 765.54करोड़ रुपये 29 केंद्रीय सहकारी बैंकों को भुगतान की माँग रखी , साथ ही बजट घोषणा के 25000करोड़ रुपये ब्याजमुक्त

सहकार नेता आमेरा ने प्रमुख शासन सचिव वित्त वैभव गेलारिया से मुलाक़ात की।

फ़सली ऋण 2.5 हज़ार करोड़ गोपालन ऋण वितरण व 200करोड़ रुपये दीर्घकालीन ऋण वितरण के लिए केंद्रीय सहकारी बैंकों को समुचित वित्तीय सहायता व धन उपलब्ध करवाने की माँग रखी , सीसीबी के पास राज्य सरकार की बजट घोषणा की पालना में ऋण वितरण के लिए आर्थिक संसाधन धन उपलब्ध ही नहीं है । सहकारी बैंकों की आर्थिक स्थिति सरकारी घोषणा की पालना में कमजोर हो रही है जिसके लिए सरकार से वित्तीय मदद की जरुरत है । वित्त सचिव ने सभी मुद्दों को दिखाने का आश्वाशन दिया ।

शिक्षक भर्ती पेपर लीक मामले में ढाका को जमानत नहीं

जयपुर। सीबीआई मामलों की विशेष अदालत क्रम-3, महानगर प्रथम ने द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2022 पेपर लीक से जुडे मामले में आरोपी ओमप्रकाश ढाका को जमानत देने से इनकार कर दिया है।

पीठासीन अधिकारी खगेन्द्र कुमार शर्मा ने अपने आदेश में कहा कि आरोपी पर पेपर लीक के कई प्रकरण दर्ज हुए हैं। वहीं एसओजी ने उस पर 75 हजार रुपए का ईनाम भी घोषित किया था। पिछले कुछ सालों में सरकारी भर्तियों के पेपर लीक संगठित गिरोह के माध्यम से किए जा रहे हैं। जिसके चलते काबिल और हकदार नौजवान नौकरी से वंचित हो रहे हैं। ऐसे में आरोपी को जमानत पर रिहा नहीं किया जा सकता।

जमानत प्रार्थना पत्र में कहा गया कि एसओजी के पास प्रार्थी के खिलाफ कोई ठोस साक्ष्य नहीं है। उससे पूछताछ की भी कोई आवश्यकता नहीं है। प्रकरण में कई अन्य आरोपी अधीनस्थ अदालत से ही जमानत पर रिहा हो चुके हैं। वहीं उसके खिलाफ दर्ज आधा दर्जन मामलों में से दो प्रकरणों में वह दोषमुक्त हो चुका है। वह नौजवान व्यक्ति है और गत जनवरी माह से जेल में बंद है। उसके जेल में अन्य कुख्यात अपराधियों के साथ रहने से उसके व्यक्तित्व पर विपरीत प्रभाव पडेगा। ऐसे में उसे जमानत पर रिहा किया जाए। जिसका विरोध करते हुए विशेष लोक अभियोजक बीएस चौहान ने कहा कि पेपर लीक के दिन आरोपी मौके पर मौजूद था। इसके अलावा पेपर लीक को लेकर सोशल मीडिया पर हुई चैट भी एसओजी के पास है। घटना के बाद आरोपी ने जांच में असहयोग करने की मंशा से लंबी फरारी काटी और उस पर इनाम घोषित करना पडा। यदि उसे जमानत दी गई तो वह गवाहों को प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा यह जमानत लेकर फिर से फरार हो सकता है। ऐसे में उसे जमानत नहीं दी जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने आरोपी को जमानत पर रिहा करने से इनकार कर दिया है।

केबिनेट मंत्री कुमावत ने सरकारी आवास पर सुनी समस्याएं

जयपुर। राजस्थान सरकार के पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग के केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने कहा कि राज्य सरकार व मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा आमजन की परिवेदनाओं के निस्तारण के लिए पूरी तरह से संवेदनशील हैं।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री की मंशा है कि प्रदेश में अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति की समस्या का समाधान हो, इसके लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया है। इस दौरान प्राप्त होने वाली शिकायतों के निस्तारण के लिए कार्य किया जा रहा है। मंत्री कुमावत ने मंगलवार को सिविल लाइंस स्थित अपने सरकारी आवास पर जनसुनवाई के दौरान कहा कि सरकार की ओर से आमजन को राहत देने के लिए जनसुनवाई की व्यवस्था की गई है।

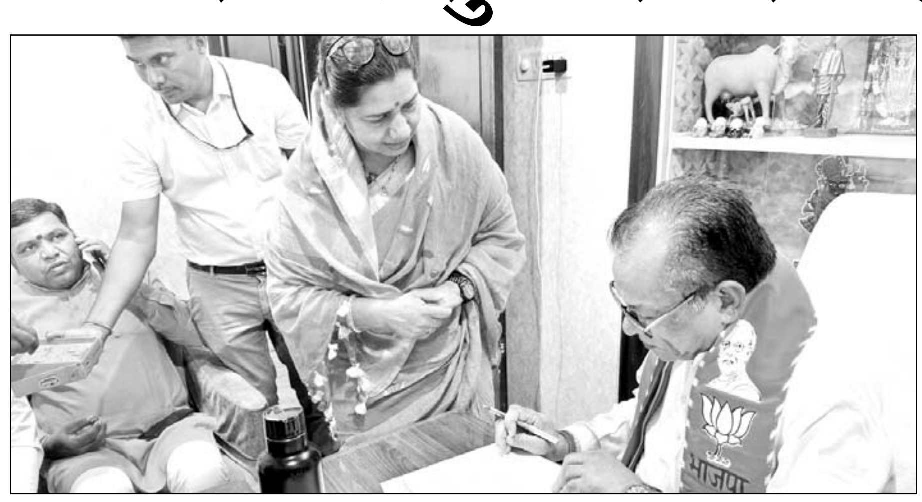

मंत्री कुमावत सिविल लाइंस स्थित अपने सरकारी आवास पर जनसुनवाई करते हुए।

जनसुनवाई के दौरान बड़ी संख्या में प्रदेशभर से लोग पहुंचे। जनसुनवाई में शिक्षा, चिकित्सा, जल आपूर्ति, पेंशन, सड़क निर्माण, प्रशासनिक सेवाओं सहित अनेक विषयों से जुड़ी शिकायतें सामने आईं। केबिनेट मंत्री ने हर आवेदक की बात गंभीरता से सुनी

- विधायकों ने भी इलाके समस्याओं से कराया अवगत

और मौके पर ही संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। कई प्रकरणों में तुरंत कार्रवाई की पहल कर दी गई। हर सोमवार, मंगलवार व बुधवार को नियमित रूप से होने वाली जनसुनवाई प्रदेश में संवेदनशील सुशासन की दिशा में मील का पत्थर साबित हो रही है। जनसुनवाई में भी बड़ी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया और समस्याओं के समाधान को लेकर आश्वस्त नजर आए। इस दौरान विधायक जयदीप बिहाणी, विधायक प्रताप सिंह सिंघवी एवं जयपुर जिला प्रमुख रमा देवी चोपड़ा ने मंत्री जोराराम कुमावत से शिष्टाचार भेंट की।

दिनभर उमस के बाद शाम को हुई तेज़ बारिश। कई दिनों के बाद लोगो को गर्मी से राहत मिली। जेएलएन मार्ग पर बारिश में गुजरते वाहन।

Sugar Cookies' Time!

Sugar cookies are far and away one of the simplest and most delicious cookies to ever be created. They are the hallmark of Christmas, with Santa ostensibly wolfing down tons of them every year in a deluge of milk. They are made to celebrate every occasion and are sold as part of charity drives everywhere. National Sugar Cookie Day celebrates this delicious little treat, and the big role it plays in all our lives. You just have to spend the day indulging in the consumption of sugar cookies. This couldn't be easier, as you can simply head to the store and pick up a big box of any number of varieties.

#CIVILISATIONS

When Greeks Minted Krishna and Balarama!

Around 180 BCE, an Indo-Greek king, named Agathocles of Bactria, minted coins that depicted Vasudeva Krishna and Samkarshana Balaramaa.

This isn't just a coin, it's a forgotten echo of civilizational crossover. In the swirl of history, where empires clashed and cultures intertwined, there are moments that stand out as extraordinary bridges between civilizations. One such moment came around 180 BCE, when an Indo-Greek king, named Agathocles of Bactria, minted coins that depicted none other than Vasudeva Krishna and Samkarshana Balarama, figures revered in the Indian subcontinent for millennia. Yes, you read that right. A Hellenistic ruler, far from the heartland of Bharat, issued coins bearing the images of Indian deities, and even had their names inscribed in Greek script.

A Rare Coincidence or Conscious Reverence?

These coins aren't simply pieces of ancient currency. They are powerful symbols of cross-cultural respect and recognition. On one side, Balarama is depicted holding his traditional mace (gada) and plough (hala). On the other side, Krishna, as Vasudeva, is shown holding a conch (shankha) and discus (chakra). Both are named in Greek inscriptions as 'Sankarsana' and 'Vasudeva,' a striking indication that their identities were not just copied visually but understood at a deeper level.

Who Was Agathocles?

Agathocles was one of the Indo-Greek rulers who governed regions of modern-day Afghanistan, Pakistan, and northern India after Alexander the Great's campaigns in the East. These kings, though of Greek origin, ruled over a culturally diverse population, including Buddhists, Hindus, and followers of local traditions. Their coins often reflect this blend, featuring Greek deities on one side and Indian symbols on the other, or even bilingual inscriptions in Greek and Brahmi. But the coins featuring Krishna and Balarama go a step further. They don't just acknowledge Indian culture, they celebrate it.

Why Does This Matter?

In a world that often frames history as a binary struggle of 'us vs them,' 'invader vs native,' this moment from antiquity stands as a reminder that cultural exchanges and mutual respect were not only possible but actually occurred, often more than we realize. The coin of Agathocles is a tangible, metal-forged testament that Indian deities were honoured even beyond Bharat's borders, not through conquest, but through civilizational dialogue. It challenges the simplistic narrative of ancient India being isolated or always under threat, and instead suggests a more nuanced history of shared reverence and admiration.

The Legacy of Fusion

These numismatic gems are now rare museum pieces, but they carry timeless lessons. They reflect a world where identity was fluid, where rulers adapted to local cultures, and where divine figures transcended borders. So, next time you think of Krishna and Balarama, remember, they were once immortalized not just in temples and scriptures, but on the coins of a Greek king who ruled far from Mathura, yet understood its gods.

Warming Your Cockles' The Army Way

While the primary purpose of the café remains military, it has also become a growing attraction for adventurous tourists. Ladakh, with its stunning landscapes, has long been a destination for trekkers, motorbikers, and photographers. The café provides an ideal spot for travelers to take a break, enjoy a hot drink, and chat with Army personnel, gaining insights into the region's history and culture.

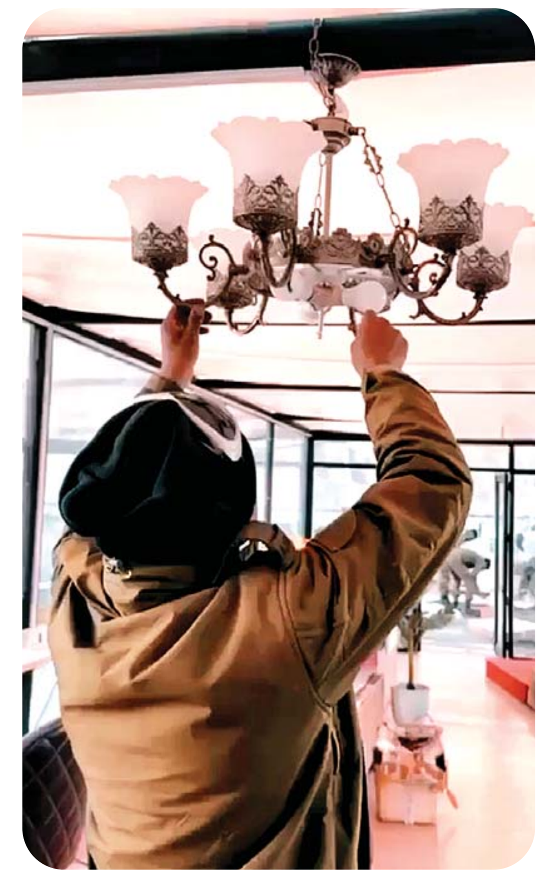

● Kshema Jatuhkarna

In the rugged, high-altitude terrain of Ladakh, where the majestic Himalayas and Karakoram ranges meet, the Indian Army has unveiled a truly remarkable creation, a café built on the decommissioned Bailey Bridge over the Shyok River. This café is not just a symbol of innovation and resilience but also a testament to the Army's continued presence and commitment in one of the most strategically significant and challenging regions in India.

The Bailey Bridge : A Strategic Icon

The Bailey Bridge has long been a crucial part of India's military infrastructure. Originally constructed in the 1960s during the Indo-China War, the bridge served as a vital link to remote areas, particularly in the Ladakh region, which borders both China and Pakistan. It was named after the British engineer Sir Donald Bailey, who designed the modular bridge system used extensively during World War II. The bridge, which crosses the Shyok River (a tributary of the mighty Indus), had been in operation for several decades. However, after years of service, the bridge was decommissioned due to wear and tear. But instead of letting the structure remain idle, the Indian Army chose to put its strategic location and structure to good use, transforming it into a café.

Location : A Café in the High Altitudes of Ladakh

Situated at a height of about 11,000 feet above sea level, the Shyok River Café sits in one of the most beautiful yet unforgiving landscapes on Earth. Ladakh, known for its barren landscapes, snow-covered peaks, and crystal-clear rivers, is also a region that has seen increased tourism in recent years. With its proximity to the Karakoram Range and Siachen Glacier, the café provides both a strategic stop for military personnel and an astonishing experience for adventurous tourists.

While the region is known for its remote and often harsh conditions, the café offers a warm, inviting space for trekkers, tourists, and soldiers alike. The breathtaking views of the river and surrounding mountains make it a perfect stop for those exploring the region's natural beauty.

A Symbol of Innovation and Hospitality

What makes this café extraordinary isn't just its location but also the manner in which it has been constructed and operated. The Indian Army, known for its ingenuity in remote and challenging environments, worked meticulously to transform the decommissioned Bailey Bridge into a fully functional, welcoming space.

Design: The structure has been carefully crafted using military-grade materials, ensuring that it is robust and resistant to the harsh elements of the region. The Army's engineering corps played a crucial role in refurbishing the bridge to accommodate the café, ensuring that the bridge could support the necessary infrastructure, including seating, kitchen equipment, and supplies.

Ambiance: Despite the cold winds and the daunting terrain, the café offers a cozy and unique setting. It serves hot beverages like tea, coffee, and traditional Sulaimani chai, along with snacks and local delicacies, making it an essential spot for those who wish to take a break and soak in the view. The rustic yet functional design gives it a charm that reflects both military efficiency and a welcoming atmosphere.

Community Engagement: The café has become a symbol of the Indian Army's engagement with the local community. The Army personnel who run the café interact with tourists, trekkers, and locals, helping to foster a sense of camaraderie and shared responsibility for the region's well-being.

Strategic Importance of the Café's Location

This café is not only a testament to the Indian Army's spirit of innovation and resourcefulness but also holds strategic significance. The Shyok River, which flows through the valley and meets the Indus, has always been an important geographical feature in the region. The bridge and its surrounding infrastructure have played a key role in connecting various military posts and providing logistical support.

The Bailey Bridge Café sits atop a critical military route and provides a symbolic reminder of the Army's enduring presence in Ladakh, an area of high geopolitical importance. Given the volatile border situation with both China and Pakistan, the Army's initiative also shows how even in such a remote region, the military's efforts go beyond mere defense. It focuses on community-building and improving morale, both for the armed forces and civilians.

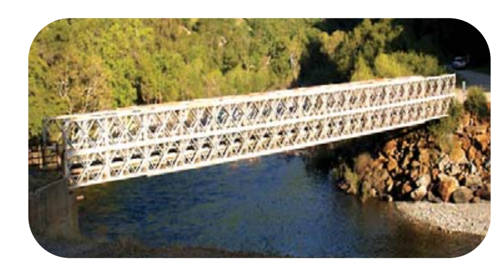

A Tourist Attraction

While the primary purpose of the café remains military, it has also become a growing attraction for adventurous tourists. Ladakh, with its stunning landscapes, has long been a destination for trekkers, motorbikers, and photographers. The café provides an ideal spot for travelers to take a break, enjoy a hot drink, and chat with Army personnel, gaining insights into the region's history and culture. Tourists visiting the area for popular destinations like Nubra Valley, Pangong Lake, or Hemis Monastery can stop by the Shyok River Café as part of their journey, making it a perfect addition to the growing tourism circuit in Ladakh. The unique factor of the café, coupled with its stunning location, ensures that it stands out as one of the most extraordinary cafés in India.

A Bridge Between Tradition and Modernity

The café built on the decommissioned Bailey Bridge is not only a testament to the Indian Army's resilience and innovation but also an example of how infrastructure can serve multiple purposes. What was once a purely military structure has now become a part of the region's tourism and culture, offering a unique fusion of modern military utility with traditional hospitality. This initiative also reflects the broader goals of the Indian Army, which has consistently worked to bridge the gap between India's remote regions and the rest of the country. From building roads in challenging terrains to fostering a sense of national unity through community engagement, the Army's contributions extend far beyond the battlefield.

Conclusion: An Ingenious Blend of Functionality and Hospitality

The Bailey Bridge Café is a one-of-a-kind creation, combining the military might of the Indian Army with the warmth of hospitality. Set against the backdrop of Ladakh's breathtaking beauty, this café not only serves as a vital stopover for soldiers but also introduces visitors to the wonders of high-altitude life. It's a living example of how the Army's creativity, dedication, and hospitality converge to create something truly special in the heart of the Himalayas.

Whether it's for a soldier on duty or a tourist passing through, the Shyok River Café represents much more than a place to enjoy a cup of tea, it's a symbol of India's resilience, ingenuity, and the warmth of its people.

rajeshsharma1049@gmail.com

#BREW WITH A VIEW

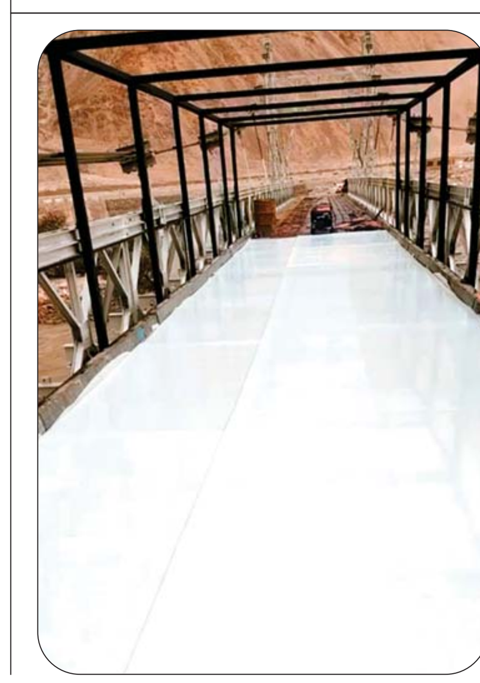

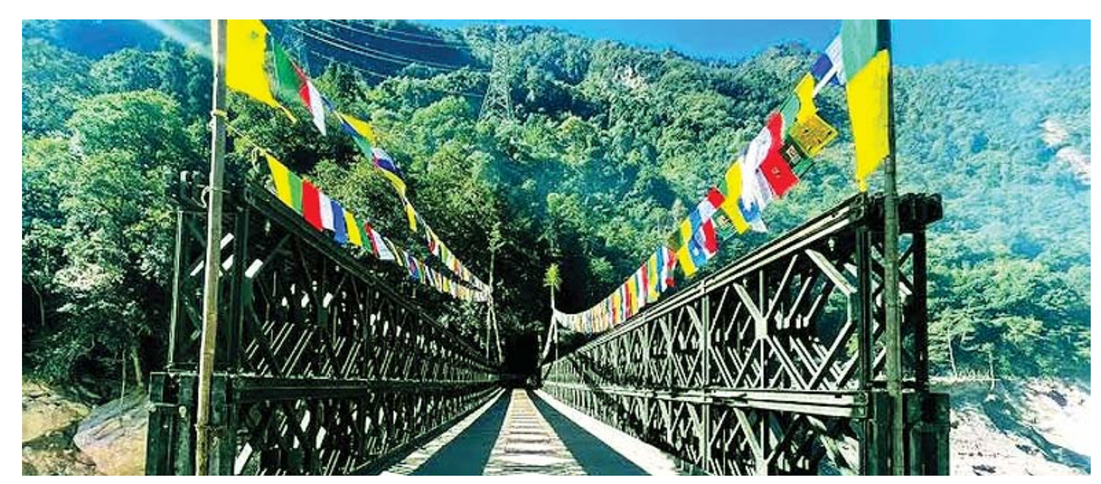

#ODDLIFE

Models and Mimics are marvels

The moth was found only 7 times in 2 expeditions, meaning your Thai holiday is unlikely to allow a look at this particular clearwing.

Mimicry is one of those evolutionary showpieces that has been used and researched for centuries. The Batesian classic theory has a mimic which is harmless and a model which often has a sting or some such offensive device for protection. The mimic has no defence but is protected anyway.

In this case, the Sessiid moths, known as clearwings, have a variety of stingless bees (Tetragonilla spp) and wasps to choose from. Each species model mimics a different hymenopteran, but often only a general phenotype. Our own mimic here is Heterosphecia pahangensis, a new species the researchers discovered! The moth was found only 7 times in 2 expeditions, meaning your Thai holiday is unlikely to allow a look at this particular clearwing, or indeed many others as the rainforests disappear. This novel individual mimics stingless bees. All the subjects of this video study were caught in horizontal flight as they performed mud-puddling behaviours near rivers in Malaysia and Thailand. The bees, bee mimics, wasps and wasp mimics such as Pyrophleps spp. all seemed to perform this puddling, probably as a physiological necessity.

The flight trajectories were digitised frame by frame to ensure that the head was followed correctly. Hovering was flight at less than 0.1 m.s-1, and was excluded from analyses but presented in longest hovering time data because both bees and bee mimics were characterised by this behaviour. They flew in a meandering fashion, keeping their distance from and much slower than the rapid and direct-flying wasps and their mimics.

Defying the definitions, as many models do, the relevant Tetragonilla bees here have no sting, but like other relatives, behave exactly as if they have, with a bite often given to add emphasis! Such behaviour is typical of the mimics, borrowing a trick from them. They have to cope with that load of mimicry, presumably by being predated more by savvy insectivores! A point of information is that no male wasp or bee can sting us, but we avoid them as we do the many mimics.

In conclusion, the researchers from the University of Gdansk (Poland), Macquarie (Australia) and UC Berkeley (US), as well as the Clearwing Foundation for Biodiversity in Warsaw, had to cope with a rarity of specimens. Most of these species are never seen, except occasionally as individuals. Hence, the stake-out of muddy puddles. The bird, spider and beetle predators observed possibly restrict the numbers, but human activity and loss of rainforest is likely to restrict these animals massively. The predators, however, seem to have created generalist mimics, whose flight pattern more resembles their models than their actual phenotype or even colour. The wasps, particularly, can hardly be seen by predators or ourselves, meaning both clearwings and wasps cannot be distinguished clearly.

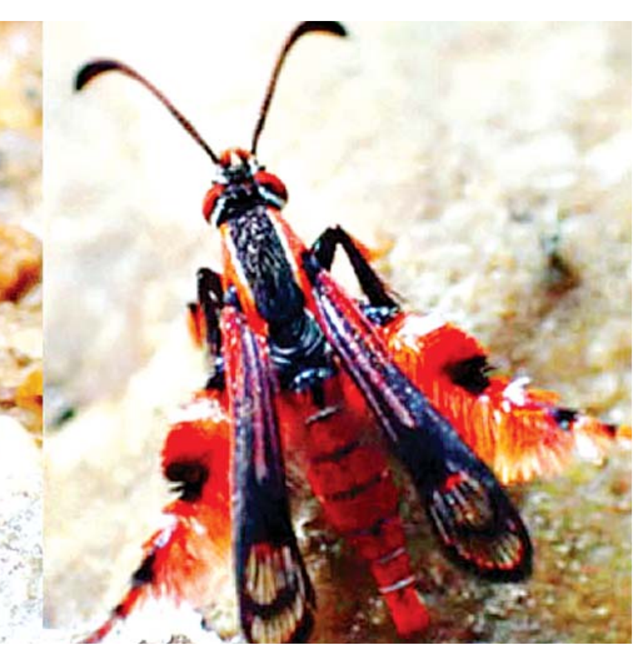

THE WALL

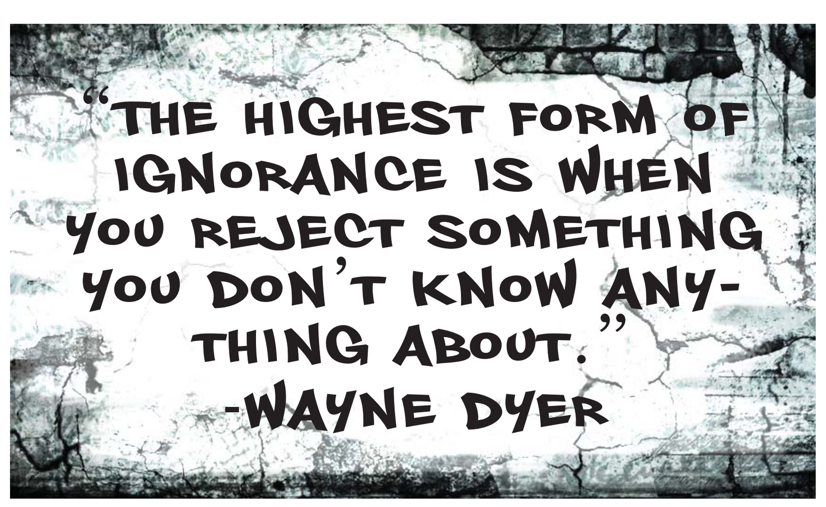

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

रेलवे लाइन का कार्य शुरू करने का किसानों ने किया विरोध

किसानों के विरोध जताने पर प्रशासन को बिना जमीन का कब्जा लिए ही वापिस लौटना पड़ा

खिरोड़, (निसं)। दुर्जनपुरा से गोठड़ा श्री सीमेंट कंपनी तक डाली जाने वाली रेलवे लाइन का कार्य शुरू करने के लिए संबंधित किसानों की जमीन को चिह्नित कर जमीन का कब्जा लेने प्रशासन मंगलवार सुबह नौ बजे बसावा गांव के खेतों में पहुंचा, मगर किसानों के विरोध जताने पर प्रशासन को बिना जमीन का कब्जा लिए ही वापिस लौटना पड़ा।

प्रशासन पुलिस जाब्ते के साथ बसावा गांव के खेतों में किसानों की अनुमति के बिना ही जबरन घुस गए और रेलवे लाइन डाले जाने का कार्य शुरू कर दिया, मगर आस-पड़ौस के किसानों ने एकत्रित होकर इस कार्य का विरोध किया। पुलिस प्रशासन का भी भारी विरोध किया गया। इस मामले में किसानों ने बताया कि हमारे खेतों में से रेलवे लाइन नहीं जाने देंगे। चाहे हमारी जान भी क्यों न चली जाए। सभी किसानों ने मिलकर एक स्वर में कहा कि जान दे देंगे, मगर हमारी जमीन में से रेलवे लाइन नहीं जाने देंगे। रेलवे लाइन निरस्त किसान संघर्ष समिति के अध्यक्ष रतनसिंह शेखावत के नेतृत्व में किसानों ने रेलवे लाइन का जमकर विरोध किया। किसानों ने प्रशासन की इस कार्यवाही को गैरकानूनी बताते हुए कहा कि किसानों की सहमति के बिना किसानों के खेतों में घुसना गलत है।

दुर्जनपुरा से गोठड़ा श्री सीमेंट कंपनी तक डाली जाने वाली रेलवे लाइन का किसानों ने विरोध किया।

- संबंधित किसानों की जमीन को चिह्नित कर जमीन का कब्जा लेने प्रशासन बसावा गांव के खेतों में पहुंचा
- सभी किसानों ने मिलकर एक स्वर में कहा कि जान दे देंगे, मगर हमारी जमीन में से रेलवे लाइन नहीं जाने देंगे

प्रशासन एवं भरपूर पुलिस जाब्ते के साथ खेतों में रेलवे लाइन डाले जाने का काम शुरू करने के लिए संबंधित ठेकेदार अपने साथ ट्रैक्टर-ट्रॉली में सामान लेकर आए और खेतों में काम करना शुरू कर दिया। मगर सैंकड़ों की संख्या में कृषक महिलाओं एवं पुरुषों ने इसका जमकर विरोध किया, जिसके चलते प्रशासन को वापस लौटना पड़ा।

किसान नेता विजेंद्र सिंह काजला ने कहा कि किसानों को डरा-धमका कर जबरन रेल लाइन डालने के लिए भूमि का अधिग्रहण करना सरकार और प्रशासन की कायराना हरकत है। उन्होंने कहा कि अगर सरकार को इन पूंजीपतियों के लिए रेल लाइन डालनी है तो किसानों को मार्केट रेट से चार से पांच गुना भूमिका मूल्य और किसानों को पुनर्वास की सुविधा दिए जाने व प्रभावित किसानों को सरकारी नौकरी देने एवं रेल लाइन के दोनों तरफ सड़क डालनी होगी। किसान नेता नरेंद्र कड़वाल ने कहा कि अगर किसानों की सहमति के बिना प्रशासन किसानों के खेतों में घुसा तो किसानों द्वारा प्रशासन के खिलाफ जमकर विरोध किया जाएगा।

रेलवे लाइन का विरोध प्रदर्शन करने वालों में राजेश दूत, शीशराम दूत, करणीराम, जगदीश प्रसाद, शिशुपाल, पंकज कुमार, मुकेश कुमार, राकेश कुमार, विक्की, महेश, भूपेश गुर्जर, मनोज मूंड, मामराज मूंड, माया देवी, सुनीता देवी, संतोष देवी, प्रभाती देवी, कमला देवी, परमेश्वरी देवी, सावित्री देवी, कमला देवी सहित सैंकड़ों लोग शामिल थे।

स्कूलों में व्यवसायिक शिक्षकों को नियुक्ति देने की मांग

अजमेर, (कासं)। स्कूलों में व्यवसायिक शिक्षकों की नियुक्ति की मांग को लेकर मंगलवार को वोकेशनल वेलफेयर ट्रेनर एसोसिएशन के बैनर तले व्यवसायिक शिक्षकों ने जिला कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन कर कलेक्टर लोकबंधु को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम मांग पत्र सौंपकर राहत देने की मांग की। प्रदर्शनकारी शिक्षकों का कहना रहा कि सरकार उन्हें बेरोजगार कर न केवल मानसिक व आर्थिक रूप से परेशान किया जा रहा है तथा स्कूली विद्यार्थियों के भविष्य के साथ भी खिलवाड़ किया जा रहा है। उन्होंने जल्द से जल्द नियुक्ति देने की मांग की।

- अजमेर कलेक्ट्रेट पर शिक्षकों ने प्रदर्शन कर कलेक्टर को मांग पत्र सौंपा

वोकेशनल वेलफेयर ट्रेनर एसोसिएशन के प्रदेश प्रवक्ता रामनारायण सिंह रावत ने बताया कि प्रदेश में केन्द्र सरकार के सहयोग से राज्य के 4 हजार 155 सरकारी स्कूलों में स्कूल शिक्षा परिषद समग्र शिक्षा के तहत व्यवसायिक शिक्षा प्रशिक्षण अलग-अलग सेक्टर के विभिन्न जॉब रोल के 16 व्यावसायिक ट्रेड संचालित की जा रही है। व्यवसायिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सरकारी स्कूलों के स्टूडेन्ट्स को कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर हुनर सिखाकर स्वरोजगार के लिए आत्मनिर्भर बनाना है। प्रदेश में स्कूल शिक्षा परिषद की ओर से शिक्षा सत्र 2024-25 में लगभग 2903 स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षकों की नियुक्ति जुलाई माह में की जानी थी, लेकिन शिक्षा विभाग की लापरवाही के चलते यह नियुक्ति मार्च 2025 में संभव नहीं हो पाई। व्यवसायिक शिक्षकों की नियुक्ति सैद्धांतिक व प्रायोगिक परीक्षा, साक्षात्कार व दस्तावेज सत्यापन द्वारा की गई।

उन्होंने बताया कि समय पर नियुक्ति नहीं दिए जाने से प्रदाताओं के एमओयू विभाग ने 16 जून 2025 को निरस्त कर दिए हैं, जिससे प्रशिक्षक बेरोजगार होने से मानसिक व आर्थिक रूप से परेशान है, साथ ही विद्यार्थियों के भविष्य पर भी प्रश्न चिन्ह लग गया है। विद्यार्थी व शिक्षकों की पीड़ा को देखते हुए बेरोजगार हुए व्यवसायिक शिक्षकों को पुन: विद्यालयों में नियोजित करने की मांग की है।

लाखों की नकदी हड़पी

उदयपुर, (निसं)। लाभ कमाने का झांसा देकर पीड़िता से लाखों की नकदी हड़पने वाले के खिलाफ पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया है।

- सायबर पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीडिता पूनम शर्मा पत्नीदमनलाल निवासी हिरणमगरी सेक्टर 5 काशीपुरी ने अज्ञात बदमाश के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें उसने बताया कि 26 जून को मेरे मोबाइल पर वाट्सएप पर मैसेज आया। पूछताछ करने उसने रोजगार करने की इच्छा के बारे में पूछताछ तो मैंने सहमती दी। कुछ ही देर बाद दूसरे व्यक्ति ने फोन कर मुझसे बातचीत की तथा उसने टास्क पूरा करने पर लाभ कमाने की बात कही। इस दौरान उसने युएस की प्रोपर्टी लाईक करने को कहा। इस पर मैंने उसके कहे अनुसार करना शुरू कर दिया। इस दौरान मैने 4 लाख 99 हजार 999 रूपये उसके कहे अनुसार खाते में जमा करवा दिए। कुछ समय बाद कोई मैसेज नहीं मिलने पर ठगी होने का आभास हुआ। इस पर सायबर पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया।

रीट प्रमाण पत्र का वितरण समय से पहले ही बंद करने पर हंगामा

उदयपुर, (कासं)। शहर के सूरजपोल स्थित राजकीय फतह सी.सै. स्कूल में मंगलवार को रीट पात्रता परीक्षा प्रमाण पत्र का वितरण समय से पहले ही बंद किए जाने पर हंगामा हो गया। अभ्यर्थी विरोध पर उतर आए और प्रिंसिपल चेतन पानेरी के रूम के बाहर प्रदर्शन करने लगे।

- अभ्यर्थी विरोध पर उतर आए और प्रिंसिपल के रूम के बाहर प्रदर्शन किया

अभ्यर्थियों का कहना था कि स्कूल प्रबंधन को स्कूल के निर्धारित समय में रीट प्रमाण पत्र वितरित करने थे, लेकिन स्टाफ एक घंटा पहले ही स्कूल से गायब हो गया। अभ्यर्थी घंटों तक इधर से उधर भटकते रहे, लेकिन उन्हें कोई जबाव देने वाला नहीं था। इस दौरान इस दौरान प्रिंसिपल चेतन पानेरी भी गायब थे। अभ्यर्थी उन्हें फोन करते रहे लेकिन उन्होंने कॉल नहीं उठाया। ऐसे में जब अभ्यर्थियों ने डीईओ को इसकी शिकायत की तो प्रिंसिपल तुरंत स्कूल पहुंचे। प्रिंसिपल चेतन पानेरी स्टाफ कम होने और इस वक्त प्रवेश व टीसी आदि की भार होने का कारण गिनाते रहे, जबकि स्कूल में पीटीआई सहित 65 जनों का स्टाफ है।

जानकारी के अनुसार सरकारी फतह स्कूल में रीट प्रमाण का वितरण सोमवार को शुरू हुआ था। पहले दिन भी समस्या आई लेकिन दूसरे दिन मंगलवार को हालात और खराब हो गए। यहां 60 से 70 किमी दूर कोटडा, सेमारी, खेरवाडा आदि ब्लॉक से महिला और पुरुष अभ्यर्थी आए थे, जिन्हें प्रमाण पत्र लेकर बस से वापस अपने घर जाना था लेकिन स्कूल प्रबंधन की लापरवही के कारण अभ्यर्थियों को खाली हाथ लौटना पड़ा। स्कूल को आठ हजार अभ्यर्थियों को रीट प्रमाण पत्र वितरित करने हैं। इसके लिए स्कूल प्रिंसिपल ने आठ काउंटर बनाए। प्रत्येक पर एक-एक हजार प्रमाण पत्र वितरित होने हैं। एक काउंटर पर दो-दो स्टाफ यानी कुल 16 स्टाफ को नियुक्त किया लेकिन वहां सिर्फ दो ही काउंटर लगे थे। बाकी काउंटर तो थे, लेकिन वहां कोई स्टाफ मौजूद नहीं था।

जमानत रद्द कराने के लिए कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया

नसीराबाद, (निसं)। मांगलियावास थाने में दर्ज एक हत्या के मामले में आरोपियों को नसीराबाद अपर जिला एवं सत्र न्यायालय द्वारा दी गई जमानत के खिलाफ कोर्ट में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया गया।

अपर लोक अभियोजक महेंद्र चौधरी ने बताया कि रामपुरा धोला दाता मसूदा निवासी लक्ष्मी ने 19 मई 2025 को मांगलियावास थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट के अनुसार, उसका पति फतेह सिंह ट्रेलर लेकर कोटपूतली से ब्यावर की ओर आ रहा था, तभी तबीजी के पास पिकअप और मोटरसाइकिल पर सवार कुछ लोगों ने ट्रेलर रुकवाया और शिवराज, रोहित, सत्यनारायण समेत अन्य ने फतेह सिंह के साथ गंभीर मारपीट की।

एक जमीन को दो बार बेचने का आरोप

सुलताना, (निसं)। चिड़ावा निवासी जवाहरलाल गुप्ता के खिलाफ सुलताना थाने में एक जमीन को दो बार बेचने का मामला दर्ज करवाया गया है।

पूर्व सरपंच हकीमुद्दीन के भाई इब्राहिम पुत्र हाजी सफी व्यापारी ने थाने में लिखित रिपोर्ट दर्ज करवाई है कि चिड़ावा निवासी जवाहरलाल गुप्ता ने वर्ष 2000 में उसे और उसके भाई को अपनी जमीन बेची थी। इसके तीन साल बाद 2003 में इसी जमीन का शेष हिस्सा भी इब्राहिम को बेच दिया था, लेकिन पिछले साल जवाहरलाल गुप्ता ने अपनी पूर्व में बेची गई जमीन का 187.88 वर्ग गज का प्लॉट बनवारी नाम के व्यक्ति को 29 अक्टूबर 2024 को फिर से बेच दिया, जबकि 20 जनवरी 2003 में जब जवाहरलाल गुप्ता ने अपनी जमीन में शेष रहे सभी आठ प्लॉट जब इब्राहिम को बेचे थे तो विक्रय पत्र में भी साफ अंकित था कि अब कोई जमीन शेष नहीं है। बावजूद इसके धोखाधड़ी से उसने जमीन हड़पने की नियत से 22 से 25 साल पहले बेची गई जमीन को फिर से बेच रहा है। पुलिस ने धोखाधड़ी की धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार जवाहरलाल गुप्ता व उसके पुत्र नवनीत गुप्ता, श्यामबिहारी गुप्ता तथा पत्नी सुशीला देवी समेत अन्य के खिलाफ फर्जी वसियत तैयार कर जमीन हड़पने का मामला सूरजगढ़ थाने में भी दर्ज है। इस मामले में सूरजगढ़ पुलिस ने हाईकोर्ट की फटकार के बाद करीब डेढ़ महीने पहले गुजरात से जवाहरलाल गुप्ता के पुत्र नवनीत गुप्ता को गिरफ्तार किया था, जो अभी भी जेल में है। निचली कोर्ट में नवनीत गुप्ता की जमानत याचिका खारिज हो चुकी है।

सूरजगढ़ में दर्ज जमीन हड़पने की नियत से बनाई गई फर्जी वसियत के मामले में जवाहरलाल गुप्ता का बेटा नवनीत डेढ़ महीने से जेल में है। तो पत्नी सुशीला देवी की अग्रिम जमानत एडीजे कोर्ट चिड़ावा ने खारिज कर दी थी। वहीं सूरजगढ़ थाने में दर्ज मामले में जवाहरलाल गुप्ता, उसके दोनों बेटों और पत्नी समेत परिवार के अन्य सदस्यों पर आरोप है। अभी जेल में बंद बेटे नवनीत की जमानत भी नहीं हो पाई है कि जवाहरलाल गुप्ता पर एक और मामला दर्ज हो गया है।

देश की पहली मोबाइल सर्जिकल रोबोटिक बस अजमेर पहुंची

अजमेर, (कासं)। देश की पहली मोबाइल सर्जिकल रोबोटिक बस मंगलवार को अजमेर पहुंची। यहां मेडिकल कॉलेज में मोबाइल रोबोटिक बस के तकनीकी कार्मिकों द्वारा जेएलएन मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर्स,

- जेएलएन मेडिकल कॉलेज में रोबोटिक सर्जिकल का लाइव डेमो और प्रशिक्षण दिया
- अजमेर से पहले मोबाइल सर्जिकल रोबोटिक बस जयपुर और जोधपुर में भी ट्रेनिंग दे चुकी है

मेडिकल स्टूडेंट सहित अन्य स्टाफ को लाइव डेमो और ट्रेनिंग के माध्यम से रोबोटिक सर्जिकल तकनीक का प्रशिक्षण दिया गया। जानकारी के अनुसार अजमेर से पहले यह बस जयपुर और जोधपुर में भी ट्रेनिंग दे चुकी है। इस अवसर पर मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ. अनिल सामरिया, अस्पताल अधीक्षक डॉ अरविंद खरे के साथ रोबोटिक सर्जिकल मशीन को तैयार करने वाले निजी कंपनी के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे।

जेएलएन मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ. अनिल सामरिया ने रोबोटिक सर्जरी के तकनीक के बारे में जानकारी ली।

जेएलएन मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अनिल सामरिया ने बताया कि मोबाइल टैली रोबोटिक सर्जरी यूनिट मंगलवार को अजमेर पहुंची, कॉलेज पहुंचने पर बड़ी संख्या में डॉक्टर, छात्रों और नागरिकों ने आधुनिक तकनीक का अनुभव किया। इस अवसर पर जेएलएन मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर्स, मेडिकल स्टूडेंट और अन्य स्टाफ को रोबोटिक सर्जिकल तकनीक का लाइव डेमो और ट्रेनिंग भी दी गई। यह बस सिर्फ तकनीक का प्रदर्शन नहीं बल्कि डॉक्टर को मशक्कत करने और छात्रों को प्रेरित करने का प्रयास है। डॉ. सामरिया ने कहा कि इस प्रकार की आधुनिक तकनीक के माध्यम से कॉलेज के हमारे छात्रों और फैकल्टी के लिए विश्व स्तरीय स्वदेशी सर्जिकल रोबोट सिस्टम को देखने और समझने का अवसर मिला है। विशेष रूप से छात्रों के लिए अनुभव शैक्षणिक और तकनीक खाई को बांटने में मददगार होगा। जल्दी जेएलएन अस्पताल में भी रोबोटिक सर्जरी शुरू होगी। इसे लेकर प्रयास किया जा रहे हैं।

डॉ. सामरिया ने कहा कि रोबोटिक सर्जरी को सर्जन रोबोट को उपयोग करके काम करता है। पहले सर्जरी के इंस्ट्रूमेंट डॉक्टर के हाथ में हुआ करते थे, लेकिन अब सभी इंस्ट्रूमेंट रोबोट के हाथ में होंगे, इसे अब सर्जन यूज कर सर्जरी कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि रोबोटिक सर्जरी से कई समस्याएं जो डॉक्टर और स्टाफ को आती थी, वह भी दूर होगी। पूर्ण सर्जरी में यह मरीज के लिए बेहतरीन है।

सीएनजी सप्लाई कंपनी एजीपी के साथ 1.06 करोड़ की धोखाधड़ी

जोधपुर, (कासं)। रातानाड़ा थाना क्षेत्र में एजीपी सीजीडी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के साथ कंपनी के ही एक पूर्व कर्मचारी व दो अन्य लोगों द्वारा करीब 1.06 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी का मामला रातानाड़ा थाने में दर्ज किया गया है। कंपनी के मुख्य प्रबंधक (मार्केटिंग) अंशुल गंगावत की रिपोर्ट पर दर्ज इस मामले में नवदुर्गा सीएनजी ऑटो गैस, उसके प्रोप्राइटर मनीष गहलोत, अनिल गहलोत और कंपनी के पूर्व कर्मचारी युवराज सिंह सोलंकी को आरोपी बनाया गया है।

- पूर्व कर्मचारियों और दो अन्य ने 554 फर्जी बिलों से चपत लगाई

रातानाड़ा सर्किट हाउस रोड पर स्थित ब्लू सिटी मॉल में कंपनी का ऑफिस है। इसके चीफ मैनेजर अंशुल गंगावत ने रातानाड़ा थाने में दी रिपोर्ट में बताया कि कंपनी ने जोधपुर में एलपीजी चालित ऑटो रिक्शा को सीएनजी में बदलने के लिए आरएफसी इंसेंटिव योजना चलाई थी। इसके तहत नवदुर्गा सीएनजी ऑटो गैस को ऑटो रिक्शा के कन्वर्जन का वर्क ऑर्डर दिया गया। कंपनी द्वारा अधिकृत रेट्रो फिटमेंट फैसिलिटेशन सेंटर्स द्वारा गाड़ी कन्वर्जन के बिल जारी किए जाते थे, जिन्हें वेरिफाई करने की जिम्मेदारी कंपनी के तत्कालीन सत्यापन अधिकारी युवराज सिंह सोलंकी की थी।

बाद में कुछ संदेह होने पर कंपनी के अधिकारियों ने अंदरूनी स्तर पर छानबीन की। इसमें पता चला कि फरवरी 2024 में नवदुर्गा सीएनजी ऑटो गैस द्वारा जमा किए गए बिलों में से 554 फर्जी और डुप्लीकेट बिल हैं। इन बिल से कंपनी को 1 करोड़ 6 लाख 2 हजार रुपए का नुकसान हुआ। जांच में यह भी सामने आया कि युवराज सिंह सोलंकी ने जान-बूझकर फर्जी बिलों को स्वीकृति दी और अन्य आरएफसी का डेटा भी नवदुर्गा सीएनजी ऑटो गैस को उपलब्ध कराया, जिससे कंपनी को और नुकसान पहुंचा।

गंगावत की रिपोर्ट के अनुसार शुरुआत में नवदुर्गा सीएनजी ऑटो गैस ने फर्जी या डुप्लीकेट बिलों के जरिए धोखाधड़ी से इनकार किया, लेकिन जब कंपनी के अफसरों ने इसके सबूत दिखाए तो आरोपियों ने धांधली स्वीकार करते हुए धोखाधड़ी से हड़पी गई राशि में से 91 लाख 62 हजार रुपए कंपनी को चुका दिए। वहीं शेष रही राशि 14 लाख 40 हजार रुपए अब तक नहीं चुकाई। इसके अलावा, आरोपी द्वारा दिया गया 7 लाख रुपए का एक चेक भी बैंक में जमा कराया, लेकिन वो भी बाउंस हो गया। इस संबंध में कंपनी की ओर से पुलिस को रिपोर्ट के साथ आरोपियों द्वारा किए गए फ्रॉड से संबंधित साक्ष्य भी सौंपे गए हैं। इस संबंध में रातानाड़ा थाने में दर्ज एफआईआर की जांच एसआई भंवरसिंह को सौंपी गई है।

बेटे की मौत का सदमा नहीं झेल सका पिता

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर जिले के बयाना सदर थाना के नया नगला गांव में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है, जहां बेटे की मौत का गम न झेल पाने पर एक पिता ने आत्महत्या कर ली। 45 वर्षीय गोपी गुर्जर ने खेत में एक पेड़ पर साफी से फंदा लगाकर फांसी लगा ली। परिजन उसे गंभीर हालत में अस्पताल लेकर पहुंचे, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। डॉक्टरों के अनुसार, गोपी की मौत अस्पताल लाने से पहले ही हो चुकी थी। घटना के बाद परिजन बिना पोस्टमार्टम कराए शव को लेकर घर चले गए। जब तक पुलिस अस्पताल पहुंची, तब तक शव वहां से जा चुका था। थाना सदर पुलिस के अनुसार, मृतक शराब का आदी था और बीते छह महीने पहले उसके बेटे की सड़क हादसे में मौत हो गई थी। तभी से वह मानसिक तनाव में चल रहा था। एएसआई दामोदर शर्मा ने बताया कि परिजन बिना सूचना के शव ले गए है। पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी हुई हैं।

ब्लाइंड मर्डर का पर्दाफाश, हत्या के आरोपी पति-पत्नी गिरफ्तार

पावटा, (निसं)। विराटनगर थाना क्षेत्र की तेवड़ी घाटी में सोमवार शाम को पुलिस को एक अज्ञात व्यक्ति की लाश मिली थी। इस ब्लाइंड मर्डर के मामले में पुलिस ने 24 घंटे में अज्ञात मृतक की पहचान कर हत्या के आरोपी डालचंद (45) पुत्र देवाराम बलाई व रोशनी देवी (35) पत्नी डालचंद निवासी ग्राम गुढ़ा चुरानी थाना थानागाजी जिला अलवर को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों ने उधारी की रकम चुकाने से बचने के लिए प्रहलाद उर्फ राजू पुत्र मूलचंद हंसराज गौड़ की हत्या की थी।

जिला पुलिस अधीक्षक कोटपुतली बहरोड़ राजन दुष्यंत ने बताया कि सोमवार शाम विराटनगर थाना क्षेत्र की तेवड़ी घाटी में मिले व्यक्ति के शव की घटना को गंभीरता से लेते हुए ब्लाइंड मर्डर की घटना के खुलासे व त्वरित कार्रवाई के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के निर्देशन व वृत्ताधिकारी विराट नगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन एवं विराट नगर थाना प्रभारी सोहनलाल के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा घटना स्थल का निरीक्षण करते हुए, आसूचना संकलन कर, सीसीटीवी फुटेजों को खंगालते हुए, साइबर तकनीकों का प्रयोग करते हुए पाया कि आरोपी डालचंद व उसकी पत्नी रोशनी देवी ग्राम गुढ़ा चुरानी थाना थानागाजी जिला अलवर में किराए पर दुकान लेकर टेलर का काम करते हैं, जिन्होंने अपने गांव के ही प्रहलाद उर्फ राजू पुत्र मूलचंद हंसराज गौड से कई बार में काफी रुपए उधार ले रखे थे।

हत्या के आरोपी दम्पती को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

- उधारी की रकम चुकाने से बचने के लिए पति-पत्नी ने पहाड़ी पर ले जाकर व्यक्ति की हत्या की थी
- गले में पहने हुए तौलिये से गला घोट कर हत्या की वारदात को अंजाम दिया था, शव को जंगल में फेंक कर फरार हो गये थे

वहीं उधार दी गई राशि मांगने व देने का दवाब बनाने पर दंपती ने मिलकर प्रहलाद उर्फ राजू की हत्या करने की साजिश रची। साजिश के तहत दोनों पति-पत्नी एक सप्ताह पहले स्कूटी से विराट नगर आए व विराट नगर क्षेत्र में सुनसान जगह की तलाश की एवं विराट नगर से मेड जाने वाले रोड पर एक चढ़ाई में हेंडपंप के सामने की एक जगह जहां से पहाड़ी पर रास्ता जा रहा है उसे साजिश को अंजाम देने के लिए चिन्हित किया। रैकी करने के बाद दोनों वापस अपने घर चले गए। छह जुलाई को दोनों दंपती अपनी स्कूटी से घटना स्थल पहुंचे व मृतक प्रहलाद उर्फ राजू को फोन कर बुलाया व अपनी स्कूटी पेड़ों में छिपाकर अपने पति को पूर्व नियोजित स्थान पहाड़ी की खाई में छुपा कर बिठा दिया।

उसी स्थान पर प्रहलाद उर्फ राजू को आरोपिया रोशनी देवी लेकर गई। जहां उसके साथ कुछ देर बैठकर बातचीत की व प्रहलाद उर्फ राजू को सही मौका देखकर उसी के गले में पहने हुए तौलिये से गला घोट कर हत्या की वारदात को अंजाम दिया व जल्दबाजी में सबको पहाड़ियों पर झाड़ियों में धक्का देकर फरार हो गए। घटना की गंभीरता को देखते हुए मौके पर एमओबी व एफएसएल टीम को बुलाकर घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया गया। कस्बा विराटनगर के सीसीटीवी कैमरो को चेक किया गया। मौके पर मिली मोटरसाइकिल के आधार पर अज्ञात मृतक की शिनाख्त की गई। घटनास्थल के निरीक्षण से अज्ञात आरोपियों ने अज्ञात व्यक्ति की तेवड़ी घाटी की पहाड़ी में हत्या कर शव को छिपाकर मोटरसाइकिल को मौके पर छोड़कर फरार होना पाए जाने पर अज्ञात अभियुक्तों की गहनता से तलाश अनुसंधान शुरू किया गया।

विराटनगर थाना प्रभारी सोहन लाल ने बताया कि मृतक के पुत्र खेमचंद ने विराटनगर थाना पुलिस में मामला दर्ज करवाया कि मेरे पिताजी प्रहलाद उर्फ राजू पुत्र मूलचंद हंसराज गौड ग्राम गुढ़ा चुरानी थाना थानागाजी जिला अलवर पंडिताई का काम करते हैं। पंडिताई का ही काम करने के लिए पांच जुलाई को मोटरसाइकिल से विराटनगर आए थे, जहां पांच जुलाई को पुलिस द्वारा सूचना मिली कि मेरे पिताजी की अज्ञात व्यक्तियों ने गला घोट कर हत्या कर लाश व मोटरसाइकिल को जंगल में पटक कर चले गए, जिस पर मामला दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ किया गया।

निर्माणाधीन मकान से 1750 किलो अवैध मछली बरामद

टोंक, (निसं)। जिला पुलिस अधीक्षक टोंक विकास सागवान के निर्देशन में वृताधिकारी देवली रामसिंह के नेतृत्व में थाना पुलिस देवली एवं मत्स्य विभाग की टीम ने अवैध मछली शिकार के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए प्रताप कॉलोनी में स्थित एक निर्माणाधीन मकान से 1750 किलो अवैध मछली बरामद की गई है।

देवली उपनिरीक्षक दिलीप सिंह ने बताया कि टीम को मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर रात्रि गश्त के दौरान देवली रिको एरिया स्थित प्रताप कॉलोनी में निर्माणाधीन एक मकान में मानसून में मछलियों को चोरी से लाकर बेचने की सूचना पर थाना पुलिस व मत्स्य विभाग की टीम ने छापेमारी कर मौके से 50 थर्माकोल के डिब्बों में बर्फ के साथ पैक की गई मछलियां बरामद की गई, जिन्हें जब्त मछलियां मत्स्य विभाग को सौंप दी। इस कार्रवाई में प्रकरण दर्ज कर आरोपियों के खिलाफ प्रजनन अवधि में अवैध रूप से मछली आखेट, अवैध संग्रहण व बिक्री किये जाने के विरुद्ध मत्स्य अधिनियम में प्रकरण पंजीबद्ध किया जाकर अनुसंधान जारी है।

आसाराम को हाईकोर्ट से फिर राहत मिली

जोधपुर, (कासं)। अपने ही आश्रम की नाबालिग छात्र से दुष्कर्म के आरोप में आजीवन कारावास की सजा काट रहे आसाराम बापू को राजस्थान हाईकोर्ट ने एक बार फिर राहत प्रदान की है।

हाईकोर्ट की डबल बैंच ने आसाराम की अंतरिम जमानत की अवधि को बढ़ाकर 12 अगस्त तक कर दिया है। यह फैसला आसाराम बापू की खराब सेहत और इलाज की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए लिया गया है। इससे पहले गुजरात हाईकोर्ट ने उन्हें सात जुलाई तक अंतरिम जमानत दी थी, जिसके बाद राजस्थान हाईकोर्ट ने भी नौ जुलाई तक अंतरिम जमानत को बढ़ाया था। अब इसे एक बार फिर आगे बढ़ाया गया है। आसाराम इस बार गुरु पूर्णिमा पर दस जुलाई को जेल से बाहर होगा। हालांकि हाईकोर्ट ने पहले की सुनवाई में उसके भक्तों से नहीं मिलने की शर्त को जमानत में जोड़ा था। इसलिए उसके भक्तों से मिलने की संभावना कम है। राजस्थान हाईकोर्ट से एक जुलाई को आंशिक राहत के रूप में नौ जुलाई तक की अंतरिम जमानत मिलने के बाद आसाराम जोधपुर आश्रम से निकल गया था।

चोरों ने मंदिर को निशाना बनाया

निवाई। शहर की कृष्णा कॉलोनी में स्थित दिव्य महादेव मंदिर में दिनदहाड़े चोरी हो गई। चोरी की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। थानाधिकारी रामजीलाल बैरवा ने बताया कि चोरी की सूचना पर एएसआई लक्ष्मण सिंह व कांस्टेबल मुकेश मौके पर पहुंचे और मंदिर परिसर का मौका मुआयना किया। मंदिर समिति के अध्यक्ष रामराय शर्मा, दिलीपसिंह शेखावत, लोकेश पारीक व बंटी शर्मा ने पुलिस को बताया कि चोर मंदिर में स्थित पानी की मोटर, राम झारा सहित तांबे व पीतल की प्लेटे सहित अन्य समान चुराकर ले गए। पुलिस ने चोरी का मामला दर्ज करके चोरों की तलाश शुरू कर दी है।

हादसे में बाइक सवार घायल

निवाई। राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित ललवाडी चोराहे के समीप अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार एक युवक गंभीररूप से घायल हो गया। घटना की सूचना पर थानाधिकारी रामजीलाल बैरवा मय पुलिस जाप्ते के साथ घटना स्थल पर पहुंचे और घायल को उप जिला अस्पताल में भर्ती करवाया। थानाधिकारी रामजीलाल बैरवा ने बताया कि मुकेशकुमार बैरवा पुत्र गोपीलाल बैरवा निवासी सांवत गढ जिला बूंदी बाइक पर सवार होकर जयपुर से बूंदी जा रहा था। इसी दौरान ललवाड़ी चोराहे के समीप किसी अज्ञात वाहन ने उसकी बाईक के टक्कर मार दी जिससे वह गंभीररूप से घायल हो गया। पुलिस ने घायल को राजकीय उप जिला अस्पताल निवाई में भर्ती करवाया। जिसकी चिन्ताजनक स्थिति होने पर चिकित्सकों ने उसे टोंक सआदत अस्पताल में भर्ती कर दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

कार्रवाई के लिए ज्ञापन सौपा

टोंक। निवाई क्षेत्र स्थित कृषि उपज मंडी में 14 व्यापरियों के साथ मंडी के ही व्यापारी घनश्याम शर्मा के द्वारा की गई 10 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी के सम्बंध में व्यापार महासंघ टोंक द्वारा जिला पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौपा। इस दौरान उन्होंने बताया कि कृषि उपज मंडी निवाई में धोखाधड़ी का मामला सामने आयो है, जिस पर पुलिस अधीक्षक ने वृताधिकारी निवाई को उचित कार्यवाही करने हेतु तथा पीड़ित व्यापरियों को राहत दिलाने हेतू निर्देशित किया गया।

स्कूल में पौधारोपण

निवाई। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सरसडी रामपुरा में हरियालों राजस्थान कार्यक्रम के तहत एक पेड़ मां के नाम अभियान को लेकर पौधारोपण किया गया। अध्यापक सत्यनारायण प्रजापति ने बताया कि विद्यालय में दर्जनों छायादार एवं फलदार पौधे लगाए गए। उन्होंने बताया कि विद्यालय में नव प्रवेशित नन्हे मुन्ने बच्चों द्वारा पौधारोपण किया गया एवं उन्हें प्रकृति के संरक्षण हेतु प्रेरित किया गया।

आम सूचना मेरा अभिभाष्य मोहम्मद असलमा पुत्र श्री कमरूददीन निवासी-ए-665, बन्धाबस्ती, नाहरी का नाका, शास्त्री नगर, जयपुर का है की ओर से यह आम सूचना के जरिये घोषणा करता है कि मेरे अभिभाष्य का पुत्र श्री मोहम्मद अन्जार एवं उसकी पत्नी श्रीमती खुशबू परवीन मेरे अभिभाष्य के कहने में नही है तथा वह गलत लोगों के बहकावे में आने के कारण मेरा अभिभाष्य अपने पुत्र व पुत्रवधु को अपनी चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल करता है तथा भविष्य में वह अपने पुत्र व पुत्रवधु से किसी प्रकार का सम्बन्ध नही रखेगा जो भी व्यक्ति मेरे अभिभाष्य के पुत्र व पुत्रवधु से किसी प्रकार का लेन देन करेगा उसके लिये वह स्वयं वो ही जिम्मेदार होगा। उसके लिये मेरा अभिभाष्य की कोई जिम्मेदारी नही होगी।
जयपुर (हरीश बागडी) एडवोकेट
दिनांक-8/7/25 मो.-9950442684

आम सूचना मैं, मेरे मुवक्किल ताराचन्द यादव उर्फ रामअवतार, आयु वर्ष, निवासी:-ढाणी, दतलिया की महरामपुर राजपूत, मोहनपुरा, कोटपुतली जिला जयपुर की ओर से आमजन को सूचित किया जाता है मेरे मुवक्किल के पौत्र नरेन्द्र कुमार यादव व पौत्रवधु ज्योति यादव व पड़ पौत्री जसनीत सिंह यादव जो कि मेरे मुवक्किल के साथ नही रहते है ना ही किसी प्रकार की सेवा सुश्रुषा आदि करते है, ना ही खैर खबर रखते है, साथ ही ना ही किसी प्रकार का व्यय आदि नही करते है, ना ही उनके प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व का वहन करते है एक तरह से किसी भी प्रकार का कोई लेना देना नही है मेरे मुवक्किल का उनके साथ कोई सामाजिक सरोकार नही है। इसलिए मेरे मुवक्किल अपनी चल व अचल सम्पत्तियो से जिसमे चल सम्पत्ति मे समस्त बैंक खाते सेविंग अकाउण्टस, शेयर्स, बॉण्ड तथा एल0आई0सी0 आदि सम्मिलित है व अचल सम्पत्ति मे से पटवार हल्का मोहनपुरा, तहसील कोटपुतली बहरोड़ में खाता संख्या 65 मे जमाबंदी मे दर्ज खसरा संख्या 218, 221, 229, 246, 248/1, 253, 257, 267, 270, 300/1, 302/1, 303/1 कुल किता 13 खसरो की कुल रकबा 4.6400 हैक्टेयर की कृषि भूमि व खाता संख्या 35 मे दर्ज 1.2900 हैक्टेयर भूमि का 1/12 हिस्सा स्थित है, सम्मिलित है से अपने पौत्र नरेन्द्र पोत्रवधु ज्योति यादव व पड़पौत्री जसनीत निवासीयान सालासर एनक्लेव, नन्द किशोरपुरा, मान्यवास तहसील सांगानेर, जयपुर, राजस्थान स्थाई निवासी:- ग्राम मोहनपुरा, कोटपुतली, जयपुर को बेदखल करते है तथा आज दिनांक से मेरे मुवक्किल की उपरोक्त वर्णित चल-अचल सम्पत्ति तथा भविष्य मे मेरे मुवक्किल द्वारा खरीदी / प्राप्त होने वाली सम्पत्तियो पर भी किसी प्रकार का हक अधिकार नही होगा, ना ही भविष्य मे उन सम्पत्तियो (चल-अचल सम्पत्ति) पर कोई अधिकार, उत्पन्न माना जायेगा ना ही मेरे मुवक्किल का कोई सामाजिक सरोकार सम्बंध इनसे रहेगा।
जयपुर (हेमन्त टांक) एडवोकेट
दिनांक-8/7/25 मो.-9352550501

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एक प्लाट संख्या 55 आवासीय योजना-गोविन्द नगर पूर्व, आमेर रोड, जयपुर में स्थित है, जिसका कुल क्षेत्रफल 300 वर्गगज़ है, यह कि उक्त सम्पत्ति के बाबत थापा देवी ने कार्यालय जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर में वांछित राशियां जमा करवाकर उक्त प्लाट का लीज डीड (पट्टा) स्वयं के नाम से जारी करवा लिया, तत्पश्चात उक्त सम्पत्ति के बाबत थापा देवी ने दिनांक 29.01.2021 को एक वसीयतनामा अपने भतीजे जगदीश प्रसाद गुप्ता के पक्ष में निष्पादित कर दिया। तत्पश्चात थापा देवी का स्वर्गवास दिनांक 30.09.2022 को हो गया। तत्पश्चात थापा देवी द्वारा लिखा गया वसीयतनामा के अनुसार जगदीश प्रसाद गुप्ता उक्त सम्पत्ति का एकमात्र मालिक, स्वामी, काबिज व अधिकारी है। यह कि जगदीश प्रसाद गुप्ता द्वारा उक्त सम्पत्ति को विक्रय किया जा रहा है। उक्त सम्पत्ति बाबत् यदि किसी भी व्यक्ति, संस्था, फर्म, बैंक, वित्तीय संस्था, सगे सम्बन्धी या अन्य कोई वारिसान, जनसाधारण, इत्यादि को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति, एतराज हो तो इस सूचना के प्रकाशन से सात दिवस की अवधि में मुझसे व्यक्तिगत रूप से मेरे निम्नलिखित ऑफिस पते पर अपनी आपत्ति / ऐतराजात मय असल दस्तावेज़ सहित व्यक्त करें, उक्त अवधि गुजर जाने के पश्चात् किसी प्रकार की कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी तथा उक्त अवधि के पश्चात इस आम सूचना बाबत् कोई भी आपत्ति/ ऐतराजात किसी भी न्यायालय में शून्य व निरस्त समझी जायेगी।
B.C.Shankla, Advocate, Mob.: 9829063273

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

चुनौतियां हमें मजबूत बनाती है, उन्हें स्वीकार करें : जयश्री पंडित

शाहपुरा । शाहपुरा राइडर्स ग्रुप के तत्वावधान में श्री कल्याण सिहं राजकीय विधालय शाहपुरा में अल्फा महिला राईड क्लब जयपुर का विधार्थी जीवन में हम कैसे श्रेष्ठता की ओर बढ विषय को लेकर आपसी संवाद का कार्यक्रम रखा गया।

जिसमें क्लब की अध्यक्ष जयश्री पंडित ने अपने उदबोधन में कहा कि चुनौतियां ही हमें मजबूत बनाती है ओर वे ही हमारी सफलता का रास्ता सुगम करती है। चुनौतियां ही हमें चुनौतियों से लड़ना सिखाती है। इसलिए किसी भी काम में या यात्रा में कोई भी परेशानी आये तो उससे घबराने के बजाय उसको कैसे सुलझाया जाय इस पर विचार होना चाहिए। जैसे किसी भी प्रकार के प्रश्न का उत्तर है उसी प्रकार हर समस्या का समाधान भी है।

बस हम में धैर्य और हमारे विचारों में सकारात्मकता होनी चाहिए। इस

विद्यार्थी जीवन में हम कैसे श्रेष्ठता की ओर बढे विषय पर संवाद का कार्यक्रम हुआ।

अवसर पर श्री कल्याण सिहं राजकीय विधालय शाहपुरा के प्रधानाचार्य रूडमल कपूरिया ने कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि देश भर में बाइक से यात्रा करने वाली अल्फा महिला राईड क्लब जयपुर की महिला शक्ति बच्चों से रूबरू होने के लिए उपस्थित है। इसके लिए शाहपुरा राइडर्स ग्रुप के संरक्षक रामस्वरूप रावतसरे एवं अध्यक्ष उमेश जांगिड़ का बहुत बहुत आभार। कपूरिया ने कहा कि बच्चों के सर्वांगिण विकास के लिए जरूरी है कि

> ■ चुनौतियां ही हमें चुनौतियों से लड़ना सिखाती है। इसलिए किसी भी काम में या यात्रा में कोई भी परेशानी आये तो उससे घबराने के बजाय उसको कैसे सुलझाया जाये इस पर विचार होना चाहिए

उन्हें हर उस क्षैत्र से रूबरू कराया जाय। जिसका उसे आने वाले समय में सामना करना पड़ेगा।

उन्हें पूर्ण विश्वास है कि आज का यह कार्यक्रम बच्चों के साथ साथ हम सब के लिए उपयोगी साबित होगा।

साढ़े 3 घंटे बिजली रहेगी बंद

निवाई। बुधवार को नगर पालिका क्षेत्र में साढे 3 घंटे विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी।

कनिष्ठ अभियंता लक्की गोठवाल ने बताया कि 132 केवी जीएसएस पर मरम्मत कार्य के चलते 33 केवी फीडर की विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। इसकी वजह से नगर पालिका के संपूर्ण क्षेत्र व औद्योगिक क्षेत्र में सुबह 7 से 10:30 बजे तक विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी।

भरतपुर में आरएलडी के प्रदेश स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन की तैयारी

> ■ भरतपुर से सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता सम्मेलन में लेंगे भाग

भरतपुर (निस)। राष्ट्रीय लोक दल के महासचिव एवं विधायक डॉ. सुभाष गर्ग के मुख्य आतिथ्य तथा जिला अध्यक्ष संतोष फौजदार की अध्यक्षता में मंगलवार को भरतपुर में राष्ट्रीय लोकदल के कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित हुई। जिसमें आगामी 11 जुलाई को जयपुर के बिरला ऑडिटोरियम में आयोजित होने वाले कार्यकर्ता सम्मेलन की रूपरेखा तैयार की गई।

महासचिव डॉ. गर्ग ने बताया कि प्रदेश स्तरीय सम्मेलन राष्ट्रीय लोकदल के अध्यक्ष जयंत चौधरी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित होगा। कार्यक्रम को प्रदेश प्रभारी व महासचिव मलूक नागर, संगठन महासचिव त्रिलोक त्यागी एवं प्रदेश अध्यक्ष जोगिंदर अवाना भी संबोधित करेंगे।

उन्होंने बताया कि बिरला ऑडिटोरियम में आयोजित होने वाले कार्यकर्ता सम्मेलन में भाग लेने के लिए भरतपुर से सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता 11 जुलाई को प्रात: 6 बजे जयपुर के लिये रवाना होंगे और 10 बजे बिरला ऑडिटोरियम पहुंचकर कार्यक्रम में शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि इसके लिए सभी कार्यकर्ताओं को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गई है।

डॉ. गर्ग ने बताया कि जयपुर में आयोजित होने वाले कार्यकर्ता सम्मेलन में संगठन की मजबूती और उसके विस्तार पर चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही आगामी दिनों में किसी भी राज्य में होने वाले चुनाव के लिए राजस्थान से कार्यकर्ताओं की टीम भेजी जाएगी, इस पर गहन चर्चा होगी। इसके अलावा राजस्थान में आरएलडी की इकाइयों का विस्तार किया जाएगा और उन्हें मजबूत बनाने पर भी चर्चा होगी।

बैठक में आरएलडी के प्रदेश सचिव सुरेशपाल सिंह, विक्रम सिंह हथैनी, शहर अध्यक्ष विनोद गुप्ता, सेवर ब्लॉक अध्यक्ष राधेश्याम मडरपुर, उपाध्यक्ष मुनेश चौधरी, सरपंच नेम सिंह, सरपंच रवि मुरवारा, बच्चू सिंह, जसवंत सिंह नूरपुर, रणवीर सिंह, कुलदीप सिंह, मनीष सिंह, पूर्व सरपंच किशन सिंह, योगेश नौगाया, पंचायत समिति सदस्य लक्ष्मण सिंह बिलौठी, दिलीप तेहरिया, बबलू, मानसिंह, दीवान सिंह, सत्यवीर सिंह पीरनगर, राकेश गोयका, गोविंदा आदि उपस्थित रहे।

दस्तावेजों के सत्यापन की अन्तिम तिथि 11 जुलाई

निवाई। राजकीय महाविद्यालय में आयुक्तालय के निर्देशानुसार ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया को लेकर स्नातक प्रथम वर्ष के कला व विज्ञान संकाय के दस्तावेज सत्यापन का कार्य शुरू हो गया है। प्राचार्य डॉ. दीपकराज जैन ने बताया कि सत्र 2024-2025 के लिए चल रहें ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया के तहत स्नातक प्रथम वर्ष के कला व विज्ञान संकाय के डोक्यूमेंट सत्यापन कार्य शुरू हो गया है। प्रवेश नोडल अधिकारी प्रोफेसर मदनमोहन महावर, प्रोफेसर मीनाक्षी बघेल, प्रवेश नोडल अधिकारी ने बताया कि महाविद्यालय में दस्तावेज सत्यापन 11 जुलाई तक किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मेरिट व वेटिंग सभी विद्यार्थी ई-मित्र से मूल कागजात व सभी की प्रतिलिपि महाविद्यालय में सुबह 11 से 3 बजे तक तक जा करवा सकते है। उन्होंने बताया कि वेटिंग लिस्ट के विद्यार्थियों को भी फीस जमा की जाएगी। इसी प्रकार राजकीय कन्या महाविद्यालय में बीए प्रथम सेमेस्टर में ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया की वरीयता सूची में प्रतीक्षा सूची का प्रकाशन कर दिया गया है। नोडल अधिकारी प्रीति जैन ने बताया कि बीए प्रथम सेमेस्टर में जनरल की कट ऑफ 81.20 प्रतिशत, ईडब्ल्यूएस की कट ऑफ 69.6 प्रतिशत, ओबीसी वर्ग की कट ऑफ 55.6 प्रतिशत , एससी वर्ग में कट ऑफ 65. 80 प्रतिशत , एसटी वर्ग में कट ऑफ 56.4 तथा एमबीसी में कट ऑफ 78.4 प्रतिशत गई है। प्राचार्य प्रोफेसर पानमल पहाडिय़ा ने बताया कि प्रतीक्षा सूची एवं वरीयता सूची में शामिल विद्यार्थियों को 11 जुलाई को शाम 5 बजे तक महाविद्यालय में मूल दस्तावेजों का सत्यापन करवाना होगा। दस्तावेज सत्यापन के उपरांत ही विद्यार्थी 11 जुलाई तक ईमित्र के माध्यम से फीस जमा कर पाएंगे।

बीएलओ ऐप की जानकारी दी

निवाई। पीएमश्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी व एसडीएम अनीता खटीक के नेतृत्व में बूथ लेवल अधिकारियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण के द्वितीय दिन वोटर हेल्पलाइन व बीएलओ ऐप की जानकारी दी गई।

निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी व एसडीएम अनीता खटीक ने बताया कि विधानसभा क्षेत्र के बूथ लेवल अधिकारी भाग संख्या 101 से 200 तक को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण प्रभारी तहसीलदार बीएल जांगीड ने बताया कि प्रशिक्षण में द्वितीय दिन बूथ लेवल अधिकारियों को वोटर हेल्पलाइन ऐप के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह ऐप प्ले स्टोर के माध्यम से आम आदमी भी डाउनलोड कर फार्म संख्या 6, 7 व 8 भर सकते हैं तथा घर बैठकर नाम जोडना, हटना एवं संशोधन कर सकते हैं।

दक्ष प्रशिक्षक त्रिलोकचंद जैन ने बताया कि बीएलओ ऐप बूथ लेवल अधिकारी के लिए सुविधाजनक ऐप है जिससे आम आदमी अपने घर बैठकर भी कर सकते है।

दक्ष प्रशिक्षक सीताराम शर्मा, बनवारीलाल मिश्रा, सुनील शर्मा, डीके गौत्तम ने बताया कि बूथ लेवल अधिकारी बीएलओ ऐप से मतदाताओं के फॉर्म को सबमिट करना, ट्रैक करना, चेक लिस्ट सबमिट करना, घर-घर जाकर के सर्वेक्षण करना, मतदाता केंद्र में सुविधाओं को अपडेट करने सहित कई प्रकार की जानकारियां दी गई। प्रशिक्षण के दौरान बूथ लेवल अधिकारियों द्वारा एक लघु नाटिका का मंचन किया गया।

नशा कारोबारी गिरफ्तार

पावटा । अवैध मादक पदार्थ स्मैक के साथ एक आरोपी को शाहपुरा थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर 18.19 ग्राम स्मैक बरामद की है। मामले की जांच में पुलिस टीम जुटी है। उपमहानिरीक्षक पुलिस सह पुलिस अधीक्षक जिला जयपुर ग्रामीण आनंद शर्मा ने बताया कि पुलिस महानिरीक्षक जयपुर रेंज अजय पाल लांबा के निर्देशन में अवैध नशे के कारोबार में संलिप्त अपराधियों के खिलाफ अभियान चलाकर अधिक से अधिक कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया था। जिस पर जिला जयपुर ग्रामीण में युवा पीढी में बढते हुए नशे की प्रवृति को देखते हुए नशे की रोकथाम हेतु व अवैध नशे का कारोबार करने वाले अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई करने हेतु अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुख्यालय रजनीश पूनिया के निर्देशन में चलाए जा रहे ऑपरेशन नॉकआउट अभियान के तहत डीएसटी टीम जिला जयपुर ग्रामीण की आसूचना पर इलाका थाना शाहपुरा में

अवैध मादक पदार्थ स्मैक के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया।

वृत्ताधिकारी शाहपुरा मुकेश चौधरी के सुपरविजन एवं शाहपुरा थाना प्रभारी हेमराज व डीएसटी टीम जयपुर ग्रामीण के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा अवैध नशे की सप्लाई करने वाले अपराधियों के खिलाफ आमसूचना संकलन की गई। गत कई दिनों से अभियुक्त मनोज कुमार गुर्जर उर्फ मनी गुर्जर शाहपुरा के इलाकों में अवैध मादक पदार्थ स्मैक की सप्लाई करने का कार्य कर रहा है।

श्रीमद् भागवत कथा में महारास लीला

निवाई। श्री दादू दयाल गौशाला आश्रम भेरूपुरा किवाड़ा में गौ ऋषि संत प्रकाशदास स्वामी के सानिध्य में श्रीमद् भागवत ज्ञान कथा यज्ञ, श्री दादू सुरभि 11 कुंडीय महायज्ञ, श्री गोपाल रुक्मणी एवं शिव पार्वती मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन को लेकर कई धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जा रहा है।

जिसमें श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ रहा है। संयोजक भानु गौतम, सहसंयोजक मनीष केसोट व नरेंद्र कांटोली ने बताया कि श्रीमद् भागवत ज्ञान कथा महायज्ञ एवं मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के भव्य आयोजन को लेकर पूर्व सांसद रामचरण बोहरा, नगरपालिका अध्यक्ष दिलीप ईसरानी, भाजपा जिलाध्यक्ष चन्द्रवीरसिंह चौहान, भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमाकांत शर्मा, जिला प्रवक्ता योगेंद्रसिंह नाथावत, अरनिया मंडल अध्यक्ष शिवराज लांगडी व कररीया आश्रम के संत कर्मानंदगिरी महाराज व नाथ संप्रदाय के संतों व कई जनप्रतिनिधियों व संतो द्वारा महाआरती की गई।

उन्होंने बताया कि गौ ऋषि संत प्रकाशदास स्वामी के सानिध्य में कथा वाचकमहामंडलेश्वर संत विष्णुशरण महाराज द्वारा श्रीमद् भागवत कथा में महारास लीला, उद्धव ब्रजगमन व रुक्मणी विवाह का वर्णन किया।

उन्होंने बताया कि बुधवार को सुदामा चरित्र, श्री शुक्र देव विदाई एवं ब्रज की फूलों की होली सहित कई धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाएगा। यज्ञाचार्य पंडित मुरलीधर शास्त्री अकोडिया के सानिध्य में विद्वान पंडितो द्वारा मंत्रोचारण के साथ श्रद्धालु हवन में आहुतियां दी गई।

स्वर्ण पदक जीतने वाले हैड कानि. छगन मीणा का भव्य स्वागत

कोटपूतली में स्वर्ण पदक विजेता हैड कानी. छगन मीणा को 11 हजार रूपयों की माला पहना कर स्वागत किया।

कोटपूतली। अमेरिका के बर्मिंघम में आयोजित वर्ल्ड पुलिस एण्ड फॉयर गेम्स 2025 में 77 किलो भार वर्ग की अर्न्तराष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने वाले राजस्थान पुलिस के हैड कानि. छगन मीणा का मंगलवार को स्वदेश लौटने पर राजमार्ग स्थित मीणा छात्रावास में राजस्थान आदिवासी मीणा सेवा संघ की तहसील कोटपूतली व पावटा ईकाई द्वारा संयुक्त रूप से भव्य स्वागत किया गया। इस मौके पर मीणा समाज के पंच पटेलों ने हैड कानि. छगन का माला, साफा पहनाकर एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर स्वागत एवं अभिनंदन किया।

कार्यक्रम में शिरकत करते हुये बतौर मुख्य अतिथि डीएसपी राजेन्द्र बुरड़क ने पुलिस जवान को बधाई देते हुये अपार हर्ष व्यक्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये मीणा समाज के तहसील अध्यक्ष इंजी. दिनेश मीणा ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस दौरान वरिष्ठ पदाधिकारी महेश चंद मीणा ने अभिनंदन कार्यक्रम में मार्गदशन प्रदान किया। साथ ही हैड कानि. छगन मीणा को 11 हजार रूपयों की माला भी पहनाई गई। कार्यक्रम में पहलवान नरेन्द्र कुमार का भी स्वागत किया गया। संचालन हरचन्द मीणा ने किया। इस दौरान कल्याण सहाय मीणा, शैतान सिंह, शिम्भुदयाल, रामनिवास, अभय सिंह, युधिष्ठर कुमार, दिलीप, कबूल चंद, रामावतार, पूर्व सरपंच रामकरण, जयराम, ईशवर लाल, कमल नारेहड़ा, विजय कुमार, जगदीश चन्द्र, रामकुंवार, महेश छाजाला, गुमान राम, रतिराम रघुनाथपुरा, सीबीईओ भागीरथ मीणा, भैंरूराम मीणा व मथुरा प्रसाद मीणा सहित मीणा समाज के पंच पटेल मौजूद रहे।

कार्यालय उपायुक्त हवामहल-आमेर जोन
नगर निगम हैरिटेज जयपुर।
(चौगान स्टेडियम के पास, गणगौरी बाजार, जयपुर)
Email ID: dchmw.jmc@gmail.com Ph. No. 0141-2329953
क्रमांक:-F51() Dept/comm./H.M.A.Z./2025-26/542
आपत्ति सूचना दिनांक:- 8/7/25
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती सन्तोष देवी पत्नि श्री बालूराम मीणा निवासी म.नं. पी-72 पटेल नगर, शास्त्री नगर जयपुर का पट्टा चाहने हेतु आवेदन किया गया है। उक्त सम्बन्ध में किसी व्यक्ति/ सरकारी/ गैर सरकारी संस्था या अन्य को कोई आपत्ति हो तो 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता को लिखित में सूचित करें। मियाद गुजरने के पश्चात कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।
उपायुक्त हवामहल आमेर जोन
नगर निगम हैरिटेज जयपुर

NAME CHANGE
I, No 16012038Y Rank HAV Name RANVIR SINGH Presently residing at Village REEIHAWAS, Post-PALI, The. SUROTH, Dist. KARAULI, State-RAJASTHAN. (Address) have changed my son's Name from PRANSHU JAT (Existing Name as change of Next of Kin Record/Service Documents) to CHAUDHARY PRANSU JAT proposed/adopted New 'Name PRANSHU JAT (Date of the Affidavit in DD/MM/YYYY format) before PRANSU JAT (Name and place of the Court.)

आम सूचना सर्व साधारण सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य ने प्लाट नम्बर 194 स्थित फतेह टीबा योजना (स्मॉल), धन्नादास की बगीची के पास, आदर्श नगर, जयपुर में से पूर्वी ओर का हिस्सा जिसका कुल क्षेत्रफल 67.07 वर्गगज मय निर्माण इत्यादि सहित को 1. प्रकाश सिंह 2. दीपक सिंह पुत्रान स्वर्गीय श्री भूर सिह निवासियान जे-194, गली नम्बर 2, धन्नादास की बगीची, आदर्श नगर जयपुर से क्रय करने का अनुबंध किया है यदि किसी भी व्यक्ति को उक्त क्रय के सम्बंध में कोई आपत्ति व उज्रदारी या दावेदारी इत्यादि हो तो व हमे 7 दिवस में सूचित कर दे अन्यथा वाद गुजरने मियाद किसी प्रकार की कोई आपत्तिया अमान्य व गैर कानूनी होगी तथा उक्त सम्पत्ति के विक्रय पत्र की रजिस्ट्री मेरे अभिभाष्य के हक में कर दी जावेगी।
दिनांक:07.07.2025 अब्दुल हफीज (एडवोकेट)
जयपुर फोन नं.:- 9829032028

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त-प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक:4772 जाहिर आम-सूचना दिनांक:20.06.2025
राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 267/361 (EWS) (एरिया 47.625 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्रीमती माया देवी पत्नी श्री सुखबीर सिंह शर्मा को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 7827 दिनांक 06.02.2002 को जारी किया गया। श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा पुत्र श्री लल्लू राम शर्मा के पक्ष में उक्त आवास का नियमितिकरण पत्र क्रमांक 577/8054 दिनांक 17.03.2007 के द्वारा किया गया। श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्र दिनांक 07.04.2007 को उप पंजीयक सांगानेर-प्रथम, जयपुर के यहां पंजीकृत करवाये गये। श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा उक्त आवास को दिनांक 30.07.2008 के द्वारा श्रीमती सुदेश भटनागर पत्नी श्री मनमोहन स्वरूप भटनागर को विक्रय कर उप पंजीयक जयपुर- अष्टम के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। श्रीमती सुदेश भटनागर द्वारा श्रीमती चन्दा देवी पत्नी श्री दीवान सिंह को दिनांक 11.06.2009 को मुख्त्यारनामा आम धारक नियुक्त किया गया। श्रीमती चन्दा देवी द्वारा मुख्त्यारनामा आम की हैसियत से उक्त आवास को दिनांक 08.07.2009 के द्वारा श्री समय सिंह पुत्र श्री भगवान सिंह को विक्रय कर उप पंजीयक-सांगानेर-प्रथम, जयपुर के यहां विक्रय पत्र पंजीकृत करवाया गया। श्री समय सिंह द्वारा श्रीमती सुमन देवी पत्नी श्री मुकेश कुमार जांगिड़ को दिनांक 28.09.2020 को मुख्त्यारनामा आम धारक नियुक्त किया गया। श्रीमती सुमन देवी द्वारा मुख्त्यारनामा आम की हैसियत से उक्त आवास को दिनांक 16.12.2021 के द्वारा श्रीमती संतरा देवी पत्नी श्री भगवान सहाय शर्मा को विक्रय कर उप पंजीयक-चतुर्थ, जयपुर के यहां विक्रय पत्र पंजीकृत करवाया गया। क्रेता/केती श्रीमती संतरा देवी पत्नी श्री भगवान सहाय शर्मा द्वारा आवासन मण्डल में उक्त आवास में अपना नाम मण्डल रिकार्ड में दर्ज कराने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/ पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नही हैं, श्रीमती संतरा देवी पत्नी श्री भगवान सहाय शर्मा का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
सम्पदा प्रबन्धक वृत्त-प्रथम, राज. आवा. मण्डल, जयपुर

आम सूचना मै, मेरे मुवक्किल श्री राम दयाल यादव पुत्र श्री रामअवतार उर्फ ताराचन्द यादव, निवासी:-56 वर्ष, निवासी-ढाणी, दतलिया की महरामपुर राजपूत, मोहनपुरा, कोटपुतली जिला जयपुर की ओर से आमजन को सुचित किया जाता है मेरे मुवक्किल की संतान मे उनका पुत्र नरेन्द्र कुमार यादव व पुत्रवधु ज्योति यादव व पौत्री जसनीत सिंह यादव जो कि मेरे मुवक्किल के साथ नही रहते है ना ही किसी प्रकार की सेवा सुश्रुषा आदि करते है, ना ही खैर खबर रखते है, साथ ही ना ही किसी प्रकार का व्यय आदि मेरे मुवक्किल के ऊपर या उनकी पत्नी विमला देवी और उनकी पुत्रिया सुमन व अंजु पर नही करते है ना ही उनके प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व का वहन करते है एक तरह से किसी भी प्रकार का कोई लेना देना नही है मेरे मुवक्किल व उनकी पत्नी तथा पुत्रियो के साथ कोई सामाजिक सरोकार नही है। इसलिए मेरे मुवक्किल अपनी चल व अचल सम्पत्तियो से जिसमे चल सम्पत्ति मे समस्त बैंक खाते सेविंग अकाउण्टस, शेयर्स, बॉण्ड तथा एल0आई0सी0 आदि सम्मिलित है व अचल सम्पत्ति मे कृषि भूमि खसरा संख्या 602 मे 11/516 हिस्सा ज़मीन जो कि खाता संख्या 35, पटवार हल्का, मोहनपुरा, तहसील कोटपुतली मे अंकित है जो कि ग्राम महरमपुर राजपूत मे स्थित है तथा भूखण्ड / मकान संख्या 9296 व 9301 क्रमशः 415.67 वर्गगज व 1338.33 वर्गगज है जो कि महारामपुर राजपुत सरकारी स्कूल के पास, (सी0सैठी) कोटपुतली राजस्थान मे स्थित सम्पत्तियो के सम्मिलित है से अपने पुत्र नरेन्द्र पुत्रवधु ज्योति यादव व पौत्री जसनीत निवासीयान सालासर एनक्लेव, नन्द किशोरपुरा, मान्यवास तहसील सांगानेर, जयपुर, राजस्थान स्थाई निवासी:- ग्राम मोहनपुरा, कोटपुतली, जयपुर को बेदखल करते है तथा आज दिनांक से मेरे मुवक्किल की उपरोक्त वर्णित चल-अचल सम्पत्ति तथा भविष्य मे मेरे मुवक्किल द्वारा खरीदी / प्राप्त होने वाली सम्पत्तियो पर भी किसी प्रकार का हक अधिकार नही होगा, ना ही भविष्य मे उन सम्पत्तियो (चल-अचल सम्पत्ति) पर कोई अधिकार, उत्पन्न माना जायेगा ना ही मेरे मुवक्किल का कोई सामाजिक सरोकार सम्बंध इनसे रहेगा।
जयपुर (हेमन्त टांक) एडवोकेट
दिनांक-8/7/25 मो.-9352550501

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य द्वारा एक अचल सम्पत्ति प्लाट नम्बर 77-बी, योजना आनन्द विहार-ए, बेनाड रोड, झोटवाडा, जयपुर, राजस्थान मे स्थित है। जिसका कुल क्षेत्रफल 97.22 वर्गगज है, को क्रय किया जा रहा है। यह कि सर्वप्रथम उक्त प्लाट का पट्टा , जयपुर द्वारा दिनांक 14.05.2002 को सावंत सिंह के नाम से जारी किया गया था, तत्पश्चात सावंत सिंह का स्वर्गवास दिनांक 21.03.2014 को हो गया तथा उनकी माता सुवटी देवी का भी स्वर्गवास पूर्व मे हो गया। यह कि सावंत सिंह के स्वर्गवास के पश्चात उनके विधिक वारिसानो मे उनकी पत्नी भंवर कँवर, पुत्रान श्रवण सिंह, सांयर सिंह, इन्दर सिंह एवं मंगल सिंह संयुक्त रूप से उक्त सम्पत्ति के विधिक मालिक, स्वामी, कबिज व अधिकारी हुए, इनके अलावा सावंत सिंह के अन्य कोई वारिस नहीं है, तत्पश्चात भंवर कँवर, श्रवण सिंह, सांयर सिंह एवं मंगल सिंह ने अपने-अपने हिस्से का हक त्याग जरिये पंजीकृत हक त्याग द्वारा दिनांक 22.10.2018 को इन्दर सिंह के हक मे कर दिया। इस प्रकार इन्दर सिंह उक्त सिंह वर्णित सम्पत्ति के एकमात्र मालिक, स्वामी, कबिज व अधिकारी हुए। तत्पश्चात इन्दर सिंह ने उक्त सम्पत्ति को जरिये पंजीकृत विक्रय-पत्र द्वारा दिनांक 04.09.2023 को हिमांशु कुमावत को विक्रय कर दिया। यह कि हिमांशु कुमावत द्वारा उक्त सम्पत्ति को किसी दीगर व्यक्ति को विक्रय किया जा रहा है। यदि किसी भी व्यक्ति, संस्था, फर्म, बैंक, सगे-संबंधी या अन्य कोई वारिसान, जनसाधारण इत्यादि को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति या ऐतराज हो तो इस सूचना के प्रकाशन से सात दिवस की अवधि मे मुझसे व्यक्तिगत रूप से मेरे निम्नलिखित ऑफिस पते पर अपनी आपत्ति/ऐतराजात व्यक्त करें। सात दिवस की अवधि के पश्चात इस आम सूचना बाबत प्राप्त किसी भी प्रकार की कोई भी आपत्ति/ ऐतराजात किसी भी न्यायालय मे शून्य व निरस्त समझी जायेगी।
B.C.Shankla, Advocate, Mob.: 9829063273

नाम परिवर्तन

मैं आर्मी नं. 16034010Y राइफलमैन सुमित, यूनिट 17 RAJ RIF (सवाईमान) हैं। मेरे सैन्य दस्तावेज़ में मेरे पिता का नाम मलखान है जो गलत है। मेरे पिता का सही नाम मलखान सिंह है।

मैं आर्मी नं. 16026613A राइफल मैन भूपेन्द्र सिंह चुण्डावत युनिट 17 राजरिफ (सवाईमान) है। मेरे सैन्य दस्तावेजों में मेरे पिताजी का नाम आर्मी रिकॉर्ड में बालू सिंह चुण्डावत (Balu Singh Chundawat) है जो कि गलत है। मेरे पिताजी का सही नाम बालू सिंह (Balu Singh) है।

मैं आर्मी नं. JC-474233K नायब सुबेदार समर बहादुर सिंह यूनिट 17 राज रिफ (सवाईमान) है। मेरे सैन्य दस्तावेजों में मेरे पिता श्री प्रकाश सिंह (Sree Prakash Singh) है, जो गलत है। मेरे पिता का सही नाम श्री प्रकाश सिंह (Shri Prakash Singh) है।

मैने अपना नाम अब्दुल रहमान मोहम्मद इस्माईल से बदलकर अब्दुल रहमान कर लिया है। अब्दुल रहमान मोहम्मद इस्माईल पुत्र मोहम्मद इस्माईल निवासी-233, हज़रत अली कॉलोनी, करबला, रामगढ़ मोड़, जयपुर। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावे।

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4
न्यायालय अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश क्र.नं.2 जयपुर ।
नानगराम विरूद्ध रामेश्वर
वाद/प्रार्थना पत्र अन्तिम डिक्री
प्रार्थना-पत्र संख्या 62 सन् 2018
नाम 1. श्रीमति बृजरानी पत्नी ईश्वर दयाल कडेल पुत्री गोविन्द नारायण पता आकृति अपार्टमेन्ट, फ्लोर नं. 403, 552/7 उदय मार्ग तिलक नगर, जयपुर
2. श्रीमति मिनाक्षी देवी पत्नी अशोक कुमार कडेल पुत्री गोविन्द नारायण पता-ए-92, मालवीय नगर जयपुर ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि....
अतः आपको चेतावनी दी जाती है, कि आप इस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 10 माह 07 सन् 2025 को 10.30 पूर्वान्हे में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेगें तो उक्त आदेश की सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज दिनांक 31 माह 05 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गई।
(मोहर) आज्ञा से-वरिष्ठ रीडर
अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश
क्रम-02 जयपुर महानगर-प्रथम

COLLEGE OF AGRICULTURE
(S.K.N. AGRICULTURE UNIVERSITY) Kumher, Distt. - Deeg, PIN- 321201
No. : F./OT/COA-K/2025/3961 Dated :- 03/07/2025
NOTICE INVITING BID
Bid for open tender regarding purchase of Office Furniture & Solar Street Light are invited from interested bidders up to 12.30 PM of 15.07.2025 and the tender will be opened on 15.07.2025 at 01.30 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://sppp.raj.nic.in) of the Rajasthan state; and www.sknau.ac.in University Website.
NIB code SKN2526A0131 and UBN is: SKN2526GSOB00134
Raj.Samwad/C/25/5776 DEAN

कार्यालय अधिशाषी अभियंता (विद्याधर जोन)
नगर निगम, ग्रेटर जयपुर
(अम्बाबाडी सर्किल, अम्बाबाडी जयपुर)
क्रमांक :- ज.स.अ./2025/133 दिनांक :- 07/07/2025
ई-निविदा सूचना संख्या 154/2025-26
केन्द्र एवं राज्य सरकार के विभागों में पंजीकृत "एए" व "ए" श्रेणी के ठेकेदारों एवं नगर निगम जयपुर के उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से विभिन्न विकास कार्यो की निविदा आमंत्रित की जाती हैं। कार्यो की अनुमानित लागत, टेण्डर बेचे जाने तथा प्राप्त करने की तारीख, टेण्डर शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण राज्य सरकार के ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.raj.nic.in तथा नगर निगम जयपुर की Web Site www.jaipurmc.org पर देखी व Download की जा सकती है तथा निर्धारित अवधि तक ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in पर अपलोड की जा सकेगीं।
SPPP Portal UBN No. JMC2526WSOB01011
राज.संवाद/सी/25/5761 अधिशाषी अभियंता, विद्याधर जोन

कार्यालय नगर निगम, (कोटा उत्तर) (राज.)
क्रमांक :- ननिको(उ)/निर्माण/2025/4078-91 दिनांक : 04.07.2025
-: ई-निविदा सूचना :-
नगर निगम कोटा उत्तर द्वारा विभिन्न राजकीय अभियांत्रिकी विभागों के पंजीकृत "A", "AA" श्रेणी एंव नगर निगम कोटा उत्तर में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों को सूचित किया जाता हैं कि नगर निगम कोटा उत्तर द्वारा कुल 09 कार्य हेतु ई-निविदा सूचना संख्या-09/2025-26 से सम्बन्धित कार्यो हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। उक्त कार्यो का विस्तृत विवरण, निविदा शर्ते, अनुमानित लागत,निविदा बैचने, प्राप्त करने एवं खोलने की दिनांक आदि सम्पूर्ण विवरण नगर निगम कोटा उत्तर की वेबसाइट www.kotamc.org, http/eproc.rajasthan.gov.in एवं sppp.raj.nic.in पर देखी जा सकती है।
NIB No. DLB2526A3225
UBN No. 1. DLB2526WSRC10094 2. DLB2526WSRC10098
3. DLB2526WSRC10106 4. DLB2526WSRC10108
5. DLB2526WSRC10114 6. DLB2526WSRC10117
7. DLB2526WSRC10119 8. DLB2526WSRC10120
9. DLB2526WSRC10122
राज.संवाद/सी/25/5715 अधीक्षण अभियन्ता

कार्यालय पुलिस अधीक्षक जिला सवाई माधोपुर (राजस्थान)
क्रमांक :-5388-99 दिनांक :- 07-07-2025
नीलामी सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि जिला सवाई माधोपुर के थाना सदर गंगापुर सिटी सवाई माधोपुर के द्वारा 38 पुलिस एक्ट में जब्त एवं राजसात किये गये 26 वाहनों को वाहन स्वामी / मालिकों द्वारा निर्धारित अवधि में मुक्त नहीं कराने के कारण जिस स्थिति में है, दिनांक 22.07.2025 को प्रातः 12.00 बजे गठित समिति द्वारा थाना सदर गंगापुर सिटी के परिसर में नीलाम किया जावेगा। अतः इच्छुक खरीद्दार / बोलीदाता को जरिये विज्ञिप्त सूचित किया जाता है कि निर्धारित तिथि एवं समय पर उपस्थित होकर बोली लगा सकते है। नीलामी की शर्ते किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय में उपस्थित होकर देखी जा सकती है।
पुलिस अधीक्षक,
जिला सवाई माधोपुर

संक्षिप्त

अवैध बजरी परिवहन के दो आरोपी पकड़े

टोंक। पीपलू उपखंड के झिराना थाना पुलिस ने अवैध बजरी खनन और परिवहन के खिलाफ कार्यवाही करते हुए ग्राम जंवाली में पंचायत भवन के पास से अवैध बजरी परिवहन करते एक ट्रेक्टर को जप्त कर चालक मोहन बलाई पुत्र रामप्रसाद उम्र 30 साल निवासी पांसरोटिया थाना पीपलू को गिरफ्तार किया गया। जिसके खिलाफ एमएमडीआर एक्ट में मामला दर्ज किया गया। इसी प्रकार पुलिस थाना झिराना टीम ने धारदार हथियार से जानलेवा हमले के मामले में वांछित दो आरापी माहिर खान पुत्र बाबू खां उम्र 25 साल और इकराम खान उर्फ इकरिया पुत्र शफी खां, उम्र 37 साल को गिरफ्तार किया हैं।

501 छायादार पेड़ लगाये

टोंक। पीपलू उपखसण्ड के ग्राम रानोली कस्बे में युवाओं ने ग्रामीण क्षेत्र मे हरियाली बढ़ाने एवं पर्यावरण को स्वच्छ रखने अपने व आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को संवारने के लिए मंगलवार को एक अच्छी पहल करते हुए, युवा गौ सेवा दल ने गांव की सार्वजनिक जगहों पर छायादार वृक्ष लगायें। युवा गौ सेवा दल ने गांव के युवाओं की टीम बना कर गांव में 501 छायादार पौधे लगाए। जो गौ शाला परिसर, तालाब की पाल, गार्डन, धार्मिक स्थलों पर खाली पड़ी जगह पर पौधारोपण किया, इन पोधो में नीम, पीपल, बरगद, शीशम, गुलमोहर जैसे छायादार पेड़ लगाये गये है।

वर्मा महासचिव बने

पावटा। राजस्थान कांग्रेस सेवादल के प्रदेश महासचिव हेमसिंह शेखावत ने संगठन की कार्यकारणी का विस्तार करते हुए महिला कांठोस सेवादल की जिला अध्यक्ष सुमन यादव फतेहपुरा खुर्द, रघुवीर यादव जिला अध्यक्ष एवं कांठोस पदाधिकारी बजरंग लाल यादव की अनुशंसा पर विकास वर्मा कुनेड को जिला महासचिव पद पर मनोनीत किया है। इससे सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं में खुशी का माहौल है।

अंत्योदय संबल पखवाड़ा

कोटपूतली । पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाडे के तहत जिले में 9 जुलाई को उपखण्ड क्षेत्र की चयनित ग्राम पंचायतों में शिविर आयोजित किये जायेंगे। प्रात: 9.30 बजे से लेकर सायं 5.30 बजे तक शिविर संचालित होंगे। 9 जुलाई को उपखंड बानसूर में मोठुका, इंद्रांडा और लेकडी में, नारायणपुर में अजबपुरा, बसई जोगियान, विजयपुरा और चांदपुरी में, बहरोड़ में ऊंटोली ग्राम पंचायत में, कोटपुतली में नारेहड़ा और बसई ग्राम पंचायतों में तथा पावटा में पण्डितपुरा और बुचारा ग्राम पंचायतों में और विराटनगर की पापड़ा और भामोद ग्राम पंचायत में कैंप होंगे।

रात्रि चौपाल 9 जुलाई को

कोटपूतली। राज्य सरकार की मंशानुरूप आमजन के परिवादों का स्थानीय स्तर पर निवारण करने के उद्देश्य से जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी की अध्यक्षता में उपखण्ड बहरोड़ की ग्राम पंचायत बसई के अटल सेवा केंद्र में 9 जुलाई, बुधवार को सांय 6 बजे से रात्रि चौपाल का आयोजन किया जाएगा। उक्त जानकारी उपखंड अधिकारी बहरोड़ राम किशोर मीणा ने दी।

अलवर में बालिका सैनिक स्कूल की भी मिली सौगात : मंत्री संजय

मंत्री संजय शर्मा ने छात्राओं को स्कूटी वितरण किया।

- **पं. दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाडा, कालीबाई भील मेधावी एवं देवनारायण छात्रा स्कूटी योजना के तहत 91 छात्राओं को स्कूटी दी**

अलवर। वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री संजय शर्मा ने मंगलवार को पं. दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाडे के अंतर्गत प्रताप ऑडिटोरियम अलवर में आयोजित कालीबाई भील मेधावी एवं देवनारायण छात्रा स्कूटी योजना के तहत 91 प्रतिभावान छात्राओं को स्कूटी वितरित कर चाबी सौंपी।

मंत्री शर्मा ने प्रतिभावान बेटियों को स्कूटी मिलने की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि राज्य सरकार महिला सशक्तिकरण एवं बेटियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि स्कूटी बेटियों के सपनों को साकार करने में मददगार साबित होगी। उन्होंने कहा कि अपने परिश्रम के बल पर स्कूटी प्राप्त करने वाली मेधावी बेटियों से अन्य बेटियों को भी प्रेरणा मिलेगी।

उन्होंने कहा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को बेटियों की भागीदारी से अर्जित किया जा सकेगा। वसुंधरा राजे के मुख्यमंत्री के कार्यकाल में मेधावी बेटियों के लिये प्रारम्भ की गई स्कूटी वितरण योजना से हजारों बेटियों को अपने सपने साकार करने का अवसर मिल रहा है।

उन्होंने कहा कि विकसित भारत के सपने को साकार करने में बालिका शिक्षा महत्वपूर्ण घटक है। इसके लिए केंद्र व राज्य सरकार प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के डेढ साल के कार्यकाल के दौरान ही अलवर शहर में दो नए कन्या महाविद्यालय खोले गए हैं तथा गौरी देवी महाविद्यालय में बढ रही छात्राओं की संख्या के मद्देनजर शहर में एक नवीन कन्या महाविद्यालय की बजट में घोषणा की गई है, जिसका संचालन वर्तमान में एसएमडी स्कूल में शुरू हो गया है। इसके लिए विज्ञान नगर में भूमि चिन्हित कर ली गई है। यथाशीघ्र यहां पर महाविद्यालय का भवन तैयार होगा। उन्होंने बताया कि अलवर शहर में कन्या पॉलीटेक्निक महाविद्यालय की भी बजट घोषणा कराई गई, यह महाविद्यालय भी पॉलीटेक्निक महाविद्यालय के परिसर में प्रारम्भ हो चुका है और इसी परिसर में इसके भवन के लिए भूमि चिन्हित की गई है।

यहां भी यथाशीघ्र भवन बनकर तैयार होगा। उन्होंने बताया कि केंद्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव के सकारात्मक प्रयासों से हल्दीना में बालिका सैनिक स्कूल की स्वीकृति मिल चुकी है। इसके लिए भूमि आवंटन का कार्य हो चुका है तथा यहां भी यथाशीघ्र भवन तैयार होगा जिससे बेटियों को अच्छी शिक्षा प्राप्त होने के साथ-साथ सेना में भी अपनी सेवाएं देने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। मंत्री शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि सामाजिक बदलाव लाने में शिक्षित बेटियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस लक्ष्य को सहभागिता से पूरा किया जाएगा। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता एवं घनश्याम गुर्जर ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में गौरी देवी महाविद्यालय का विशिष्ट स्थान रहा है इस विद्यालय में अध्ययन कर अलवर ही नहीं अन्य जिलों की बेटियों ने अपने सपने पूरे कर अपने माता-पिता व विद्यालय का नाम रोशन किया है। गौरी देवी महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. मंजू यादव ने महाविद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

सार-समाचार

दो आरोपियों को गिरफ्तार किया

सांभरझील, (निसं)। जोबनेर पुलिस में नकबजनी की वारदात करने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आनन्द शर्मा उप महानिरीक्षक पुलिस सह-पुलिस अधीक्षक जिला जयपुर ग्रामीण ने बताया कि 25 जनवरी को परिवादी ने पुलिस थाना जोबनेर पर रिपोर्ट दर्ज करवायी कि रात को डूंगरी हिंगोनिया स्थित गणेश विहार कॉलोनी स्थित मेरी बहन के मकान से 1 सोने की चैन, एक झूमकों की जोडी, एक टॉपिस, एक मंगलसूत्र, एक चांदी की पायजेब की जोडी, चांदी के कडे, 35000 रू नकद, बक्से में रखे कपड़े, एक एलईडी, एटीम कार्ड व एक सिलेण्डर आदि कोई चुरा कर ले गया है। रिपोर्ट पर प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ किया गया। थानाधिकारी जोबनेर श्री सुहैल उपनिरीक्षक के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन किया गया । गठित टीम द्वारा आसूचना संकलन व तकनीकी सहायता द्वारा एवं एमओबी टीम द्वारा घटना स्थल से लिए गये साक्ष्यो की सहायता से व फिंगर प्रिंट ब्यूरो द्वारा चिंहित फिंगर प्रिंट, आरोपी रोशन मीणा निवासी गोरिया थाना जाजोद जिला सीकर से मिलान होने पर मुल्जिम रोशन मीणा को प्रोडक्शन वारंट पर जिला जैल बीकानेर से हिरासत में लिया जाकर गहन पुछताछ की गई तो मुल्जिम रोशन मीणा ने अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर घटना को अंजाम देना स्वीकार किया। अन्य मुल्जिम हजारीलाल निवासी नयाबास थाना नीमकाथाना जिला सीकर को नीमकाथाना जेल से प्रोडक्शन वारन्ट पर लिया जाकर गिरफ्तार किया गया। आरोपरयों का पीसी रिमाण्ड प्राप्त कर प्रकरण में चोरी किये गये माल के बरामदगी के प्रयास जारी है। प्रकरण में अन्य मुल्जिमानों की तलाश जारी है। गिरफ्तार किया गया दूसरा आरोपी रोशन मीणा पुत्र मदनलाल जाति मीणा उम्र 35 साल निवासी गोरिया थाना जाजोद जिला सीकर 2. हाजारीलाल पुत्र नारायणराम जाति मीणा उम्र 55 साल निवासी नयाबास थाना नीमकाथाना जिला सीकर का है।

होमियोपैथी चिकित्सा शिविर आयोजित

कोटपूतली। कस्बे के राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय में मंगलवार को एक दिवसीय आयुर्वेद एवं होमियोपैथी नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की समस्त व्यवस्था स्व. मदनलाल गुप्ता की स्मृति में उनके परिजन डॉ. नेहा गुप्ता व नवीन गुप्ता द्वारा की गई। सीएमएचओ डॉ. आशीष सिंह शेखावत ने शिविर का अवलोकन किया। शिविर में आयुर्वेद चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. मदन लाल शर्मा, डॉ. रमेश आर्य, डॉ. महेश शर्मा, डॉ. सुधा शर्मा एवं होमियोपैथी चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. नेहा गुप्ता, डॉ. संजय चौधरी ने अपनी सेवायें प्रदान की। विनोदी लाल शर्मा, रविकान्त शर्मा, ओमप्रकाश, सुरेन्द्र वर्मा, राकेश व देवकी शर्मा ने औषधी व्यवस्था सम्भाली। शिविर में 164 रोगियों ने आयुर्वेद तथा 153 रोगियों में होमियोपैथी चिकित्सा का लाभ प्राप्त किया। रोगियों की सुविधा के लिये रक्तचाप तथा शुगर परीक्षण की भी व्यवस्था की गई। शिविर में बी लाल लैब द्वारा नि:शुल्क जांचें की गई। कार्यक्रम के अन्त में पौधा वितरण किया गया। सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं सहयोगियों को वस्त्र एवं पौधा भेंटकर सम्मानित किया गया। इस दौरान स्व. मदनलाल गुप्ता की पत्नी सारिका गुप्ता ने औषधालय परिसर में पौधारोपण किया।

सीएम के दौरे के मद्देनजर भाजपा की बैठक

- **मुख्यमंत्री बुधवार को सायं 5:50 बजे डीग जिले के पूंछरी हैलीपैड पर पहुंचेंगे तत्पचात 6 बजे श्रीनाथजी मंदिर के दर्शन करेंगे, मंदिर के दर्शन कर स्थानीय कार्यक्रमों में सहभागिता दर्ज करेंगे तथा रात्रि विश्राम पूंछरी में ही रहेगा**

भरतपुर (निस)। भारतीय जनता पार्टी की जिलाध्यक्ष शिवानीदायमा के नेतृत्व में राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दो दिवसीय दौरे को लेकर भाजपा कार्यालय पर जिले के प्रमुख पदाधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मुख्यमंत्री के स्वागत की तैयारियों को लेकर चर्चा की गई। जिला प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी डॉ. वीरेन्द्र पचौरी ने बताया कि मुख्यमंत्री बुधवार को सांय 5:50 बजे डीग जिले के पूंछरी हैलीपैड पर पहुंचेंगे तत्पचात 6 बजे श्रीनाथजी मंदिर के दर्शन करेंगे, मंदिर के दर्शन कर स्थानीय कार्यक्रमों में सहभागिता दर्ज करेंगे तथा रात्रि विश्राम पूंछरी में ही रहेगा। अगले दिन बुधवार को 10 बजे बांसी खुर्द हैलीपैड पहुंचेगे, जिसके पश्चात 10:15 बजे लुधावाई हनुमान जी मंदिर पर दर्शन कर स्थानीय कार्यक्रमों में सहभागिता प्रदान करेंगे। कार्यक्रम में पूर्व प्रदेश मंत्री महेन्द्र जाटव, गिरधारी गुप्ता, जिला उपाध्यक्ष राजू कटारा, श्याम सुंदर गौड़, जगदीष अजान, वीरेन्द्र बुढ़वार, जिला मंत्री कुशल पालराजावत, धर्मसिंहचौधरी, जिला प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी डॉ. वीरेन्द्र पचौरी, प्रहलाद सिंह, गौरव सरपंच, आकाश हथैनी, अन्नू फौजदार, सरिता फौजदार, डौली, अनुराग तमरौली, दिनेषलवानिया, हिमांषु गुप्ता, आकाष षर्मा, प्रेम शर्मा, कपिल खौंखर, जीतू पंडित आदि प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शिविर में 80 यूनिट रक्त संग्रहित

पावटा । रमेश चंद यादव की 11वीं पुण्यतिथि पर ढाणी लाख्यावाली बावडी में विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में बड़ी संख्या में युवाओं ने रक्त दान कर समाज के पुण्य कार्य में अपनी भागीदारी निभाई। शिविर में कुल 80 यूनिट रक्त का संग्रहण किया गया। आयोजन राजेश यादव ने बताया कि रक्तदान से बड़ा कोई पुण्य नहीं है। यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि इस भीषण गर्मी के बावजूद रक्तदानियों और आयोजकों में इतना उत्साह है। रक्तदान जीवन बचाने का सबसे बड़ा पुण्य कार्य है और मुझे गर्व है कि क्षेत्र के नागरिक इस पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे है। रक्तदान बहुत महत्वपूर्ण है ।

ऐसे आयोजनों में सभी को बढ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। युवा साथियों द्वारा ग्रामीण इलाकों में इस तरीके के कार्यक्रम करना बहुत सराहनीय है। हमें कम से कम वर्ष में एक बार तो रक्तदान करना ही चाहिए। ताकि रक्त की कमी से मरने वाले लोगों को जीवनदान मिल सके। इस मौके पर सभी अतिथियों का साफ़ा पहनाकर माल्यार्पण कर स्वागत किया ।

'पखवाड़े के शेष दिनों में निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करें'

अलवर। जिला कलेक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उपखंड अधिकारियों की बैठक लेकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत आयोजित शिविरों में प्रगति, संपर्क पोर्टल एवं जनसुनवाई प्रकरणों के निस्तारण की विस्तृत समीक्षा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए । बैठक में जिला कलेक्टर ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत आयोजित शिविरों में प्रगति की उपखंडवार विस्तृत समीक्षा की उपखंड अधिकारियों को निर्देश दिये कि राजस्व संबंधी लंबित लम्बित पत्थरगढ़ी और सीमाज्ञान प्रकरणों का निस्तारण, कुर्रेजात प्रकरण, नामांतरण, जमाबंदी अपडेशन, आपसी सहमति से विभाजन सहित रास्तों के लंबित प्रकरणों का शत-प्रतिशत निस्तारण करावे। उन्होंने कहा कि पखवाड़े के तहत आयोजित शिविरों में राज्य सरकार की मंशानुरूप आमजन को महत्वपूर्ण विभागों की योजनाओं एवं जरूरी सुविधाओं के माध्यम से लाभान्वित करवाया गया है, पखवाड़े के शेष दिनों में निर्धारित लक्ष्य अनुसार प्रगति अर्जित करना सुनिश्चित करें। उन्होंने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा 2022 के अन्तर्गत लम्बित आवेदनों का निस्तारण एवं एनएफएसए 2025 के तहत आवेदनों को अप्रूवल स्तर तक पहुंचाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने उपखंड अधिकारियों को निर्देशित किया कि राज्य सरकार के निर्देशानुसार गिव अप अभियान की प्रतिदिन मॉनिटरिंग कर ब्लॉकवार निर्धारित लक्ष्यानुसार अधिकाधिक सक्षम लोगों को स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा योजना में से नाम हटवाने को प्रेरित करें, ताकि जरूरतमंद पात्र व्यक्तियों को खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ मिल सके। उन्होंने राजस्थान सम्पर्क पोर्टल की समीक्षा कर निर्देश दिये कि अधिकारी सम्पर्क पोर्टल का नियमित अवलोकन करें ।

बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर द्वितीय योगेश डागुर, उपखण्ड अधिकारी यशार्थ शेखर, जिला रसद अधिकारी विनोद जुनेजा, तहसीलदार अलवर रश्मि शर्मा सहित वीसी से समस्त उपखण्ड अधिकारी, बीडीओ एवं तहसीलदार जुडे।

गौ माता की हत्या के विरोध में एसडीएम को ज्ञापन सौंपा

पावटा। गौ माता की हत्या और गौ वंश पर बढ़ते अत्याचार व नंदी गौ शाला खुलवाने को लेकर बड़ी संख्या में गौ रक्षक पैदल मार्च करते हुए पावटा उपखंड कार्यालय पहुंचे जहां शांतिपूर्ण तरीके से अपना विरोध दर्ज करवाते हुए अपनी मांगों को लेकर पावटा उपखंड अधिकारी कपिल कुमार उपाध्याय को जिला कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपा। इस दौरान संकल्प हरियाली गौ सेवा समिति संयोजक नीरज सैन, सुशील योगी, प्रहलाद सैन, नितेश कुमार सहित गौ रक्षकों ने बताया कि पावटा कस्बे में राजकीय महाविद्यालय भवन के पीछे एक गोवंश का सिर और इसके साथ ही वहां क्षत विक्षत शरीर के टुकड़े व पैर मिलने के मामले में पुलिस प्रशासन द्वारा मृत गौ वंश की निष्पक्ष जांच व इस मामले में गौ वंश का धारधार हथियार से धड़ काटकर अलग किया गया है। जिसे गौ हत्या मानते हुए अज्ञात दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की। वही उन्होंने क्षेत्र में बढ़ रहे गौ वंश पर तेजाब डालने के मामलों में असामाजिक तत्वों के खिलाफ पुलिस प्रशासन द्वारा सख्ती दिखाते हुए दोषियों के खिलाफ कार्यवाही की मांग की। वही गौ रक्षकों ने क्षेत्र में वर्षों से चली आ रही नंदी गौ शाला का टेंडर जारी होने के बाद भी निर्माण कार्य आज तक शुरू नहीं होने के कारणों का खुलासा कर, टेंडर की जांच करवा नंदी गौ शाला का निर्माण कार्य शुरू करने की बात कही। गौ रक्षकों ने बताया कि क्षेत्र में गौ सेवक दिन रात निस्वार्थ भाव से गौ माता की सेवा में लगे है लेकिन गौ वंश के साथ तरह की दुर्घटना के दौरान समय पर गौ माता को उपचार उपलब्ध नहीं हो पाता जिसके लिए एक अतिरिक्त पशु चिकित्सक उपलब्ध करवाया जाए जिससे समय पर गौ वंश का उपचार कर उन्हें बचाया जा सके, पावटा कस्बे में बने डंपिंग यार्ड में गौ माता पॉलीथिन व अपशिष्ट खाकर काल का ठास बन रही है। डंपिंग यार्ड की जगह निश्चित करने व डंपिंग यार्ड की चारदीवारी करवाने की मांग की। जिस पर उपखंड अधिकारी कपिल कुमार उपाध्याय ने गौ रक्षकों से मुलाकात की और उनकी मांगों पर गंभीरता से विचार करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए विशेष रणनीति बनाई जाएगी। पैदल मार्च के दौरान पूरा क्षेत्र गौ माता की जय और गौ हत्या बंद करो के नारों से गूंज उठा। प्रदर्शन के दौरान गौ रक्षकों ने स्पष्ट चेतावनी दी कि यदि प्रशासन ने शीघ्र कदम नहीं उठाया तो यह आंदोलन व्यापक और उठा रूप धारण करेगा। गौ रक्षकों ने एक स्वर में कहा कि गौ माता की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है। इसके लिए हम किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। गौ माता की सुरक्षा प्रत्येक हिंदू की नैतिक और धार्मिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा, गौ हत्या न केवल हमारे धर्म का अपमान है बल्कि यह समाज की जड़ों पर हमला है। इस दौरान सामाजिक कार्यकर्ता गोपाल अग्रवाल, प्रहलाद सैन, नितेश शर्मा, अमित वर्मा, सहित बड़ी संख्या में गौ रक्षक दल मौजूद रहा।

सआदत चिकित्सालय का निरीक्षण

टोंक। आमजन सरकारी अस्पतालों में उपचार के लिए परेशान नहीं हो और उन्हें अस्पताल में बेहतर चिकित्सा सुविधाएं मिलें, इसे लेकर जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने मंगलवार को जिला मुख्यालय के सबसे बडे सआदत अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। जिला कलेक्टर ने सआदत अस्पताल के निरीक्षण के दौरान वार्डों में जाकर रोगियों एवं उनके परिजनों से मिल रहे उपचार की जानकारी ली एवं डॉक्टरों व चिकित्सा स्टाफ को आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने पीएमओ डॉ. हनुमान प्रसाद बैरवा एवं दवा वितरण केंद्रों के स्टाफ को निर्देशित किया कि मुख्यमंत्री नि:शुल्क दवा योजना के तहत सभी काउंटरों पर दवा मिले। बीमार मरीज को दवा लेने के लिए अलग-अलग काउंटरों पर नहीं भेजें, व्यवस्थाओं को दुरुस्त करें। रोगी के स्थान पर अपने आप को रखकर सोचे। उनकी परेशानी को और नहीं बढ़ाएं। जिला कलेक्टर ने डेढ घंटे के अपने निरीक्षण के दौरान हर वार्ड में जाकर चिकित्सा व्यवस्था की स्थिति को देखा।

गोवर्धन परिक्रमा मार्ग में बिछाई यमुना नदी की रेत

- **संभागीय आयुक्त ने दिए थे निर्देश, श्रद्धालुओं को नहीं होगी परेशानी**
- **डेढ़ किलोमीटर के परिक्रमा क्षेत्र में रेत बिछी हुई थी। जो बारिश के बाद कीचड में तब्दील हो सकती थी। इसके अलावा धूप में वह काफी गर्म हो जाती है।**

भरतपुर (निस)। गोवर्धन में मुड़िया पूर्णिमा का मेला 4 जुलाई से शुरू हो गया है। परिक्रमा लगाने के देश के अलग-अलग कोने से श्रद्धालु गोवर्धन पहुंच रहे हैं। परिक्रमा का डेढ़ किलोमीटर का एरिया डीग जिले में आता है। जिसको लेकर डीग प्रशासन लगातार मेले की तैयारियों की जुटा हुआ है। परिक्रमा लगाने वाले श्रद्धालुओं को कोई परेशानी न हो इसके लिए डेढ किलोमीटर के क्षेत्र में यमुना नदी की रेत बिछाई गई है।

संभागीय आयुक्त टीना सोनी ने बताया कि मेले को देखते हुए डीग जिले में आने वाले परिक्रमा मार्ग का निरीक्षण किया था। डेढ किलोमीटर के परिक्रमा क्षेत्र में रेत बिछी हुई थी। जो बारिश के बाद कीचड में तब्दील हो सकती थी। इसके अलावा धूप में वह काफी गर्म हो जाती है। जिसके बाद डीग प्रशासन को रेत की जगह यमुना नदी की रेत डालने के निर्देश दिए थे। डीग प्रशासन ने परिक्रमा मार्ग में यमुना नदी की रेत डाल दी है। जिससे परिक्रमा लगाने आने वाले लोगों को परेशानी नहीं होगी। यमुना नदी की रेत बारिश में सॉफ्ट हो जाती है।

परिक्रमा लगाने आए मनोज ने बताया कि डीग जिले में आने वाले परिक्रमा क्षेत्र में भरतपुर संभागीय आयुक्त के निर्देश के बाद ब्रज की रेत डाली गई है। जिसके बाद से परिक्रमा लगाने वाले लोगों को काफी आसानी हो रही है। इससे परिक्रमा लगाने वाले लोगों के पैर में छाले नहीं पड़ेंगे। यह डीग जिला प्रशासन की एक अच्छी पहल है।

पीडब्ल्यूडी के अधिषाषी अभियंता गोविंद सिंह मीणा ने बताया कि डीग जिले में आने वाले परिक्रमा मार्ग में यमुना नदी की रेत बिछाई गई है। यह रेत मथुरा से मंगवाई गई है। इसकी खासियत है कि बारिश होती है तो, इस रेत में कीचड़ नहीं बनती बल्कि और भी ज्यादा सॉफ्ट हो जाती है। धूप में ज्यादा गर्म नहीं होती। इससे परिक्रमा लगाने वाले लोगों को आराम मिलेगा।

मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध करायें : गोस्वामी

कोटपूतली। जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी ने मंगलवार को राजकीय बीडीएम जिला चिकित्सालय कोटपूतली का आकस्मिक निरीक्षण कर चिकित्सा व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा मरीजों से संवाद कर दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी लेकर आवश्यक सुधार के निर्देश दिये। जिला कलक्टर ने चिकित्सालय के मेडिकल इमरजेंसी, ट्रोमा सैंटर, ब्लड बैंक, आईसीयू, डायलेसिस, एसएनसीयू, एमसीएच, सोनोग्राफी, आईपीएचएल लैब व अन्य वार्डो का निरीक्षण कर सुधार हेतु आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने रोगियों एवं तीमारदारों को आवश्यक सुविधायें सुनिश्चित कर सरकार की मंशा के अनुरूप आमजन को चिकित्सा सुविधाओं का लाभ देने के निर्देश दिये। अस्पताल के इमरजेंसी एवं ओपीडी सहित अन्य वार्डों में भ्रमण कर रोगियों से चिकित्सा सुविधाओं के बारे में जानकारी लेकर उनकी कुशलक्षेम जानी तथा अस्पताल प्रशासन द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी ली। उन्होंने अस्पताल में आने वाले रोगियों को नि:शुल्क दवा एवं नि:शुल्क जांच आदि सुविधाओं की जानकारी लेकर चिकित्सीय जांच हेतु अस्पताल में उपलब्ध सभी उपकरणों के रख रखाव की व्यवस्था बेहतर रखने के निर्देश दिये। उन्होंने उपस्थित स्टॉफ की जानकारी लेकर नियमित समय पर उपस्थिति सुनिश्चित करने को कहा। जिला कलक्टर ने वार्डो एवं चिकित्सालय परिसर में साफ-सफाई व्यवस्था पर संतोष जताते हुये वार्डों में रोगियों के बैडों की चादरों को नियमित रूप से बदलने एवं नियमित सफाई करने तथा चिकित्सालय में निर्बाध विद्युत आपूर्ति, पेयजल आदि व्यवस्था दुरूस्त करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि आगंतुकों को राजकीय योजनाओं की जानकारी सरल भाषा में देते हुये उन्हें पात्रतानुसार लाभान्वित करें। उन्होंने मानसून के मद्देनजर दवाईयों का पर्याप्त भण्डारण रखने, ड्रग हाउस से समन्वय बनाये रखते हुये समय पर आपूर्ति करने के निर्देश दिये। उन्होंने वार्डों में भर्ती रोगियों से रूबरू होकर दी जा रही सुविधाओं की जानकारी ली तथा शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होने की कामना की। इस दौरान पीएमओ डॉ. चैतन्य रावत ने जानकारी देते हुये बताया कि चिकित्सालय में प्रतिदिन औसतन ओपीडी 2.5 से 03 हजार, आई.पी.डी करीब 100 चल रही है। चिकित्सालय में 03 सोनोग्राफी मशीन, 10 एक्स-रे मशीन, 02 डिजीटल सीआर सिस्टम, 05 डायलेसिस मशीन क्रियाशील उपलब्ध है। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन 02 चिकित्सकों द्वारा 60-70 सोनोग्राफी प्रति चिकित्सक द्वारा की जा रही है। इसके अलावा प्रतिमाह 3500 एक्स-रे, प्रतिमाह औसतन डिलीवरी-150, डायलेसिस औसतन प्रतिमाह 50 किये जा रहे है। संस्थान में संचालित आई.पी.एच.एल लैब में 107 प्रकार की जांचे की जा रही है एवं प्रतिमाह 60 हजार जांचे हो रही है।

पुरुस्कार वितरण समारोह आयोजित

कोटपूतली। किस्बे के दिल्ली जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित द राजस्थान स्कूल का 20 वां स्थापना दिवस व पुरुस्कार वितरण समारोह मंगलवार को मनाया गया। विद्यालय के चेयरमैन राजेन्द्र सिंह यादव व श्रीमती कमलेश यादव, प्रधानाचार्या शालिनी चौधरी व बर्सर विकास चौधरी ने द्वीप प्रज्ज्वलित कर सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को शुभकामनायें दी। इस मौके पर संस्था के चेयरमैन एवं पूर्व गृह राज्यमंत्री राजेन्द्र सिंह यादव ने कहा कि आज अत्यंत गर्व व हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आज ही के दिन 20 वर्ष पूर्व विद्यालय के संस्थापक व मेरे मार्गदर्शक पिताजी स्व. रामजीलाल की प्रेरणा से इस विद्यालय की नींव रखी गई थी। विद्यालय की स्थापना के पीछे जो उद्देश्य थे उन उद्देश्यों को हम सब ने मिलकर पूरा करने का प्रयास किया है। हमारा सपना था कि हम इस क्षेत्र को एक ऐसी संस्था दें जहां शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित ना रहकर विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास को समर्पित हो।

उपमुख्यमंत्री बैरवा ने की किवाड़ा धाम में गौ पूजा

- **भागवत कथा में गौ ऋषि संत प्रकाश दास महाराज की उपस्थिति में गौ पूजन किया**

टोंक। राजस्थान के उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा का निवाई पहुंचने पर नगर पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी और भाजपा शहर मंडल अध्यक्ष नितिन छाबड़ा के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने बाईपास पर उनका स्वागत किया, इस दौरान कार्यकर्ताओं ने भारत माता की जय और वंदे मातरम के नारे लगाए।

इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने उपमुख्यमंत्री बैरवा, विधायक रामसहाय वर्मा और जिला अध्यक्ष चंद्रवीर सिंह चौहान को पार्टी का दुपट्टा पहनाया गया। इसके बाद उपमुख्यमंत्री का काफिला झिलाय गांव स्थित झरणीया में खाल किवाडा भेरूपुरा पहुंचा, जहां भागवत कथा के आयोजन में गौ ऋषि संत प्रकाश दास महाराज की उपस्थिति में गौ पूजन किया गया। कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री ने कहा कि किवाड़ा धाम एक तपोभूमि है और राला बाबा का प्रसिद्ध धाम है, दस पर उन्होने युवाओं से धार्मिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इससे सनातन धर्म मजबूत होगा एवं उन्होंने गौ सेवा के महत्व पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम में दिनेश गिरी महाराज सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा का निवाई पहुंचने पर नगर पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी और भाजपा शहर मंडल अध्यक्ष नितिन छाबड़ा के नेतृत्व में स्वागत किया ।

ईमानदारी से कहूं तो ये पहली बार है जब उनके दर्शक दीर्घा में रहने के बावजूद मैं जीता हूं। इससे पहले कुछ मैं हार गया था तो श्राप का टूटना अच्छा है। फेडरर को यहां देखकर काफी अच्छा लगा है। वह एक चैंपियन खिलाड़ी रहे हैं।

– नोवाक जोकोविच

टेनिस खिलाड़ी, रोजर फेडरर के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

वियान मुल्डर

वियान मुल्डर के पास जिम्बाब्वे के खिलाफ बुलावायो में खेले जा रहे दूसरे टेस्ट में ब्रायन लारा के नाबाद 400 के विश्व रिकॉर्ड को तोड़ने का मौका था। दूसरे दिन जब लंच हुआ तब मुल्डर 367 के स्कोर पर नाबाद ही पवेलियन गए थे लेकिन ब्रेक के दौरान कार्यवाहक कप्तान मुल्डर ने पारी घोषित कर दी और वह लारा का रिकॉर्ड इसलिए तोड़ने नहीं गए क्योंकि उन्हें लगा कि यह रिकॉर्ड लारा के ही नाम रहना चाहिए। ब्रायन लारा एक लीजेंड हैं। उन्होंने 401 (नाबाद 400) या जो भी इंग्लैंड के खिलाफ बनाया था। और उनके स्तर के किसी खिलाड़ी के पास यह रिकॉर्ड रहना खास है।

क्या आप जानते हैं ?... एजबेस्टन का घमंड टूटा, भारत ने टेस्ट इतिहास में पहली बार इंग्लैंड को हराया, दर्ज की सबसे बड़ी जीत।

युवा खिलाड़ियों से जुड़ने और उन्हें प्रोत्साहित करने की धोनी की क्षमता वाकई खास है : रोहित

नई दिल्ली, 8 जुलाई। 7 शेड्स ऑफ एमएस धोनी नामक नए शो में, जियोहॉटस्टार ने क्रिकेटरों और विशेषज्ञों, जैसे विराट कोहली, रोहित शर्मा, जोस बटलर, मैथ्यू हेडन, संजय मांजरेकर और आकाश चोपड़ा से दिल को छू लेने वाले किस्से और दुर्लभ जानकारियां साझा कीं। उन्होंने अपने अनुभव, अविस्मरणीय पल और खेल और अपने जीवन पर धोनी के स्थायी प्रभाव को साझा किया। जियो हॉटस्टार के विशेष शो '7 शेड्स ऑफ एमएस धोनी' पर विशेष रूप से बोलते हुए, स्टार भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली ने आईसीसी क्रिकेट विश्व कप 2019 के दौरान एमएस धोनी की शांत उपस्थिति और स्थायी नेतृत्व पर विचार किया। विराट ने कहा, उनका सबसे बड़ा कौशल सबसे कठिन क्षणों में अपना संयम बनाए रखना है। यही कारण है कि वह इतने अच्छे हैं, क्योंकि वह दबाव में सही निर्णय लेने में सक्षम हैं। वह हमेशा शांत और संयमित रहते हैं और वह खुद को उस मानसिक स्थिति में आने देते हैं, जहां वह सबसे महत्वपूर्ण निर्णय ले सकते हैं। उनसे सीखने के लिए बहुत कुछ है। जब मैं भारतीय टीम में आया, तो वह मेरे कप्तान थे – और वह हमेशा मेरे कप्तान रहेंगे। रोहित ने कहा, मेरे अपने दृष्टिकोण से, 2007 में, मैंने वास्तव में उनके नेतृत्व में अपना विश्व कप डेब्यू किया था। तब से, हमारा सफर बहुत लंबा रहा और हमने साथ में बहुत क्रिकेट खेला। युवाओं से जुड़ने और उन्हें प्रोत्साहित करने की उनकी क्षमता, चाहे खेल की स्थिति हो या खिलाड़ी का प्रदर्शन, वास्तव में कुछ खास है। वह हमेशा एक खिलाड़ी के आसपास एक शांत माहौल बनाने की कोशिश करते हैं, ताकि वे असुरक्षित महसूस न करें। मेरा मानना है कि यह एक बेहद महत्वपूर्ण गुण है। कमेंटेटर और विश्लेषक आकाश चोपड़ा ने एमएस धोनी की कप्तानी की प्रशंसा की और कहा, उन्होंने एक बहुत ही अनोखी नेतृत्व शैली विकसित की। यदि आप नेतृत्व की सात मान्यता प्राप्त शैलियों को देखें तो–उनकी शैली, जिसे आप 'पीछे से नेतृत्व' कहेंगे, वह होगी। पूर्व भारतीय क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने कप्तान के रूप में धोनी के प्रभाव के बारे में बात की और कहा, महेंद्र सिंह धोनी ने भारतीय क्रिकेट पर बहुत बड़ा प्रभाव डाला है। सभी दिग्गजों के प्रति सम्मान के साथ, मुझे नहीं लगता कि धोनी से ज्यादा किसी ने प्रभाव डाला है। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर मैथ्यू हेडन ने धोनी के नेतृत्व पर अपनी राय साझा की और कहा, वह एक स्वाभाविक लीडर थे। एक स्वाभाविक लीडर कौन होता है, यह समझने में बिना किसी शब्द के लगभग डेढ़ मिनट लगता है। और वह एमएस धोनी हैं। वह स्वाभाविक रूप से किसी भी ड्रेसिंग रूम में सम्मान प्राप्त करते हैं क्योंकि वह एक बहुत ही पसंद करने योग्य, नि:स्वार्थ, देखभाल करने वाले और सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति हैं।

वर्कलोड मैनेजमेंट के कारण दीप्ति शर्मा द हंड्रेड में नहीं खेलेगी

लंदन, 8 जुलाई। दीप्ति शर्मा ने पिछले साल लॉर्ड्स में फाइनल में एक बेहतरीन सिक्सर के साथ लंदन स्पिरिट को पहला द हंड्रेड का ख़िताब दिलाया था, लेकिन उन्होंने अपने वर्कलोड को

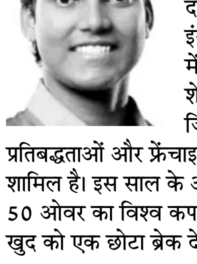

मैनेज करने के लिए 2025 सीजन से नाम वापस ले लिया है। भारतीय ऑलराउंडर दीप्ति भारत के मौजूदा इंग्लैंड दौरे के लिए इंग्लैंड में हैं और उनका हालिया शेड्यूल व्यस्त रहा है, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं और फ्रेंचाइजी लीगों का संतुलन शामिल है। इस साल के अंत में घरेलू ज़मीन पर 50 ओवर का विश्व कप होने वाला है, उन्होंने खुद को एक छोटा ब्रेक देने के लिए अपने लगभग 41,87,304 रूपए के कॉन्ट्रैक्ट से हटने का विकल्प चुना है। उनकी जगह ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर चार्ली नॉट को लिया गया है, और स्पिरिट की टीम इस साल काफी अलग दिखेगी। चार्ली डीन चोटिल हेदर नाइट के लिए कप्तान के रूप में काम करेंगी, जबकि मेग लानिंग की जगह ग्रेस हैरिस ने ली है और क्रिस लिडल ने एश्ले नॉफके की जगह मुख्य कोच का पदभार संभाला है। दीप्ति के हटने का मतलब है कि इस साल द हंड्रेड में कोई भी भारतीय खिलाड़ी अनुबंधित नहीं है। बीसीसीआई पुरुष खिलाड़ियों को विदेशी लीगों में खेलने के लिए एनओसी (अनापत्ति प्रमाण पत्र) नहीं देता है, जबकि महिला खिलाड़ी जो पहले शामिल हुई थीं, या तो उन्हें ड्राफ्ट में नहीं चुना गया या वर्कलोड की चिंताओं के कारण अनुपलब्ध थीं। वहीं ट्रेंट रॉकेट्स ने पुष्टि की है कि ऐश गार्डनर इस सीजन उनकी कप्तान होंगी। ईएसपीएन क्रिकइंफो ने पिछले महीने खुलासा किया था कि नेट सीवर–ब्रंट ने इंग्लैंड की कप्तानी संभालने के बाद अपने वर्कलोड को कम करने के लिए इस भूमिका से इस्तीफा दे दिया था, और गार्डनर ने कहा कि उनकी जगह लेना "सम्मान" की बात है। पुरुषों के द हंड्रेड में, डेविड विली लुईस ग्रेगरी की जगह रॉकेट्स के कप्तान होंगे, ग्रेगरी को रिलीज कर दिया गया है और उन्हें मैनचेस्टर ओरिजिनल्स ने साइन कर लिया। विली ने पिछले दो साल वेल्श फायर के लिए खेला है। फिर द हंड्रेड टीम अगले हफ्ते अपनी टीम में चार वाइल्डकार्ड खिलाड़ी – दो पुरुष, दो महिलाएं – जोड़ेगी, जो टी20 ब्लास्ट में प्रदर्शन के आधार पर साइन किए जाएंगे। बर्मिंघम फीनिक्स ने वाइल्डकार्ड ड्राफ्ट से पहले चोटिल खिलाड़ियों के रिप्लेसमेंट को सुरक्षित कर लिया है, नॉटिंघमशायर के फ्रेडी मैककैन डर्बीशायर के तेज गेंदबाज हैरी मूर की जगह लेंगे, जिन्हें पीठ में स्ट्रेस फ्रैक्चर है। द हंड्रेड 5 से 31 अगस्त तक चलेगा और इसे एक परिवर्तनकारी सीजन के रूप में देखा जा रहा है, इससे पहले ईसीबी आठ टीमों के संचालन की जिम्मेदारी उनके मेजबान काउंटी और 2026 संस्करण से पहले नए निजी निवेशकों को सौंपेगी।

लॉर्ड्स में किसकी चमकेगी किस्मत...

भारतीय बल्लेबाजों की अग्निपरीक्षा, पिच के साथ खेल कर सकते हैं अंग्रेज

लॉर्ड्स, 8 जुलाई। एजबेस्टन टेस्ट जीतने के बाद टीम इंडिया की अब अगली अग्निपरीक्षा लॉर्ड्स के मैदान में 10 जुलाई से होगी। वहीं दूसरे टेस्ट में 336 रनों से मिली करारी हार के बाद अब इंग्लैंड टीम पिच को लेकर ज्यादा सजग हो गई है। जिस कारण उसने फ्लैट पिच से तौबा करने का मन बना लिया है और अब लॉर्ड्स में पेस और बाउंस वाली पिच की मांग की है।बेन स्टोक्स और ब्रेंडन मैकुलम का मानना है कि एजबेस्टन में तैयार की गई पिच उपमहाद्वीप की तरह थी। टॉस के समय स्टोक्स द्वारा पहले गेंदबाजी करने की गलती भारत के पक्ष में चली गई। अंग्रेज टीम गुरुवार से होने वाले तीसरे टेस्ट में वह घरेलू लाभ का बेहतर तरीके से फायदा उठाने की कोशिश करेगी। इंग्लैंड के तेज गेंदबाजी आक्रमण में बदलाव भी तय है। बता दें कि, पिछले महीने लॉर्ड्स में खेले गए वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में तेज गेंदबाजों का दबदबा देखने को मिला था। इसमें पैट कमिंस और कगिसो रबाडा दोनों को ही काफी सीम मूवमेंट मिला था।

मैकुलम के दिमाग ने भी ऐसी ही पिच है और उन्होंने एमसीसी के हेड ग्राउंड्समैन कार्ल मैकडरमोट से ज्यादा गति, थोड़ा ज्यादा उछाल वाली पिच की मांग की है। उन्होंने कहा कि, ये ब्लॉकबस्टर होगा, लेकिन अगर पिच में जान हुई तो मुझे लगता है कि ये धमाकेदार मुकाबला होगा।

फिलहाल, 2018 में भारत को इस मैदान में हरी पिच पर परेशानी झेलनी पड़ी थी। लेकिन चार साल पहले उसने वहां टेस्ट मैच जीता था। जसप्रीत बुमराह को अपने सीम अटैक में वापस लाएगी, जिन्हें बर्मिंघम में आराम दिया गया था। भारत अलग तरह की पिच की उम्मीद कर रहा है। कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि, देखते हैं वे लॉर्ड्स में हमे कैसा विकेट देते हैं। मेरा अनुमान है कि ये सपाट नहीं होगी।

दक्षिण अफ्रीका ने जिम्बाब्वे को पारी और 236 रन से पीटा

बुलावायो, 8 जुलाई। कार्बिन बॉश (38 रन पर चार विकेट) और सेनुरन मुथुसामी (77 रन पर तीन विकेट) की शानदार गेंदबाजी से दक्षिण अफ्रीका ने जिम्बाब्वे को मंगलवार को दूसरे टेस्ट में पारी और 236 रन से रौंदकर दो मैचों की सीरीज 2–0 से जीत ली। दक्षिण अफ्रीका के पांच विकेट पर 626 रन पारी घोषित के जवाब में जिम्बाब्वे की टीम 170 और 220 रन पर सिमट गयी। जिम्बाब्वे की तरफ से निक वेल्च ने सर्वाधिक 55 रन बनाये। दक्षिण अफ्रीका की पारी में नाबाद 367 रन बनाने वाले वियान मुल्डर को प्लेयर ऑफ द मैच घोषित किया गया। मुल्डर को दो मैचों में 531 रन बनाने और सात विकेट लेने के लिए प्लेयर ऑफ द सीरीज का पुरस्कार मिला।

जिम्बाब्वे माटिगिमु पर आईसीसी आचार संहिता के उल्लंघन के लिए लगा जुर्माना

बुलावायो, 8 जुलाई। जिम्बाब्वे के कुंडाई माटिगिमु को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरे टेस्ट के दौरान आईसीसी आचार संहिता के लेवल 1 का उल्लंघन करने के लिए दंडित किया गया। कुंडाई माटिगिमु पर बुलावायो में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ चल रहे दूसरे टेस्ट के पहले दिन आईसीसी आचार संहिता के लेवल 1 के उल्लंघन के लिए मैच फीस का 15 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। यह घटना दक्षिण अफ्रीका की पहली पारी के 72वें ओवर के दौरान हुई, जब माटिगिमु ने अपने फॉलो–थ्रू में एक गेंद को फील्ड किया और बल्लेबाज लुआन–डी प्रीटोरियस की ओर फेंका, जो काफी नजदीक से उनकी कलाई पर लगी।

मैं जोकोविच और अल्काराज को फाइनल में देखना पसंद करूंगा : विराट कोहली

लंदन, 8 जुलाई। भारतीय क्रिकेटर विराट कोहली ने कहा है कि वह नोवाक जोकोविच और कार्लोस अल्काराज को विम्बलडन के फाइनल में देखना पसंद करेंगे और उन्हें उम्मीद है कि नोवाक यह मैच जीतेंगे।

भारतीय टीम के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली अब आपको सिर्फ और सिर्फ वनडे मैच खेलते हुए दिखेंगे। वह टी20और टेस्ट से रिटायरमेंट ले चुके हैं। मौजूदा समय में वह लंदन में अपने परिवार के साथ क्वालिटी टाइम बिता रहे हैं। इस दौरान वह विंबलडन 2025 में नोवाक जोकोविच का खेल देखने पहुंचे। हालांकि, कुछ फैंस ने उन्हें नोवाक जोकोविच की उम्र को लेकर ट्रोल करना शुरू कर दिया। दरअसल, विराट कोहली 7 जुलाई को पत्नी अनुष्का शर्मा के साथ विंबलडन में पहुंचे थे। कुछ फैंस इस बात से नाराज हैं कि कोहली ने 36 साल की उम्र में रिटायरमेंट ले लिया जबकि नोवाक 38 साल की उम्र में भी अपना 100 फीसदी दे रहे हैं। फैंस का कहना है कि 36 साल के क्रिकेटर रिटायर होकर 38 साल के खिलाड़ी को सपोर्ट कर रहे हैं। ये दुखद है।

फिलहाल, विंबलडन में भारतीय क्या किसी भी क्रिकेट का जाना अब आम सा हो गया है। एमएस धोनी से लेकर रोहित शर्मा और कुद विराट कोहली इस टूर्नामेंट को देखते हुए नजर आ चुके हैं। इंग्लैंड के क्रिकेटर तो अक्सर विंबलडन के मैच देखने के लिए पहुंच जाते हैं। नोवाक जोकोविच की बात करें तो राउंड 16 का अपना मुकाबला जीतकर वह क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए हैं। जहां सेमीफाइनल और फिर फाइनल का सफर भी वे तय कर सकते हैं।

विराट कोहली ने अपने पसंदीदा पुरुष एकल खिलाड़ी के बारे में कहा, मैं पिछले कुछ समय से नोवाक जोकोविच के संपर्क में हूं। हमने संदेशों का आदान–प्रदान किया है, और वह बहुत दयालु रहे हैं। मैं नोवाक जोकोविच और कार्लोस अल्काराज को फाइनल में देखना पसंद करूंगा – और मुझे उम्मीद है कि नोवाक यह मैच जीतेंगे।

पूर्व भारतीय टेस्ट कप्तान ने कहा ,यह उनके करियर के इस चरण में एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। वह निश्चित रूप से सभी समय के महानतम खिलाड़ियों में से एक के रूप में चर्चा में हैं – यदि महानतम नहीं हैं – सबसे अधिक ग्रैंड स्लैम खिताब के साथ। वह वास्तव में अपनी कड़ी मेहनत के लिए इसके हकदार हैं। मुझे वास्तव में उम्मीद है कि वह फाइनल में कार्लोस से खेलेंगे और जीतेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय अफगान अंपायर बिस्मिल्लाह जान शिनवारी का निधन

काबुल, 8 जुलाई। अंतरराष्ट्रीय अंपायर बिस्मिल्लाह जान शिनवारी का निधन हो गया है जिससे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट समुदाय शोक में डूब गया है। आईसीसी के अंतरराष्ट्रीय अंपायर पैनल के सदस्य, शिनवारी ने 25 वनडे और 21 टी20 मैचों में अंपायरिंग की, उन्होंने दिसंबर 2017 में शारजाह में अफगानिस्तान और आयरलैंड के बीच एकदिवसीय मैच की देखरेख करते हुए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया।

अफ़ग़ानिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने मंगलवार को अपनी श्रद्धांजलि पोस्ट की। एसीबी के नेतृत्व, कर्मचारी और पूरा अफगानअटलान परिवार अफगानिस्तान के एलीट अंपायरिंग पैनल के सम्मानित सदस्य बिस्मिल्लाह जान शिनवारी के निधन से बहुत स्तब्ध और दुखी है। हम बहुत दुख के साथ शिनवारी के बीमारी के बाद निधन की खबर साझा कर रहे हैं। बिस्मिल्लाह जान अफगान क्रिकेट के महान सेवक थे। अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड उनके परिवार, दोस्तों और पूरे अफगान क्रिकेट बिरादरी के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना और गहरी सहानुभूति व्यक्त करता है। आईसीसी के चेयरमैन जय शाह ने बिस्मिल्लाह के निधन पर शोक व्यक्त किया और उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की।

सिनर, स्वियाटेक और बेन शेल्टन विम्बलडन के क्वार्टरफाइनल में

लंदन, 8 जुलाई। शीर्ष वरीयता प्राप्त जानिक सिनर, नंबर एक महिला खिलाड़ी इगा स्वियाटेक और बेन शेल्टन ने अपने–अपने मुकाबले जीतकर विम्बलडन टेनिस प्रतियोगिता के क्वार्टरफाइनल में जगह बना ली है। हाल के वर्षों में विंबलडन में सबसे आश्चर्यजनक बदलावों में से एक में, सिनर क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए, जब ग्रिगोर दिमित्रोव को दो सेट से आगे होने के बावजूद मैच के बीच में ही रिटायर होना पड़ा।

यह ड्रामा पहले ही गेम में शुरू हो गया, जब शीर्ष वरीयता प्राप्त सिनर नियमित स्लाइड के दौरान फिसल गए और उनकी कोहनी में चोट लग गई। हालांकि उन्होंने खेलना जारी रखा, लेकिन उनकी खास सर्विस लय ने उनका साथ छोड़ दिया और मैच जल्दी ही दिमित्रोव के पक्ष में झुक गया। बुल्गारियाई खिलाड़ी ने बढ़त हासिल की, पहले दो सेटों में जीत हासिल की और 2014 के बाद से अपने पहले विंबलडन क्वार्टर फाइनल में पहुंचने के लिए तैयार दिखाई दिए।

लेकिन जैसे ही दिमित्रोव एक प्रसिद्ध जीत के करीब पहुंचे, आपदा आ गई। तीसरे सेट में 2–2 की बराबरी पर, नंबर 19 सीड खिलाड़ी ने अचानक अपने दाहिने पेक्टोरल मसल को जकड़ लिया और दर्द से कराहते हुए घास पर गिर पड़ा। हालांकि उसने अभी–अभी सर्विस की थी, लेकिन वह लगभग रोने लगा था। उपचार का प्रयास किया गया, लेकिन यह स्पष्ट हो गया कि वह आगे नहीं खेल सकता। अपनी सर्विसिंग आर्म को मुश्किल से उठा पाने के कारण, दिमित्रोव को रिटायर होना पड़ा, ग्रैंड स्लैम में यह उसका लगातार पांचवां मध्य–मैच रिटायरमेंट था।

मैच की शुरुआत बहुत ही जोश के साथ हुई थी, क्योंकि दिमित्रोव ने छह मिनट के शुरुआती गेम में सर्विस को बरकरार रखा। सिनर, जिनकी सर्विस पहले तीन राउंड में 36 सर्विस गेम तक बिना टूटे रही, ने तुरंत ही परेशानी के लक्षण दिखाए। दूसरे सेट की शुरुआत में, उन्होंने पहले आठ अंक गंवा दिए और 2–3 पर मेडिकल टाइमआउट की जरूरत पड़ी। एक दर्द निवारक और मालिश ने कुछ समय के लिए मदद की, लेकिन दिमित्रोव ने अपना दबदबा बनाए रखा, और फिर से सर्विस तोड़कर दो सेट की बढ़त हासिल कर ली।

यश दयाल की बढ़ी मुश्किलें, यौन शोषण का मामला दर्ज

नई दिल्ली, 8 जुलाई। आरसीबी के गेंदबाज यश दयाल पर गाजियाबाद की एक महिलान ने यश दयाल पर यश शौषण से जुड़े गंभीर आरोप लगाए। इस दौरान उनपर भावनाओं से जुड़े धोखे, मानसिक प्रताड़ना, यौन शोषण और शादी का झूठा वादा करने जैसे आरोप हैं, जिन पर अब कानून की नजर है। गाजियाबाद के इंदिरापुरम थाना क्षेत्र में एक युवती की शिकायत पर अब आरसीबी के गेंदबाज पर एफआईआर दर्ज हो गई है। दरअसल, यश दयाल गाजियाबाद निवासी पीड़िता का दावा है कि वह पिछले पांच सालों से यश दयाल के साथ रिश्ते में थी। बल्कि उसके पूरे परिवार पर भरोसा कर बैठी थीं। क्योंकि यश ने उन्हें अपने परिवार से मिलवाया और घरवालों ने भी उन्हें बहू की तरह स्वीकार किया। ये सब कुछ किसी सपने जैसा लग रहा था, लेकिन शायद ये सपना नहीं बल्कि एक झूठा वादा था।पीड़िता ने यश पर गंभीर आरोप लगाते हुए दावा किया है कि क्रिकेटर के कई अन्य महिलाओं के साथ भी संबंध रहे हैं।

भारत के खिलाफ वनडे सीरीज में सिवर-ब्रंट करेगी इंग्लैंड की कप्तानी

लंदन, 8 जुलाई। ग्रोइन इंजरी से जूझ रहीं नैट सिवर–ब्रंट भारत के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए चयनित 15 सदस्यीय इंग्लैंड की टीम की अगुवाई करती दिखेंगी। नैट सिवर–ब्रंट दूसरे टी20 में बल्लेबाजी के दौरान चोटिल हो गई थीं जिसके बाद शेष सीरीज के लिए टैमी बोमॉन्ट को टीम की कमान सौंपी गई थी। हालांकि चयनकर्ताओं को उम्मीद है कि पहले वनडे से पहले सिवर–ब्रंट फिट हो जाएंगी। इंग्लैंड की वनडे टीम में सोफी एक्लस्टोन की भी वापसी हुई है जो कि सीजन की शुरुआत में चोट से रिकवरी के चलते वेस्टइंडीज के खिलाफ वनडे सीरीज का हिस्सा नहीं बन पाई थीं, एक्लस्टोन को सारा ग्लेन की जगह टीम में शामिल किया गया है। माइया बाउचर जिन्हें सिवर–ब्रंट के रिप्लेसमेंट के तौर पर टी20 सीरीज़ के लिए बुलावा आया था, उन्हें भी वनडे टीम में शामिल किया गया है। लॉरेन फाइलर जिन्होंने शुक्रवार को स्मृति मंधाना और जेमिमाह रॉड्रिग्स के अहम विकेट चटकाते हुए इंग्लैंड की जीत में अहम भूमिका अदा की उन्हें जनवरी में हुए एशेज टूर के बाद पहली बार इंग्लैंड की वनडे टीम में शामिल किया गया है। टी20 सीरीज में अब तक भारतीय टीम ने इंग्लैंड टीम को काफी परेशानी में डाला है। भारत पहले दो मैच जीतकर इस समय पांच मैचों की सीरीज में 2–1 से आगे है।

सलमान अली आगा बांग्लादेश के खिलाफ टी-20 सीरीज में पाक की अगुवाई करेंगे

इस्लामाबाद, 8 जुलाई। पाकिस्तान ने बांग्लादेश के खिलाफ आगामी तीन मैचों की टी20 सीरीज के लिए अपनी 15 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है। यह सीरीज इस महीने के आखिर में मीरपुर में खेली जाएगी। पूर्व मुख्य खिलाड़ी बाबर आजम, मोहम्मद रिजवान और शाहीन शाह अफरीदी टीम से बाहर रहने वाले उल्लेखनीय खिलाड़ियों में शामिल हैं। फहीम अशरफ और फखर जमान टी20 टीम में वापस आ गए हैं। अशरफ ने आखिरी बार 2023 में न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 मैच खेला था, जबकि जमान ने इस प्रारूप में पिछली बार 2024 में हिस्सा लिया था। इस बीच, अहमद दानियाल ने पीएसएल 2025 में शानदार प्रदर्शन के दम पर राष्ट्रीय टीम में पहली बार जगह बनाई है। तेज गेंदबाजों में, नसीम शाह और मोहम्मद वसीम जूनियर अभी भी अपनी–अपनी चोटों से उबर रहे हैं, जबकि हारिस रऊफ यूएसए में मेजर लीग क्रिकेट (एमएलसी) 2025 में खेलते समय चोटिल हो गए हैं। **पाकिस्तानी टीम:** सलमान अली आगा (कप्तान), अबरार अहमद, अहमद दानियाल, फहीम अशरफ, फखर जमान, हसन नवाज, हुसैन तलत, खुशदिल शाह, मोहम्मद अब्बास अफरीदी, मोहम्मद हारिस, मोहम्मद नवाज, साहिबजादा फरहान, सैम अयूब, सलमान मिर्जा, सुफियान मोकिम।

अपनी बल्लेबाजी के दौरान पंत ज्यादा बात करना बिल्कुल पसंद नहीं करते : कोटक

लंदन, 8 जुलाई। सिडनी में 2020–21 बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी के दौरान, अंतिम दिन उस समय सब चौंक गए जब ऋषभ पंत कप्तान अजिंक्य रहाणे का विकेट गिरने के तुरंत बाद, दिन के दूसरे ही ओवर में बल्लेबाजी करने आ गए। पंत ने मैच ड्रॉ कराने की कोशिश में धमाकेदार अंदाज दिखाया और सिर्फ एक सेशन में 73 रन बना डाले।

वह 117 गेंदों पर 97 रन पर थे, जब नाथन लायन ने 80वां ओवर शुरू किया। उस समय उनके साथ क्रीज़ पर मौजूद चेतेश्वर पुजारा ने उन्हें याद दिलाया कि अब नई गेंद का असर अहम होने वाला है, इसलिए थोड़ा संभलकर खेलना चाहिए। 80वें ओवर की पहली ही गेंद पर पंत ट्रैक पर आगे बढ़े और मोटे बाहरी किनारे से कैच हो गए। आउट होने के बाद वह टूट चुके थे। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें मैदान से बाहर ले जाने के लिए क्रेन मंगानी पड़ेगी। उन्हें पुजारा पर भी गुस्सा था क्योंकि उन्हें लग रहा था कि पुजारा की उस एक चेतावनी ने उनके मन में संदेह भर दिया, जिसके कारण वह गलती कर बैठे।

लॉर्ड्स टेस्ट से दो दिन पहले भारत के बैटिंग कोच सितांशु कोटक ने पंत के इसी पक्ष के बारे में बात की – कि वह बैटिंग को लेकर कितने सोच–विचार करने वाले खिलाड़ी हैं। जब कोटक से पूछा गया कि पंत से बात न करना कितना जरूरी होता है, तो उन्होंने कहा, ऋषभ दरअसल बहुत बात करता है। क्या कर रहा है, कब कर रहा है, क्यों कर रहा है, वह इन सब चीजों पर बात करते हैं। कोटक ने बताया, मेरे साथ तो वह खुलकर बात करता है, लेकिन जब वह क्रीज पर होता है, तो बहुत ज्यादा बातचीत पसंद नहीं करता। उसे लगता है कि इससे उसका माइंडसेट बदल जाता है और वह गलत फैसला ले बैठता है। ये बात सिर्फ उसकी बल्लेबाज़ी के दौरान लागू होती है। इसके अलावा वह खुद के बारे में भी सोचता है, दूसरों की बल्लेबाजी पर भी बात करता है, और वह अच्छी–खासी योजना बनाता है कि उसे क्या करना है, क्योंकि टेस्ट क्रिकेट में सेंचुरी बनाना या इस स्तर पर सफल होना इतना आसान नहीं होता। बिना प्लानिंग के तो बिल्कुल नहीं। कोटक ने कहा कि पंत के हर शॉट और मूव को भले ही बाहर से देखकर आप अनियोजित मानें, लेकिन हर फैसले के पीछे सोच और रणनीति होती है।

वैभव सूर्यवंशी अब लाल गेंद क्रिकेट में दिखाएंगे कमाल

लंदन, 8 जुलाई। इंडिया अंडर–19 की टीम इंग्लैंड दौरे पर है। जहां यूथ टीम वनडे सीरीज को 3–2 से जीतने के बाद अब लाल गेंद क्रिकेट में किला फतह करने उतरेगी। 5 मैचों की वनडे सीरीज के बाद इंग्लैंड अंडर–19 और इंडिया अंडर–19 के बीच 3 मल्टी डे मैच खेले जाएंगे। इस सीरीज से भी इंडिया अंडर–19 की कप्तानी आयुष म्हात्रे ही करेंगे।डिया अंडर–19 का वनडे वाला स्क्वाड ही मल्टी डे मैच में भी भिड़ता दिखेगा। इस सीरीज के दौरान निगाहें बिहार के लाल वैभव सूर्यवंशी पर होंगी, जिन्होंने व्हाइट बॉल क्रिकेट में बेहतरीन प्रदर्शन किया। 14 साल के वैभव ने पहले आईपीएल 2025 में राजस्थान रॉयल्स के लिए बेहतरीन प्रदर्शन किया। वैभव ने आईपीएल 2025 में 7 मैच की 7 पारियों 36 के औसत और 206.55 के स्ट्राइक रेट से 252 रन बनाए।

अंश भार्गव ने दूसरा ओपन रैपिड और ब्लिट्ज शतरंज टूर्नामेंट जीता

जयपुर, 8 जुलाई। जयपुर जिला शतरंज संघ (जेडीसीए) के तत्वावधान में वेव्स और रॉयल जयपुर शतरंज क्लब द्वारा द्वितीय ओपन रैपिड और ब्लिट्ज़ शतरंज टूर्नामेंट महल रजवाड़ा रिसोर्ट, जयपुर में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। आयोजन सचिव जयेंद्र चतुर्वेदी के अनुसार, टूर्नामेंट में पूरे राजस्थान से 120 से अधिक प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने भाग लिया। 70 से अधिक रेटेड खिलाड़ियों के साथ टूर्नामेंट में रैपिड और ब्लिट्ज़ दोनों प्रारूपों में गहन और रोमांचक मैच हुए। रैपिड सेक्शन में 78 खिलाड़ी और ब्लिट्ज़ में 46 खिलाड़ी शामिल हुए। इस टूर्नामेंट ने यह भी उजागर किया कि टी–20 और टी–10 क्रिकेट के युग में,

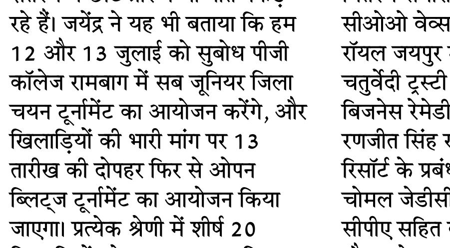

शतरंज में छोटे प्रारूप भी गति पकड़ रहे हैं। जयेंद्र ने यह भी बताया कि हम 12 और 13 जुलाई को सुबोध पीजी कॉलेज रामबाग में सब जूनियर जिला चयन टूर्नामेंट का आयोजन करेंगे, और खिलाड़ियों की भारी मांग पर 13 तारीख की दोपहर फिर से ओपन ब्लिट्ज टूर्नामेंट का आयोजन किया जाएगा। प्रत्येक श्रेणी में शीर्ष 20 खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार दिए गए। इसके अतिरिक्त, अंडर–15, अंडर – 13, अंडर–11, अंडर–9 और अंडर–7 आयु समूहों में ट्रॉफी प्रदान की गई। 60 आयु वर्ग के अनुभवी खिलाड़ियों और महिला वर्ग को विविध प्रतिभा और भागीदारी को मान्यता देने के लिए विशेष पुरस्कार भी दिए गए। पुरस्कार वितरण समारोह में अमरीश जोशी सीओओ वेव्स, रवि बजाज निदेशक रॉयल जयपुर शतरंज क्लब, ज्योति चतुर्वेदी ट्रस्टी वेव्स, कुंजेश पटसारिया, बिजनेस रेमेडीज न्यूजपेपर के मालिक; रणजीत सिंह राठौर, महल रजवाड़ा रिसॉर्ट के प्रबंध निदेशक, अशोक चोमल जेडीसीए अमित गुप्ता अध्यक्ष सीपीए सहित कई प्रतिष्ठित अतिथि मौजूद थे।

के.एल. सैनी क्रिकेट अकादमी जीती

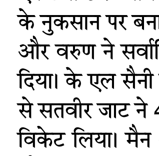

जयपुर, 8 जुलाई। अंडर–16 अरावली कप में के एल सैनी क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 40 ओवर में 225 रन 7 विकेट के नुकसान पर बनाए। सतवीर जाट ने 87 ,आयुष ने 52 और रमन चौधरी ने 51 रनों का योगदान दिया। यति क्रिकेट अकादमी की ओर से हसनैन ने तीन और सौम्या खंडेलवाल ने दो विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी यति क्रिकेट एकेडमी 34 ओवर में 185 रन 10 विकेट के नुकसान पर बना सकी। भव्यम जैन ने 38 और वरुण ने सर्वाधिक 32 रनों का योगदान दिया। के एल सैनी क्रिकेट अकादमी की ओर से सतवीर जाट ने 4 और ओजस सैनी ने तीन विकेट लिया। मैन ऑफ द मैन सतवीर जाट को चुना गया।

चिराग के लगातार पांच छक्के से जीती संस्कार क्रिकेट अकादमी

जयपुर, 8 जुलाई। सोनी क्रिकेट स्टेडियम पर चल रहे सोनी कप में स्टार क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 109/7 रन बनाए। जिसमें ऋतिक सारन ने 66 रनों का योगदान दिया। संस्कार क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में आदित्य झाला को 3 व कमलेश नगरकोटी को 2 विकेट मिले।

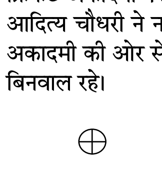

लक्ष्य का पीछा करने उतरी संस्कार क्रिकेट अकादमी मात्र 9.5 ओवर में 112/1 रन बना मैच अपने नाम कर लिया। जिसमें चिराग शर्मा ने नाबाद 52 रन व अभिषेक यादव ने नाबाद 45 रनों का योगदान दिया। स्टार क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में विजय को 1 विकेट मिला। मैन ऑफ द मैच चिराग शर्मा रहे।

दक्ष के पंजे से जीती आर्यन क्रिकेट अकादमी

दिन का दूसरा मैच टी सी ए क्रिकेट अकादमी व आर्यन क्रिकेट अकादमी के बीच खेला गया। जिसमें टी सी ए क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 18 ओवर में मात्र 67 रन पर ऑल आउट हो गई। जिसमें शिव ने 40 रनों का योगदान दिया। आर्यन क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में दक्ष बिनवाल को 5 विकेट मिले। लक्ष्य का पीछा करने उतरी आर्यन क्रिकेट अकादमी 10.1 ओवर में 70/1 रन बनाकर मैच अपने नाम कर लिया। जिसमें आदित्य चौधरी ने नाबाद 33 रन व सनी ने 27 रनों का योगदान दिया। टी सी ए क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में वात्सल्य सैनी को 1 विकेट मिला। मैन ऑफ द मैच दक्ष बिनवाल रहे।

‘सिंधु जल समझौते से बचने वाला पानी बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ व चूरू को मिलेगा’

मुख्यमंत्री भजनलाल ने गुसांईसर बड़ा में अंत्योदय के शिविर का अवलोकन किया

बीकानेर, 8 जुलाई (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान से रद्द हुए सिंधु जल समझौते से बचने वाला पानी बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और चूरू को मिलने वाला है। ये चारों जिले बड़े सौभाग्यशाली हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने जो वादे किए हैं, वो सभी पूरे होंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेता आएं तो पूछना कि उनके वादों का क्या हुआ।

मुख्यमंत्री ने मंगलवार को बीकानेर के गुंसाईसर बड़ा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत आयोजित शिविर का अवलोकन करने के बाद आयोजित सभा को संबोधित किया। उनके साथ भाजपा के वरिष्ठ नेता राजेन्द्र राठौड़ भी थे।

- **मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस ने सिर्फ घोषणा की, लेकिन हम श्री डूंगरगढ़ में ट्रॉमा सैंटर बनाने का काम करेंगे।**

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि श्रीडूंगरगढ़ के लिए जमीन देने का काम भी सरकार करेगी और इसके लिए जरूरी बजट भी दिया जायेगा। कांग्रेस ने जिस व्यापारी से घोषणा कराई थी, वो ये काम नहीं कर रहे हैं। कांग्रेस ने सिर्फ घोषणा की, लेकिन हम ट्रॉमा सेंटर बनाने का काम करेंगे। कांग्रेस ने व्यापारी पर दबाव बनाकर सिर्फ घोषणा करवा ली, अब वो टालमटोल कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कहना है कि जब तक अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का भला नहीं होगा, तब तक राजस्थान उत्कृष्ट नहीं होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने इंदिरा गांधी नहर के लिए चार हजार करोड़ रूपए दिए हैं और बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर में इससे काम होगा। किसान को पानी-बिजली और बीज देने का काम हमारी सरकार ने किया है।

विधायक ताराचंद सारस्वत ने अपने भाषण में मुख्यमंत्री के समक्ष ट्रॉमा सैंटर बनाने की मांग रखी तथा सरकारी कॉलेज की घोषणा करने की मांग की।

ताराचंद सारस्वत के भाषण के बाद मुख्यमंत्री ने कहा कि आपके विधायक होशियार हैं। दो मिनट का बोला था, लेकिन पूरे तीन पन्ने का भाषण बोल दिया।

उन्होंने अपनी सभी मांगें रख दी हैं। जो काम अधूरे हैं, उनके बारे में भी बोल दिया और जो करवाने हैं, उनके बारे में भी बोल दिया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बीकानेर के गुंसाईसर बड़ा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत आयोजित शिविर का निरीक्षण किया और सभा को संबोधित किया।

बिहार में 47 प्रतिशत मतदाताओं ने गणना फॉर्म जमा करवाए

नयी दिल्ली, 08 जुलाई। बिहार में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया में दो सप्ताह के अंदर चुनाव अधिकारियों को लगभग आधे मतदाताओं (47 प्रतिशत) के भरे हुए गणना-फार्म प्राप्त हो चुके हैं। यह जानकारी मंगलवार को आयोग द्वारा जारी एक विज्ञिप्त में दी गयी। गणना-फार्म प्राप्त करने की अंतिम तिथि 25 जुलाई है। आयोग ने कहा है कि बिहार में पुनरीक्षण प्रक्रिया के तहत 3,70,77,077 गणना फार्म मिल चुके हैं, जो राज्य में कुल 7,89,69,844 मतदाताओं की संख्या का 46.95 प्रतिशत है। आयोग ने पुनरीक्षण के लिए दिशानिर्देश गत 24 जून को जारी किए थे। आयोग ने पुनरीक्षण के काम के लिए इन दो सप्ताह में 7.90 करोड़ फॉर्म मुद्रित कराए हैं और सूची में दर्ज 97 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं (7,70,44,990) के गणना-फार्म वितरित किए जा चुके हैं। आयोग का कहना है कि अब तक 18.16 प्रतिशत फॉर्म उसके ऐप ईसीआईनेट पर अपलोड किए जा चुके हैं।

अश्वनी पंजाब ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वहीं, अब भाजपा के संगठनात्मक ढांचे को देखते हुए अश्वनी शर्मा को कार्यकारी अध्यक्ष बनाना रणनीतिक फैसला माना जा रहा है।

ट्रंप ने 14 देशों के लिए नए टैरिफ घोषित किए

ट्रंप ने इन सभी 14 देशों के राष्ट्र प्रमुखों को पत्र भेजकर सूचित कर दिया है

वाशिंगटन, 08 जुलाई। वैश्विक व्यापार में तनाव बढ़ाने वाले नए कदम में अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने बंगलादेश और म्यांमार सहित 14 देशों पर नए टैरिफ की घोषणा की है।

- **इन देशों में जापान व दक्षिण कोरिया जैसे बड़े देशों के अलावा म्यांमार, बांग्लादेश जैसे छोटे देश भी शामिल हैं। कई देश तो ऐसे हैं जो लम्बे समय से अमेरिका के सहयोगी रहे हैं।**

यह कदम ऐसे समय उठाया गया है, जब वाइट हाउस द्वारा शुरू किए गए कुछ सबसे आक्रामक आयात करों पर 90-दिवसीय रोक इस सप्ताह समाप्त होने वाली थी। ट्रंप ने जिन 14 देशों के नेताओं को औपचारिक पत्र भेजे हैं, उनमें सहयोगी और छोटे देश भी शामिल हैं। यह पत्र इस साल एक अगस्त को लागू होने वाले टैरिफ के बारे में हैं, जो ट्रंप की संरक्षणवादी नीतियों को दर्शाता है। पत्र में ट्रंप ने जापान और दक्षिण कोरिया से आयात पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने की अपनी धमकी दोहराई और एक अगस्त से शुरू होने वाले संभावित शुल्कों के बारे में अन्य विश्व नेताओं को सूचित किया। उच्च टैरिफ शुरू में नौ जुलाई से प्रभावी होने वाले थे लेकिन अधिकारियों द्वारा नए व्यापार सौदों पर बातचीत करने की मांग के कारण इन्हें निलंबित कर दिया गया था।

ट्रंप ने ‘ट्रुथ सोशल प्लेटफॉर्म’ पर जापान और दक्षिण कोरिया को लिखे पत्र में कहा,यदि किसी कारण से आप अपने टैरिफ बढ़ाने का फैसला करते हैं, तो आप उन्हें जिस भी संख्या में बढ़ाना चाहते हैं, वह हमारे द्वारा लगाए जाने वाले 25 प्रतिशत में जोड़ दिया जाएगा।

गौरतलब है कि उच्च टैरिफ एक अगस्त से प्रभावी होंगे और विशेष रूप से ऑटोमोबाइल, स्टील और एल्यूमीनियम जैसे पहले से घोषित सेक्टर टैरिफ के साथ नहीं जुड़ेंगे।

ट्रंप के पत्रों में जापान और दक्षिण कोरिया को चेतावनी दी गई थी कि उनके टैरिफ में किसी भी वृद्धि के साथ ही अमेरिकी शुल्कों में भी वृद्धि की जाएगी। ट्रंप ने घोषणा की कि इसी तरह के पत्र 12 अन्य देशों के नेताओं को भेजे गए, जिनमें मलेशिया, कजाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, म्यांमार, लाओस, ट्यूनीशिया, इंडोनेशिया, बंगलादेश, सर्बिया, बोस्निया और हर्जेगोविना, कंबोडिया, थाईलैंड शामिल हैं। उन्हें यह सूचना दी गई कि अगले महीने से उन पर 25 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक टैरिफ लगाए जाएंगे। मलेशिया, कजाकिस्तान और ट्यूनीशिया पर टैरिफ दर 25 प्रतिशत होगी, जबकि दक्षिण अफ्रीका और बिहॉन्ना के लिए यह 30 प्रतिशत होगी। इंडोनेशिया पर 32 प्रतिशत और बांग्लादेश एवं सर्बिया पर 35 प्रतिशत टैरिफ दर लागू होगी। कंबोडिया और थाईलैंड पर टैरिफ दर 36 प्रतिशत होगी, जबकि लाओस एवं म्यांमार पर यह 40 प्रतिशत तक होगी।

कांग्रेस ने माना कर्नाटक में पार्टी में अन्तर्कलह है

बेंगलुरू, 08 जुलाई। कर्नाटक में किसी प्रकार की राजनीतिक अस्थिरता की सम्भावना को खारिज करते हुए कांग्रेस महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला ने मंगलवार को कहा कि राज्य में पार्टी के कई विधायकों को कुछ शिकायतें हैं और उनसे अपनी बात लिखकर देने को कहा गया है।

- **कांग्रेस महासचिव सुरजेवाला ने कहा, कई विधायकों को पार्टी के प्रदेश नेतृत्व से शिकायत है।**
- **लेकिन सुरजेवाला ने नेतृत्व परिवर्तन से इन्कार किया व कहा कि इस पर फैसला हाईकमान ही ले सकते हैं।**

सुरजेवाला ने कहा कि वे विधायकों की समस्याओं को एक एक करके हल करेंगे। नाराज विधायकों, बीआर पाटिल और राजू कागे ने कई मसले उठाए हैं। कांग्रेस नेता ने यूनीवार्ता के एक सवाल पर कहा, कई विधायकों के पास मुद्दे और शिकायतें हो सकती हैं। मैंने उनसे कहा है कि वे ये सब मुझे लिखित में दें। हम उनका बारी बारी से हल निकालेंगे।

कांग्रेस नेतृत्व का दावा है कि राज्य में पार्टी में हालात काबू में हैं लेकिन आम चर्चा यह है कि शिकायतों के सामने आने से पार्टी की अंदरुनी कलह दिखने लगी है। अब सुरजेवाला ने जो रुख अपनाया है, वह बंद कमरे में बातचीत और मीडिया की निगाहों से दूर रहने का प्रयास है। उन्होंने समस्या के हल के लिए कोई समय सीमा तय नहीं की है, जिससे लगता है कि पार्टी शिकायतों के निपटारे के मामले में कोई गंभीर कदम उठाने वाली नहीं हैं।

राज्य में नेतृत्व बदलाव को लेकर उठे सवालों को दरकिनार करते हुए, उन्होंने एक मिसाल देते हुए कहा, एक पत्रकार की संपादक बनने की आकांक्षा हो सकती है, लेकिन इस फैसले की डोर तो चैनल मालिक के हाथ में होती है। सुरजेवाला के बयान नेतृत्व संबंधी फैसलों पर कांग्रेस हाईकमान की मजबूत पकड़ को दिखाते हैं।

मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार के दिल्ली दौरे के बारे में पूछे जाने पर, सुरजेवाला ने स्पष्ट किया कि ये दौरे पूरी तरह से प्रशासनिक हैं। उन्होंने कहा, ”वे सरकारी काम से दिल्ली जा रहे हैं- ताकि वे केन्द्र के समक्ष कर्नाटक के मसले रख सकें। यह उनका कर्तव्य है और वे इसे पूरा कर रहे हैं।”

चिराग पासवान ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हत्याएं और अन्य अपराध बढ़ते जा रहे हैं। यह मेरे लिए भी चिंता का विषय है क्योंकि जिस सरकार का मैं समर्थन करता हूँ, वह सुशासन के लिए जानी जाती है।

चिराग तो अब विपक्षी नेताओं जैसी भाषा बोल रहे हैं। यह चौंकाने वाला है।

हालाँकि अभी तो चुनाव में समय है, देखना यह होगा कि चिराग नीतीश कुमार सरकार के खिलाफ अपनी बयानबाज़ी को कितना आगे ले जाते हैं। यह भी देखने की बात है कि क्या वे विधानसभा चुनाव लड़ने के लिये लोकसभा सांसद और केन्द्रीय मंत्री पद से वाकई इस्तीफा दे देंगे या फिर वे सीट बंटवारे में अच्छी डील हासिल कर के पीछे हट जाएंगे?

जो भी हो, एनडीए सहयोगियों के बीच सीट बंटवारे को लेकर आने वाले हफ्तों में तकरार तेज़ होने की पूरी संभावना है।

उदयपुर फाइल्स फिल्म पर प्रतिबंध की माँग पर सुनवाई आज होगी

जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने फिल्म और उसके ट्रेलर पर बैन लगाने के लिए दिल्ली हाई कोर्ट में याचिका दायर की है

-जाल खंबाता-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 जुलाई। ज़मीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना अरशद मदनी ने मंगलवार को दिल्ली हाई कोर्ट में याचिका दायर की है। यह याचिका “उदयपुर फाइल्स” फिल्म और उसके ट्रेलर के खिलाफ है। यह फिल्म राजस्थान के उदयपुर में एक दर्ज़ी कन्हैया लाल साहू की हत्या पर आधारित है। याचिका में कहा गया है कि यह फिल्म एक ऐसी पक्षपाती और भड़काऊ कहानी दिखाती है, जिससे सांप्रदायिक तनाव बढ़ सकता है और देश में शांति-व्यवस्था बिगड़ सकती है।

यह फिल्म 11 जुलाई को रिलीज़ होने वाली है।

याचिका के अनुसार, फिल्म का ट्रेलर यह दिखाता है कि साहू की हत्या मुस्लिम समुदाय के नेताओं की मिलीभगत से हुई थी। इस तरह की कहानी हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच गंभीर दूरी और तनाव पैदा कर सकती है। याचिका की 9 जुलाई, बुधवार को सुनवाई होने की संभावना है।

याचिका में कहा गया है, “फिल्म का ट्रेलर मुस्लिम समुदाय को एक नकारात्मक तरीके से पेश करता है, जिससे उस समुदाय के लोगों के सम्मान से जीने के अधिकार का उल्लंघन होता है। फिल्म बहुत भड़काऊ है और दो समुदायों के बीच फूट डाल सकती है, जिससे देशभर में सार्वजनिक शांति और व्यवस्था बिगड़ सकती है।”

याचिका कहती है कि “ट्रेलर की सामग्री खास तौर पर मुस्लिम समुदाय को निशाना बनाती दिखती है, जिसमें उनके बारे में गलत और तोड़ी-मरोड़ी गई बातें दिखाकर भाईचारे को तोड़ने और सांप्रदायिक तनाव फैलाने की कोशिश की गई है। इसके साथ ही फिल्म में ज्ञानवापी मस्जिद का भी ज़िक्र किया गया है, जो अभी वाराणसी की जिला अदालत और भारत के सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है।”

- **यह फिल्म उदयपुर में दिन दहाड़े हुई कन्हैयालाल दर्ज़ी की नृशंस हत्या पर आधारित है। ज्ञातव्य है कि मुस्लिम कट्टरपंथी युवकों ने तलवारों से काट कर कन्हैयालाल की हत्या कर दी थी।**
- **जमीयत के प्रमुख मौलाना अरशद मदनी ने कहा कि फिल्म से हिंदू-मुस्लिम वैमनस्यता को बढ़ावा मिलेगा और इससे देश भर में शांति और व्यवस्था बिगड़ सकती है।**
- **फिल्म 11 जुलाई को रिलीज़ हो रही है।**

इसके अलावा, फिल्म में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की नेता नूपूर शर्मा के उस विवादास्पद बयान को भी दिखाया गया है, जिससे पहले देश में सांप्रदायिक हिंसा भड़क चुकी है।

याचिका के अनुसार, “ऐसे पुराने विवादास्पद मुद्दों को याचिका में कहा गया है कि जो पहले ही देश में दंगे फैला चुके हैं, को दोबारा दिखाकर यह फिल्म भाईचारे की भावना को कमज़ोर करती है और देश के धर्मनिरपेक्ष और विविधतापूर्ण समाज के ताने-बाने को नुकसान पहुँचाती है। इसलिए इसमें न्यायिक हस्तक्षेप जरूरी है।”

इसके अलावा, फिल्म में ऐसे आपत्तिजनक दृश्य भी दिखाए गए हैं, जिनमें मुस्लिम मौलवियों को नाबालिग बच्चों के साथ समलैंगिक संबंध बनाते हुए दिखाया गया है।

इसी कारण, याचिकाकर्ता ने अदालत से मांग की है कि फिल्म और उसके ट्रेलर के रिलीज़, प्रसारण, वितरण और सार्वजनिक प्रदर्शन पर रोक लगाई जाए।

याचिका में यह भी अनुरोध किया गया है कि सूचना और प्रसारण मंत्रालय को निर्देश दिए जाएं कि वह इस फिल्म के ट्रेलर को यूट्यूब, फेसबुक और एक्स (पूर्व में ट्विटर) जैसे सभी डिजिटल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से तुरंत हटवाए। फिल्म के निर्देशक और निर्माता के अलावा, याचिका में डिस्ट्रीब्यूटर रिलायंस एंटरटेनमैंट प्राइवेट लिमिटेड, गूगल, एक्स और मेटा को भी पार्टी बनाया गया है।

रेल मंत्री अश्विनी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वैष्णव समाज में परम्परा रही है कि घर के किसी वयोवृद्ध सदस्य का निधन होता है, तो बैकुंठी निकाली जाती है। अंतिम संस्कार भी पार्थिव देह को बैठाकर ही किया जाता है।

रेल मंत्री बनने के बाद 2 अक्टूबर 2021 को पहली बार अश्विनी वैष्णव जोधपुर आए थे। इस दौरान पिता-पुत्र की मुलाकात काफी कम समय के लिए हो पाई थी, तब दाऊलाल वैष्णव ने अश्विनी वैष्णव को एक चिट्ठी लिखी।

उन्होंने लिखा- कर्तव्य को इतनी निष्ठा से निष्पादित करो कि हर रेलयात्री का चेहरा यात्रा के दौरान फूल सा खिला रहे।

स्व. दाऊलाल वैष्णव की अंतिम यात्रा में भारतीय जनता पार्टी के अनेक नेताओं सहित, शहर के लोग उपस्थित थे। अंतिम संस्कार में कागा श्मशान घाट पर सीएम भजनलाल शर्मा तथा भाजपा नेता राजेन्द्र राठौड़ भी पहुंचे।

इज़रायल के प्र.मंत्री...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तनाव कम कराने तथा सर्बिया और कोसोवो के बीच समझौता कराने में उनके प्रयासों को अनदेखा किया। हालांकि भारत ने अधिकारिक रुप से पाकिस्तान के साथ हाल ही में हुए संघर्ष में ट्रंप की भूमिका का खंडन किया है और कहा है कि आपसी बातचीत से समाधान हुआ।

ट्रंप ने यह भी दावा किया है कि उन्होंने मिस्त्र और इथियोपिया के बीच शांति बनाए रखने में मदद की है, और अब्राहम समझौते (अब्राहम अकॉर्ड) के जरिए इज़राइल और कुछ अरब देशों के बीच रिश्ते सामान्य करने में भी उनकी भूमिका रही है।

ट्रंप ने अपने चुनाव प्रचार में खुद को एक शांति निर्माता बताया था और वादा किया था कि वे अपने बातचीत के कौशल से यूक्रेन और गाज़ा के युद्धों को जल्दी खत्म करवा देंगे। लेकिन उनके राष्ट्रपति बनने के पांच महीने बाद भी ये दोनों संघर्ष जारी हैं।

नेतन्याहू और ट्रंप के बीच हुई बातचीत में गाज़ा में संघर्षविराम और बंधकों की रिहाई को लेकर एक समझौते पर काम करने पर चर्चा हुई। उसी दौरान, इज़राइल के अधिकारी कतर में हमास के साथ अप्रत्यक्ष वार्ता कर रहे थे, जिसमें अमेरिका मध्यस्थ की भूमिका निभा रहा था। ट्रंप ने बैठक से पहले ही अनुमान जताया था कि इस सप्ताह एक समझौता हो सकता है।

‘पुलवामा हमले के लिए विस्फोटक एमेज़ॉन से खरीदे गए थे’

आतंकी वित्तपोषण की वैश्विक निगरानी संस्था एफएटीएफ ने दावा किया

नई दिल्ली, 08 जुलाई। वैश्विक आतंकी वित्तपोषण निगरानी संस्था एफएटीएफ ने दावा किया है कि फरवरी 2019 के पुलवामा आतंकी हमले में इस्तेमाल किए गए विस्फोटक अमेजन से खरीदे गये थे। एफएटीएफ ने दावा किया कि 2022 में गोरखनाथ मंदिर पर हमला करने वाले आतंकी को पेमेंट पेपल से हुआ था।

अप्रैल 2025 में पहलगाम में हुए आतंकी हमले की निंदा करते हुए एफएटीएफ ने कहा कि वित्तीय सहायता के बिना ऐसे हमले संभव नहीं थे। एफएटीएफ ने कहा था कि वह 200 अधिकार क्षेत्रों वाले अपने वैश्विक नेटवर्क द्वारा प्रदान किए गए मामलों को संकलित करते हुए, आतंकवादी वित्तपोषण का व्यापक विश्लेषण करेगा। भारत में आतंकवादी हमले के लिए सामग्री की खरीद के लिए ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के उपयोग की केस स्टडी देते हुए, एफएटीएफ ने कहा कि हमले में इस्तेमाल किए गए तात्कालिक विस्फोटक उपकरण का एक प्रमुख घटक - एल्यूमीनियम पाउडर - ईपीओम अमेजन से खरीदा गया था। इस सामग्री का उपयोग विस्फोट के प्रभाव को बढ़ाने के लिए किया गया था।

- **एफएटीएफ ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया कि आतंकवादी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म व ऑनलाइन मार्केट प्लेस का दुरुपयोग कर रहे हैं।**

बता दें कि फरवरी 2019 में, जम्मू और कश्मीर के पुलवामा में भारतीय सुरक्षा बलों के काफिले को निशाना बनाकर एक आत्मघाती बम विस्फोट किया गया, जिसके परिणामस्वरूप 40 सैनिक मारे गए। आतंकी हमले की साजिश जैश-ए-मोहम्मद द्वारा रची गई थी।

एफएटीएफ रिपोर्ट ने इस बात पर प्रकाश डाला कि आतंकवादी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन मार्केटप्लेस का दुरुपयोग कर रहे हैं और कहा कि आतंकवादियों ने अपने परिचालन खरीद (उपकरण, हथियार, रसायन, 3डी-प्रिंटिंग सामग्री) के लिए ऐसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया है। एफएटीएफ ने कहा कि ईपीओएम का उपयोग व्यापार आधारित मनी लॉन्ड्रिंग योजनाओं से प्रेरित होकर फंड-मूविंग उद्देश्य के लिए किया जा सकता है। ऑनलाइन भुगतान सेवा और वीपीएन के उपयोग पर एक केस स्टडी का हवाला देते हुए एफएटीएफ ने 3 अप्रैल, 2022 को गोरखनाथ मंदिर में हमला करने के लिये पेपल के माध्यम से 669,841 रुपये (7,685 अमेरिकी डॉलर) भेजे गए थे।

एसआई भर्ती ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शामिल थे। महाधिवक्ता ने प्रार्थना पत्र में कहा कि उनकी ओर से याचिकाकर्ता के आरोपों को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया गया है। उनके अनुरोध पर अदालत ने पूर्व में दिये आदेश को संशोधित कर दिया।

बहस के दौरान महाधिवक्ता ने कहा कि याचिका में कैबिनेट सब कमेटी के फैसले को चुनौती नहीं दी गई है। ऐसे में याचिका को खारिज किया जाना चाहिए। इसके अलावा समान तथ्यों पर याचिका पेश की गई थी और उसे वापस लेने के आधार पर अदालत ने उसे खारिज कर दिया था, लेकिन नई याचिका में इस तथ्य को छुपाया गया है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता की ओर से कोर्ट में पेश पूर्ववर्ती रिपोर्ट को किस तरह प्राप्त किया गया? यदि याचिकाकर्ता ने अनाधिकृत तरीके से यह रिपोर्ट हासिल की है तो भी याचिका को खारिज किया जाना चाहिए। महाधिवक्ता की ओर से यह भी कहा गया कि याचिकाकर्ता भर्ती प्रक्रिया में शामिल हुए, लेकिन फेल होने पर लंबे समय बाद हाईकोर्ट आ गए। दूसरी ओर अदालत ने कहा कि सरकार याचिका को कभी प्री-मैच्योर बता रही है तो कभी उसे सारहीन बताकर खारिज करने की गुहार की रही है। इसके साथ ही अदालत ने मामले की सुनवाई बुधवार तक टालते हुए, राज्य सरकार को प्रकरण से जुड़ा रिकॉर्ड साथ लाने को कहा है।

क्या 160 वर्षों से चला आ रहा दो पार्टी सिस्टम अब टूटेगा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इनकार कर दिया, जिसके कारण “कैपिटल” बिल्डिंग पर हिंसक हमला हुआ। यह सिर्फ राजनीतिक संकट नहीं, बल्कि संवैधानिक संकट था।

लेकिन यह संकट केवल व्यक्तियों या पार्टियों का नहीं है। यह पूरी संरचना का संकट है। 18वीं सदी में एक छोटे, अपेक्षाकृत एकसमान गणराज्य के लिए बनाई गई राष्ट्रपति प्रणाली अब 21वीं सदी के एक वैचारिक, नस्लीय, वर्गीय और सूचना के बुलबुलों में बँटी महाशक्ति को संभालने के लिये जूझ रही है। इलेक्टोरल कॉलेज की विकृतियाँ, गेरिमांडरिंग (निर्वाचन क्षेत्रों की मनमानी रचना), और “विजेता ही सब कुछ ले जाए” व्यवस्था जनता में अलगाव और चरमपंथ को और बढ़ाती है।

अब अमेरिका की आगामी स्थिति क्या होगी। अब अमेरिका के सामने तीन संभावित रास्ते हैं: पहला है, सुधार के माध्यम से नवीकरण (रिन्यूअल थ्रू रिफॉर्म) आज की युवा पीढ़ी और दोनों दलों के उदार सोच वाले लोगों में सुधार की मांग तेज़ हो रही है। जहाँ संविधान संशोधन मुश्किल प्रतीत होते हैं, वहीं विधायी और प्रक्रियागत बदलावों से सत्ता का संतुलन दोबारा स्थापित किया जा सकता है और भरोसा लौटाया जा सकता है।

दूसरा है, गहराता ध्रुवीकरण (डीपनिंग पोलराइज़ेशन)। दुर्भाग्य की बात यह है कि यह निकट भविष्य का सबसे संभावित रास्ता लगता है। रिपब्लिकन और डेमोक्रेट समर्थक अब लगभग दो अलग-अलग देशों में रह रहे हैं-जिनके मूल्य, कानून और भविष्य की कल्पना एक-दूसरे से टकराती हैं। अगर कोई भी पक्ष चुनावी हार को स्वीकार नहीं कर पाता, तो लोकतंत्र की वैधता ही समाप्त हो जाएगी।

तीसरा है, अधिनायकवाद की ओर झुकाव (अथॉरिटेरियनड्रिफ्ट)। अगर संस्थागत मानदंड और कमजोर होते गए, तो अमेरिका एक “सॉफ्ट ऑथोरिटेरियन” यानी नरम तानाशाही की ओर फिसल सकता है, जहाँ एक पार्टी का वर्चस्व हो, न्यायपालिका की स्वतंत्रता कमजोर हो, और असहमति को अपराध मान लिया जाए। ज़रूरी स्थितियाँ पहले से मौजूद हैं तथा अब बस इरादे की ज़रूरत है।

लेकिन, अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। अमेरिका का इतिहास लचीलेपन और पुनर्निर्माण का रहा है। सिविल वॉर से लेकर वॉटरगेट तक, अमेरिका ने ऐसे संकटों का सामना किया है, जो अजेय लगते थे। सवाल यह है कि क्या यह देश एक बार फिर अपने आत्मबल से खुद को सुधार सकेगा, इससे पहले कि दरारें टूटन में बदल जाएँ।

कुल मिलाकर, अमेरिकी तंत्र के भविष्य को न तो सिर्फ अदालतें तय कर सकती हैं, और न सिर्फ बैलट बॉक्स में। अमेरिकन व्यवस्था का भविष्य इस पर निर्भर करेगा कि क्या इसके नागरिक और नेता दलगत सीमाओं से ऊपर उठकर उन गहरे मूल्यों की रक्षा कर सकते हैं, जो इस गणराज्य को एक सूत्र में बाँधते हैं। और वे मूल्य हैं- निष्पक्षता, जवाबदेही और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के प्रति साझा प्रतिबद्धता।

अगर ऐसा नहीं हो सका, तो खतरा विदेशी नहीं होगा, वह भीतर से ही आएगा।

इलैक्ट्रिक कारों से लेकर अंतरिक्ष शोध तक के उद्योगों को झकझोर देने वाले अरबपति उद्यमी एलन मस्क अब एक नई दिशा में, अमेरिकन राजनीति में कदम रख चुके हैं। अपनी नई राजनीतिक पार्टी, “अमेरिका पार्टी” की शुरुआत के साथ, मस्क ने लोकतांत्रिक इतिहास की मजबूत प्रहरी, अमेरिकी द्वि-दलीय व्यवस्था की जड़ों को चुनौती देने की कोशिश शुरु कर दी है। उन्होंने यह कदम ऐसे समय पर उठाया है, जब डेमोक्रेट और रिपब्लिकन दोनों पार्टियों से जनता का मोहभंग ऐतिहासिक स्तर पर पहुँच चुका है। लेकिन क्या “अमेरिका पार्टी” सच में उस दो-ध्रुवीय प्रभुत्व को हिला सकती है, जो पिछले 160 से अधिक वर्षों से अमेरिकी राजनीति को आकार देता आया है?

दोनों बड़ी पार्टियों से असंतोष लगातार बढ़ रहा है। हाल की एक गैलप सर्वे के मुताबिक, लगभग 63 प्रतिशत अमेरिकियों का मानना है कि एक तीसरी पार्टी की ज़रूरत है। यह अब तक का सबसे बड़ा आंकड़ा है। मतदाता मौजूदा व्यवस्था को अव्यवस्थित, अत्यधिक ध्रुवीकृत और आम नागरिकों की वास्तविक चिंताओं से कटी हुई मानते हैं। दक्षिणपंथ एवं वामपंथ दोनों की बढ़ती जा रहीं लोकलुभावन (पॉपुलिस्ट) भावनाओं ने राजनीतिक नेतृत्व और जनता के बीच की खाई को उजागर कर दिया है। यह स्थिति किसी भी नई राजनैतिक ताकत के लाभ के लिए एक दुर्लभ सुअवसर प्रस्तुत कर रही है।

एलन मस्क एक ऐसे उभरते गठजोड़ की ओर बढ़ रहे हैं। जो पारंपरिक राजनीतिक पहचान से परे है। उनकी नज़र तकनीकी उद्यमियों, जो दोनों पार्टियों से निराश हैं, और युवा मतदाताओं पर है। “अमेरिका पार्टी” उन मतदाताओं का ठिकाना बन सकती है, जो आर्थिक रूप से व्यवहारिक सोच रखते हैं, लेकिन सांस्कृतिक रूप से प्रगतिशील सोच और दक्षिणपंथी अतिवाद, दोनों से सतर्क हैं।

अभी केवल इतना कहा जा सकता है कि चाहे “अमेरिका पार्टी” द्वि-दलीय प्रणाली को गिरा पाए या केवल उसमें सुधार के लिए एक धक्का दे, लेकिन एलन मस्क ने एक नई चर्चा की शुरुआत कर दी है। एक ऐसा देश जहाँ राजनीतिक कल्पना अक्सर जड़ जमाकर बैठ जाती है, वहाँ यह खुद में एक ऐसा झटका है, जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा। आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंभ्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908